-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि· ५०३

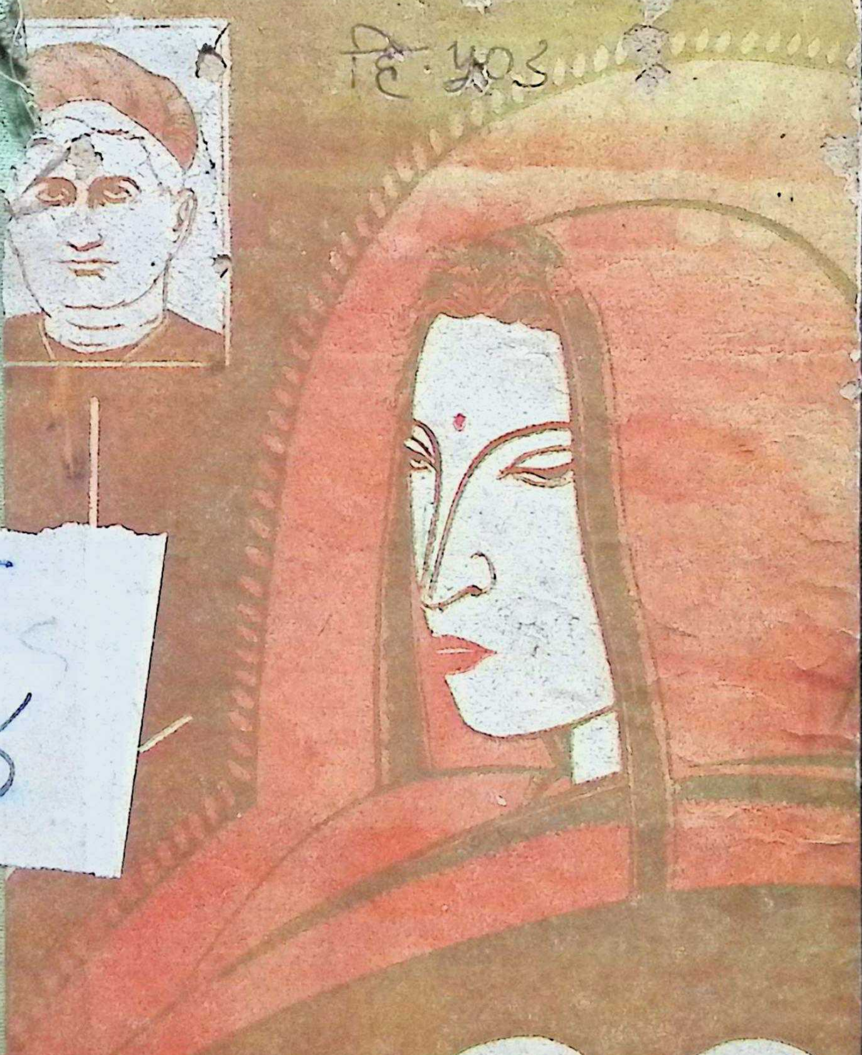

मृणालिनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

५०२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दी रूपान्तर

निहालचन्द्र वर्मा

•

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

की

अमर कृति

•

मृणालिनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नेपाल साहित्य केन्द्र
मूल्य ने.रु. १०।५०...

मू० ७.००

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बॉ० १०६ पिशाचमोचन
वाराणसी-२२१००१

मुद्रक
दुर्गा प्रेस
नई बस्ती, पाण्डेपुर
वाराणसी-२२१००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मृणालिनी

•

प्रथम खण्ड

•

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

१२१६८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

२

आचार्य

एक दिन प्रयाग तीर्थमें, गंगा-यमुनाके संगममें, अपूर्व वर्षाऋतुकी सान्ध्य-शोभा प्रकट हो रही थी। वर्षा ऋतु है, किन्तु मेघ नहीं; अथवा जो मेघ हैं, वह स्वर्णमय तरंगमाला की तरह पश्चिम आकाशमें विराज रहे हैं। सूर्यदेव अस्त हो गये हैं। वर्षाके पानीकी बाढ़से गंगा-यमुना दोनों ही सम्पूर्णशरीरा हैं। यौवनकी परिपूर्णतासे उन्मादिनी, वे दोनों बहिनें खेल-ही-खेलमें एक-दूसरीको आलिंगन कर रही हैं। चंचल अंचलकी भाँति तरंगमाला पवन-ताड़ित हो किनारेसे टकरा रही है।

एक छोटी तरणीमें केवल दो नाविक हैं। नौका बहुत ही साहस से उस दुर्दमनीय यमुनाके स्रोतके वेगमें चढ़कर प्रयागके घाटपर आ लगी। एक आदमी नावमें रहा, एक नीचे उतरा। जो उतरा उसका नवीन यौवन, उन्नत बलिष्ठ शरीर और योद्धावेश था। माथेपर साफा, शरीर पर कवच, हाथमें धनुषवाण, पीठपर तूणीर, पैरोंमें चप्पल-जूता था। यह वीराकार पुरुष बहुत ही सुन्दर है। घाटके ऊपर संसारसे विरागी पुण्यप्रवासियोंके लिए कितने ही आश्रम हैं। इनमें एक छोटी कुटीमें उस युवकने प्रवेश किया।

कुटीके भीतर एक ब्राह्मण कुशासनपर बैठकर जप कर रहे थे। ब्राह्मण बहुत ही दीर्घाकार पुरुष हैं; शरीर सूखा और चौड़े मुखमण्डल पर सफेद बाल विराजित हैं, ललाट और खुले बालों तथा तालुदेशमें अल्पमात्र विभूतिकी शोभा है। ब्राह्मणकी कान्ति गम्भीर और कटाक्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कठिन हैं, देखनेसे वह निर्दय या दयाभिभाजन जान नहीं पड़ते थे, फिर भी शंका होती थी। आगन्तुकको देखते ही उनका कठोर भाव दूर हो गया, मुखके गाम्भीर्यपर प्रसन्नताका संचार हुआ। आगन्तुक ब्राह्मण को प्रणामकर सामने खड़ा हो गया। ब्राह्मणने आशीर्वाद देकर कहा—"बेटा हेमचन्द्र, मैं बहुत दिनसे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

हेमचन्द्र ने विनीत भावसे कहा—"अपराध क्षमा कीजियेगा, दिल्ली में काम सिद्ध नहीं हुआ। बल्कि यवनोंने मेरा पीछा किया था, इसीसे कुछ सतर्क होकर आना पड़ा। इसीसे देर हुई।"

ब्राह्मणने कहा—"दिल्लीका समाचार मैंने सुना है। बख्तियार खिलजीको हाथी कुचलता, तो अच्छा ही होता। देवता का शत्रु स्वयं पशुके द्वारा मारा जाता, तुम क्यों उसका प्राण बचाने गये?"

हेम०—"उसे अपने हाथों युद्धमें मारनेके लिए। वह मेरे पिताका शत्रु है, मेरे पिताका राजचोर है। वह मेरे ही वध्य है।"

ब्राह्मण—"तब उसपर जिस हाथीने क्रोधकर चोट की थी, तुमने बख्तियारको न मार उस हाथीको क्यों मारा?"

हेम०—"मैं क्या चोरकी तरह बिना युद्ध किये शत्रुको मारता? मैं मगधविजेताको जीत कर पिताके राज्यका उद्धार करूँगा। नहीं तो मेरे मगधराज पुत्रके नामपर कलंक है।"

ब्राह्मण ने कुछ चिढ़कर कहा—"यह सब घटनाएँ तो बहुत दिन हुए हो गईं। इससे पहले तुम्हारे यहाँ आनेकी सम्भावना थी। तुमने देर क्यों की?—मथुरा गये थे क्या?"

हेमचन्द्रने सिर झुका लिया। ब्राह्मणने—"समझ गया, तुम मथुरा गये थे, मेरी रोक तुमने नहीं मानी। जिसे देखने मथुरा गये थे, उससे मुलाकात हुई?"

इस बार हेमचन्द्रने रूखे भावसे कहा—"मुलाकात जो नहीं हुई, वह आपकी दयासे। मृणालिनीको आपने कहाँ भेज दिया है?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

माधवाचार्यने कहा--"यह तुमने कैसे निश्चय किया कि मैंने उसे कहीं भेज दिया है ?"

हेम०—"माधवाचार्यके सिवा यह सलाह और किसकी हो सकती है? मैंने मृणालिनीकी दायीसे सुना कि मृणालिनी मेरी अँगूठी देखकर कहीं गई है ? उसका पता नहीं। मेरी अँगूठी आपने रास्ते के लिये माँगी थी। मैंने अँगूठीके बदले दूसरा रत्न देना चाहा था, किन्तु आपने नहीं लिया। तभी मुझे सन्देह हुआ था; किन्तु मेरी ऐसी कोई चीज नहीं जो आपको अदेय हो, इसीलिये बिना एतराजके मैंने अँगूठी दे दी। किन्तु मेरी इस असावधानी का आपने अच्छा प्रतिफल दिया !"

माधवाचार्यने कहा—"अगर ऐसा ही है, तो मुझपर क्रोध न करो। देवता का काम तुम न साधोगे तो और कौन साधेगा ? तुम यवनको न भगाओगे, तो और कौन भगायेगा ? यवन-निपात तुम्हारा एकमात्र ध्यान होना चाहिये। उस समय मृणालिनी तुम्हारे मन पर अधिकार क्यों करे ? एक बार तुम मृणालिनीकी आशासे मथुरा में बैठे थे, तुम्हारे बापका राज्य चला गया; यवनोंके आगमनके समय हेमचन्द्र यदि मथुरामें न होकर मगधमें होता, तो मगध कैसे जीता जाता ? तब क्या फिर उसी मृणालिनीके पाशमें बद्ध हो चुपचाप बैठे रहोगे ? माधवाचार्य का जीवन रहते ऐसा न होगा। इसलिये जहाँ रहने से तुम मृणालिनी को पा न सकोगे, ऐसे स्थानमें मैंने उसे रखा है।"

हेम०—"अपने देवकार्यका आप ही उद्धार करें, मैं यहीं तक रह गया।"

माध०—"यह तुम्हारी दुर्बुद्धि है। क्या यही तुम्हारी देवभक्ति है ? अच्छा, ऐसा ही हो; देवता अपने कामके साधन के लिये तुम्हारे जैसे मनुष्यकी सहायताकी आशा नहीं करते। किन्तु तुम यदि कापुरुष न हो, तो कैसे शत्रु के शासनसे अन्तर पा सकते हो ? क्या यही तुम्हारा वीर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गर्व है ? क्या यही तुम्हारी शिक्षा है ? राजवंशमें जन्म लेकर तुम किस प्रकार अपने को राज्योद्धार से विमुख रहना चाहते हो ?"

हेम०—"राज्य-शिक्षा-गर्व सब गहरे जलमें डूब जाये ।"

माध०—"नराधम ! तुम्हारी जननीने क्यों तुम्हें दस महीने दस दिन गर्भमें धारण कर यन्त्रणा भोगी ? क्यों मैंने बारह वर्ष तक देवाराधन छोड़ कर तेरे जैसे पाखण्डी को सारी विद्या सिखाई ?"

माधवाचार्य बहुत देरतक हथेलीपर सिर टेककर चुपचाप रहे । धीरे-धीरे हेमचन्द्रकी अनिंद्य गौर मुखकान्ति मध्याह्नके सूर्यकी तरह सोखनेवाले स्थलपद्मकी तरह लाल हो रही थी । किन्तु ज्वालामुखी के शिखरकी भांति वह स्थिरभावसे खड़े रहे । अन्तमें माधवाचार्य ने कहा—"हेमचन्द्र ! धैर्य धारण करो । मैं बताऊँगा, मृणालिनी कहाँ है—मृणालिनीसे तुम्हारा विवाह भी करा दूँगा। किन्तु इस समय तुम मेरी सलाहसे चलो, फिर अपने काम का साधन करो ।"

हेमचन्द्रने कहा—"यदि यह न बताइयेगा कि मृणालिनी कहाँ है ? तो मैं यवनोंके लिये अस्त्र स्पर्श न करूँगा ।"

माधवाचार्यने कहा—"और यदि मृणालिनी मर गई हो ?"

हेमचन्द्रकी आँखों से आगकी चिनगारियाँ निकलने लगीं । उन्होंने कहा—"तब यह आपका ही काम है ।"

माधवाचार्यने कहा—"मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने ही देवकार्य के कष्ट को दूर किया है ।"

हेमचन्द्रकी मुखकान्ति बरसनेवाले मेघके समान हो गई । उन्होंने कांपते हुए हाथ से धनुष पर बाण चढ़ाकर कहा—"जो मृणालिनीका वधकर्त्ता है, वह मेरे लिये वध्य है । मैं इस शर से गुरुहत्या और ब्रह्महत्या, दोनों ही दुष्क्रिया साधन करूँगा ।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

माधवाचार्यने हँसकर कहा—"गुरुहत्या और ब्रह्महत्यामें तुम्हें जितना आमोद है, स्त्री-हत्या में वैसा मेरा नहीं है। अभी तुम्हें पातक का भागी होना न पड़ेगा; मृणालिनी जीवित है। हो सके, तो उसे ढूँढ़ कर मिलो। इस समय मेरे आश्रम से और कहीं चले जाओ। आश्रम कलुषित न करो। अपात्र पर मैं अभी भार नहीं देता।" यह कह माधवाचार्य फिर पहले की तरह जप करने लगे।

हेमचन्द्र आश्रम से निकले। घाट पर आकर अपनी छोटी नावपर सवार हुए। जो दूसरा आदमी नाव में था, उससे उन्होंने कहा—"दिग्विजय, नाव खोल दो!"

दिग्विजय ने पूछा—"कहाँ चलूँ?" हेमचन्द्र ने कहा—"जहाँ अच्छा हो, यमालय चलो।"

दिग्विजय प्रभु का स्वभाव समझता था। उसने अस्फुट स्वर में कहा—"वह तो थोड़ी-सी राह है!" यह कहकर नाव छोड़ वह स्रोत के प्रतिकूल बहने लगा।

हेमचन्द्र ने कुछ देर चुप रहकर कहा—"बहुत दूर हो, तो लौट चलो।"

दिग्विजय नाव लौटाकर फिर प्रयाग के घाट पर जा लगा। हेमचन्द्र कूद कर किनारे पहुँचे, फिर माधवाचार्य के आश्रम की ओर चले।

उन्हें देखते ही माधवाचार्य ने कहा—"फिर क्यों आये हो?"

हेमचन्द्र ने कहा—"आप जो कहेंगे, मैं वही स्वीकार करूँगा। बता दीजिये कि मृणालिनी कहाँ है?"

माध०—"तुम सत्यवादी हो—तुमने मेरी आज्ञा पालन करना स्वीकार किया, इससे ही मैं सन्तुष्ट हो गया। मैंने गौड़ नगर में एक शिष्य के मकान में मृणालिनी को रखा है। तुम्हें भी उसी तरफ जाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पड़ेगा, किन्तु तुम उससे मिल न सकोगे। शिष्य के प्रति मेरी विशेष आज्ञा है, कि जब तक मृणालिनी उनके घर रहे, तब तक वह किसी पुरुष से मिलने न पाये।"

हेम०—मुलाकात न सही, आपने जो कहा, उससे ही मैं सन्तुष्ट हूँ। अब आज्ञा दीजिये कौन-सा काम करना पड़ेगा ?

माघ०—"तुम दिल्ली जाकर मुसलमानों की कुछ सलाह जान पाये हो ?"

हेम०—"यवन बंगविजय का उद्योग कर रहे हैं। वहुत ही शीघ्र बख्तियार खिलजी सेना लेकर गौड़ की ओर जायेंगे।"

माधवाचार्य का मुख हर्ष से प्रसन्न हुआ। उन्होंने कहा—"इतने दिन बाद शायद विधाता इस देशके प्रति सदय हुए।"

हेमचन्द्र बड़े ध्यानसे माधवाचार्य की ओर देख उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। माधवाचार्य कहने लगे—"कई महीनों से मैं केवल गणना में लगा हुआ हूँ। गणना से जो भविष्य निकला है, उसके फलित होने की तैयारी है।"

हेम०—"कैसे ?"

माध०—"गणना कर देखा कि यवन राज्य का ध्वंस वङ्गराज्य से आरम्भ होगा।"

हेम०—यह हो सकता। किन्तु यह कितने दिन में होगा ? और किसके द्वारा ?

माघ०—"इसे भी मैंने गिन लिया है। जब पश्चिम देशीय वणिक वंगराज्य में शस्त्रधारण करेंगे, तब यवन राज्य उजड़ जाएगा।"

हेम०—"तब मेरे जयलाभ की सम्भावना कहाँ है ? मैं बनिया तो हूँ नहीं।"

माघ०—"तुम्हीं वणिक हो। मथुरा में जब तुम मृणालिनी के आसरे बहुत दिन तक थे, तब तुम किस बहाने से वहाँ रहते थे ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेम०—"उस समय मैं वणिक के नाम से मथुरा में परिचित था।"

माध०—"तब तुम्हीं पश्चिम देशीय वणिक हो। गौड़ राज्य में जाकर तुम्हारे शस्त्र-धारण से ही यवनों का निपात होगा। तुम मेरे आगे प्रतिज्ञा करो कि कल सवेरे ही गौड़-यात्रा करोगे। जब तक वहाँ मुसलमानों से युद्ध न करो, तब तक मृणालिनी के साथ मुलाकात भी न करना।"

हेमचन्द्र ने लम्बी साँस त्याग कर कहा—"यही स्वीकार करता हूँ। किन्तु अकेला युद्ध कैसे करूँगा ?"

माध०—"गौड़ेश्वर के पास सेना है।"

हेम०—"हो सकती है—इस विषय में भी बहुत कुछ सन्देह है, फिर भी वह सब मेरे अधीन क्यों होंगे ?"

माध०—"नहीं, तुम पहले जाओ। नवद्वीप में मुझसे मुलाकात होगी। वहाँ पहुँच कर ही इसका उचित उद्योग किया जाएगा। गौड़ेश्वर से मेरा परिचय है।"

"जो आज्ञा !"——कहकर हेमचन्द्र प्रणाम कर विदा हुए। जब तक उनकी वीरमूर्ति आँखों से दिखाई देती रही, तब तक आचार्य उनकी ओर एक टक देखते रहे और जब हेमचन्द्र अदृश्य हुए, तब माधवाचार्य मन-ही-मन कहने लगे—"जाओ बच्चे, कदम-कदम पर विजय-लाभ करो। यदि ब्राह्मणवंश में तुम्हारा जन्म होता, तो तुम्हारे पैरों में कुशांकुर भी न गड़ता। मृणालिनी ! मृणालिनी चिड़िया को मैंने तुम्हारे ही लिये पिंजरे में बन्द कर रखा है। कौन जाने, कहीं तुम उसके कलरव में मुग्ध हो इस बड़े कामको भूल जाओ, इसलिये तुम्हारा परम मंगलाकांक्षी ब्राह्मण तुम्हें कुछ दिन के लिये मनःकष्ट दे रहा है।"

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२

पिंजरे की विहङ्गी

लक्षणावती निवासी हृषीकेश सम्पन्न गृहस्थ—कोई मामूली दरिद्र ब्राह्मण नहीं। उनके वासगृहका गठन बहुत सुन्दर है। उनके अन्तःपुरमें जहाँ दो तरुणियाँ मकान की दीवार में चित्र लिख रही हैं, वहाँ हम अपने पाठकों को थोड़ा ठहराएँगे। दोनों ही रमणियाँ अपने काम को विशेष मन लगाकर कर रही हैं, किन्तु उसकी वजह उनकी आपस की बात-चीत में कोई विघ्न हो नहीं रहा था। उनकी बातचीत के मध्यभाग से हम पाठक महाशयों को सुनाना आरम्भ करते हैं।

एक युवती ने दूसरी से कहा—"क्यों मृणालिनीं! बातों का जवाब क्यों नहीं देती? मैं उस राजपुत्र की बातें सुनना पसन्द करती हूँ।"

"सखी मणिमालिनि! तुम अपने सुखकी बात कहो, मैं आनन्द से सुनूँगी।"

मणिमालिनी ने कहा—"अपने सुख की बात सुनते-सुनते मैं आप जल मरी हूँ, तुम्हें क्या सुनाऊँ?"

मृणा०—"तुम किससे सुनती हो, अपने पति से?"

मणि०—"नहीं तो—और किसी से भी कुछ अधिक नहीं सुन पाती। जरा देखो, मैंने यह कमल कैसा बनाया?"

मृणा०—"अच्छा बनकर भी नहीं बना। पानी से कमल बहुत ऊँचे हैं, किन्तु सरोवर में ऐसा नहीं होता, कमल की डोंड़ी जल से लगी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रहती है, चित्र में भी ऐसा ही होगा। कमल के पत्ते और बनाओ, नहीं तो कमल की शोभा स्पष्ट नहीं होती। और यदि हो सके, तो उसके पास एक राजहंस भी बना दो।"

मणि०—"हंस यहाँ क्या करेगा ?"

मृणा०—"तुम्हारे पति की तरह कमल के साथ बैठकर बातें करेगा।"

मणि० (हँस कर)—"दोनों ही सुकण्ठ हैं। किन्तु मैं हंस न बनाऊँगी। मैं सुख की बातें सुनते-सुनते जल उठी हूँ।"

मृणा०--"तब एक खञ्जन बनाओ।"

मणि०—"खंजन भी न बनाऊँगी। खंजन पंख फैलाकर उड़ जाएगा। यह कोई मृणालिनी तो है नहीं, जिसे मैं स्नेह की सिकड़ी से बाँध रखूँगी।"

मृणा०—यदि खञ्जन ऐसा ही दुष्ट है, तो जैसे मृणालिनी को पिंजरे में बन्द किये हुई हो, वैसे ही उसके लिये भी करो।"

मणि०—"हम लोगों ने मृणालिनी को पिंजरे में बन्द नहीं किया—वह आप ही आकर पिंजरे में घुस गई है।"

मृणा०—"वह माधवाचार्य के गुण से।"

मणि०—"सखी! तुमने कई बार कहा है कि माधवाचार्य के उस निष्ठुर काम का हाल विशेष रूप से कहोगो। तुम माधवाचार्य की बातों में घर छोड़ कर क्यों आई ?"

मृणा०—"मैं माधवाचार्य की बात पर नहीं आई। माधवाचार्य को मैं पहचानती न थी। मैं अपनी इच्छा से भी यहाँ नहीं आई। एक दिन सन्ध्या समय मेरी दासी ने मुझे यह अंगूठी दी और कहा कि जिन्होंने अँगूठी दी है, वह बाग में हैं। मैंने देखा कि यह हेमचंद्र के संकेत की अँगूठी है। जब उन्हें मिलने की इच्छा होती, तब वह इस अँगूठी को भेज देते थे। हमारे मकान के पीछे ही बाग था। यमुना की शीतल हवा उस बाग में खेला करती है। वहीं उनसे मुलाकात होती थी।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मणिमालिनी ने कहा—"इस बात की याद आने से भी मुझे बड़ा दुःख होता है। तुम कुमारी होकर किस प्रकार पुरुष से छिपकर प्रणय करती थीं ?"

मृणा०—"दुःख काहे का सखी। वह मेरे पति हैं। सिवा उनके और कोई कभी मेरा पति न होगा।"

मणि०—"किन्तु अब तक तो वह पति नहीं हुए। बुरा न मानना सखी ! मैं तुमसे बहिन जैसा प्रेम करती हूँ। इसी से कह रही हूँ।"

मृणालिनी ने सिर झुका लिया। कुछ देर बाद आँखों के आँसू पोंछे। कहा—"मणिमालिनी ! इस विदेश में मेरा अपना कोई नहीं है। ऐसा कोई नहीं जो मुझे अच्छी बात सिखाये। कोई भरोसा नहीं कि जो लोग मुझसे प्रेम करते थे, उनके साथ फिर कभी मुलाकात होगी। केवल तुम्हीं मेरी सखी हो—यदि तुम मुझसे प्रेम न करोगी, तो और कौन करेगा ?"

मणि०—"मैं तुमसे प्रेम करूँगी और करती भी हूँ। किन्तु जब यह बात याद आती है, तब समझती हूँ कि—"

मृणालिनी फिर चुपचाप रोई। उसने कहा—"सखी ! तुम्हारे मुँह से यह बात मुझसे सही नहीं जाती। यदि तुम मेरे आगे शपथ करो, कि मैं जो कहूँगी, उसे हम इस संसार में किसी के आगे प्रकट न करोगी, तो मैं तुमसे सब बातें प्रकट कर सकती हूँ। तब तुम मुझसे प्रेम करोगी।"

मणि०—"मैं शपथ करती हूँ।"

मृणा०—"तुम्हारी चोटी में देवताका फूल है, उसे छूकर शपथ करो।" मणिमालिनीने ऐसा ही किया।

तब मृणालिनीने मणिमालिनीके कानमें जो कहा, उसकी विस्तृत व्याख्या की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं। सुन कर मणिमालिनीने बहुत प्रसन्नता प्रकट की। छिपी बात समाप्त हुई।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मणिमालिनी ने कहा—"इसके बाद माधवाचार्य के साथ तुम कैसे आईं ? जो हाल कह रही थीं, वह कहो।"

मृणालिनी ने कहा—"मैं हेमचन्द्र की अँगूठी देख उनसे मिलने की इच्छा से बाग में गई। वहाँ पहुँचने पर दूती ने कहा—"राजपुत्र नाव में हैं, नाव किनारे लगी हुई है।" मैंने बहुत दिन से राजपुत्र को देखा नहीं था, बहुत घबराई हुई थी, इसी से विचारशून्य हो गई। किनारे आकर देखा कि सचमुच एक नाव लगी हुई है। उसके बाहर एक पुरुष खड़ा है। मैं समझी कि राजपुत्र खड़े हैं। मैं नाव के पास गई। नाव के पास जो पुरुष खड़े थे, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ मुझे नाव में चढ़ाया। इसी समय मल्लाहों ने नाव खोल दी। किन्तु मैं हाथ के स्पर्श से ही समझ गई कि यह आदमी हेमचन्द्र नहीं है।"

मणि०—"और उसी समय तुम चिल्लाईं ?"

मृणा०—"चिल्लाई नहीं। एक बार इच्छा की, किन्तु आवाज नहीं निकली।"

मणि०—"मैं होती, तो पानी में कूद पड़ती।"

मृणा०—"हेमचन्द्र को बिना देखे, क्यों मरूँ ?"

मणी०—"इसके बाद क्या हुआ ?"

मृणा०—"पहले ही उस आदमी ने मुझे माँ कहा, उसने कहा—'मैं तुम्हें माता का सम्बोधन करता हूँ—मैं तुम्हारा पुत्र हूँ, कोई आशंका न करना। मेरा नाम माधवाचार्य है, मैं हेमचन्द्र का गुरु हूँ। इतना ही नहीं कि केवल हेमचन्द्र का गुरु हूँ, भारतवर्ष के राजाओं में अनेकों के साथ मेरा यही सम्बन्ध है। मैं इस समय किसी दैवकार्य में नियुक्त हूँ, उसमें हेमचन्द्र मेरा प्रधान सहायक है, तुम उसमें प्रधान विघ्न हो'।"

मैंने कहा—"मैं विघ्न हूँ ?" माधवाचार्य ने कहा—"हाँ, तुम विघ्न हो। यवनों को जीतना और हिन्दू राज्य का फिर से उद्धार करना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सुसाध्य कर्म नहीं है, सिवा हेमचन्द्र के और किसी के लिये साध्य नहीं। यदि हेमचन्द्र लापरवाह हो, तो उसके द्वारा भी यह काम सिद्ध नहीं होगा। जब तक तुमसे मिलना सहज होगा, तब तक हेमचन्द्र के लिये तुम्हारे सिवा कोई व्रत नहीं—तब यवन को कौन मारेगा ?"

मैंने कहा—"समझ गई, पहले मुझे न मारने से यवन न मारे जाएँगे। क्या आपके शिष्य ने आपके द्वारा अँगूठी भेज कर मुझे मारने की आज्ञा दी है ?"

मणि०—"तुमने इतनी बातें बूढ़े से कैसे कीं ?"

मृणा०—"मुझे बड़ा क्रोध आया था, बूढ़े की बातों से मेरा शरीर जल रहा था, फिर विपद के समय लज्जा कैसी ?" माधवाचार्य ने मुझे जुबानदराज समझ मुस्कुरा कर कहा—"हेमचन्द्र को मालूम नहीं कि मैं तुम्हें इस प्रकार हस्तगत करूँगा।"

'तब मैंने मन-ही-मन निश्चय किया कि जिसके लिए यह जीवन है, बिना उनकी आज्ञा के मैं इस जीवन का त्याग न करूँगी। माधवाचार्य कहने लगे—"तुम्हें प्राणत्याग करना न पड़ेगा। सिर्फ कुछ दिन के लिये हेमचन्द्र का त्याग करना पड़ेगा। इसी में उनका परम मंगल है। क्या तुम्हारा यह कर्त्तव्य नहीं है कि जिससे वह राजराजेश्वर हों, तुम्हें राजमहिषी बना सकें, ऐसे कार्य में योगदान हो ? तुम्हारे प्रणयमंत्र से वह कापुरुष हो गये हैं, उन का यह भाव दूर करना क्या उचित नहीं ?" मैंने कहा—"यदि मुझसे मिलना उनके लिये अनुचित है, तो वह मेरे साथ अब कभी मुलाकात न करेंगे।" माधवाचार्यने कहा—"बालक सोचता है कि बालक और वृद्ध दोनों की विचारशक्ति एक समान है, किन्तु यह बात नहीं है। हेमचन्द्र की अपेक्षा हम लोगों की परिणामदर्शिता अधिक है, इसमें सन्देह न करना। तुम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राजी हो या न हो, जो मैंने संकल्प किया है, वह करूँगा। मैं तुम्हें दूसरे देश ले जाऊँगा। गौड़ देश में बहुत ही शान्त स्वभाव के एक ब्राह्मण के घर तुम्हें रख आऊँगा। वह अपनी कन्या के समान तुम्हारा आदर करेंगे। एक वर्ष बाद मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के पास पहुँचा दूँगा और उस समय हेमचन्द्र चाहे जिस अवस्था में रहें, तुम्हारे साथ उनका विवाह कर दूँगा। यह सत्य समझना।' इस बात से या लाचारी से मैं चुप रह गई। इसके बाद यहाँ आयी हूँ। वह क्या है सखी!"

-:o:-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

3

भिखारिणी

दोनों सखी इस प्रकार बातें कर रही थीं। ऐसे समय कोमल कण्ठ से निकली संगीत की ध्वनि उनके कान में पहुँची—

"मथुरावासिनी मधुर हासिनि,
श्यामविलासिनि रे !"

मृणालिनी ने कहा—"यह कहाँ गा रही है ?"

मणिमालिनी ने कहा—"बाहरी घर में गा रही है।"

गानेवाली गाने लगी—

"कहों लो नागरी गेह परिहरि,
काहे विलासिनी रे।"

मृणालिनी—"सखी कौन गाता है, तुम जानती हो ?"

मणि०—"कोई भिखारिणी होगी।"

फिर गीत सुनाई दिया—

"वृन्दावन धन गोमती मोहन,
काहे तू त्यागी रे;
देश-देश पर सो श्यामसुन्दर,
फिरे तू पालागी रे।"

मृणालिनी ने वेग के साथ कहा—"सखी, सखी ! उसे भीतर घर में बुला भेजो।" मणिमालिनी गानेवाली को बुलाने गई। तब तक वह गाने लगी—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विकल नलिने यमुना कलिने,
बहुत पिपासा रे।
चन्द्रमाशालिनी या मधुगामिनी,
ना मिटी आशा रे!
ना निशा समरि--"

इसी समय मणिमालिनी उसे बुलाके घर के भीतर ले आई। वह अन्तःपुर में आकर पहले ही की तरह गाने लगी—

"सा निशा समरि, कहो लो सुन्दरी,
कहाँ मिले देखा रे।
सुनि जाउ चलि, बाजति मुरली,
बने-बने एका रे।"

मृणालिनी ने उससे कहा--"तुम्हारा गला बहुत अच्छा है, तुम फिर गाओ।"

गानेवालीकी उम्र सोलह वर्षकी होगी--षोड्षी नारी और कृष्णांगी। वह वास्तव में काली थी। इसीसे उसके शरीर पर भौंरा बैठने से दिखाई नहीं देता, अथवा रोशनाई लगाने से जान पड़ता था कि पानी लगा है, अथवा पानी लगाने से रोशनाई जान पड़ती थो, यह बात नहीं। जैसे किसी कृष्णवर्ण के घर में रहने से हम लोग श्यामवर्ण कहते हैं, पराये के घर में होने से हलका काला कहते हैं, इसका वैसा ही कृष्णवर्ण है। किन्तु वर्ण चाहे जैसा ही क्यों न हो, भिखारिणी कुरूपा नहीं है। उसका अंग साफ, सुमार्जित चमकदार है। चेहरा प्रसन्न, दोनों आँखें बड़ी चंचल, हास्यमय हैं, आँख के तारे खूब काले, उसके पास ही एक तिल। होंठ छोटे-छोटे लाल, इसके बाद बहुत ही परिष्कार अमलश्वेत, कुंदकलिका के समान दांत की दो कतारें हैं। सिर के बाल पतले हैं, गर्दन के ऊपर मोहनी कबरी है, उसमें जूही की माला लपेटी हुई है। यौवन-संचार के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समय शरीर का गठन सुन्दर हो गया था, मानो काले पत्थर में किसी शिल्पकार ने मूर्त्ति बनाई हो। यह रूप बहुत ही मामूली, किन्तु साफ है—धूलि और कीचड़ से भरा नहीं। अंग बिल्कुल निराभरण नहीं, फिर भी अलंकार भिखारिणी के योग्य ही हैं। हाथ में पीतल का कड़ा है, गले में लकड़ी की माला है, नाक पर एक पतला-सा तिलक है, भौंहों के बीच एक छोटी-सी चन्दन की बिंदी है। यह अनजा की तरह पहले ही के समान गाने लगी—

"मथुरावासिनी मधुरहासिनि,
श्यामविलासिनि रे!
कहा लो नागरि, गेह परिहरि,
काहे विलासिनि रे॥
वृन्द्रावनधन, गोपिनी मोहन,
काहे तू त्यागी रे।
देश देश पर, सो श्यामसुन्दर,
फिरे तू पालागी रे॥
विकच नलिने, यमुना पुलिने,
बहुत पिपासा रे।
चन्द्रमाशालिनी, या मधुमालिनी,
ना मिटी आशा रे॥
सानिशा समरि, कहो लो सुन्दरि,
काहाँ मिले देखा रे!
सुनि जाउ चलि, बाजति मुरली,
बने-बने एका रे॥

गीत समाप्त होने पर मृणालिनी ने कहा—"तुम अच्छा गाती हो। सखी, मणिमालिनी! इसे कुछ देना चाहिये, कुछ दो न?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मणिमालिनी पुरस्कार लेने गई। इस अवसर में मृणालिनी ने बालिका को समीप बुला कर पूछा—"सुनो भिखारिणी! तुम्हारा नाम क्या है?"

भिखा०—मेरा नाम है गिरिजाया!

मृणा०—तुम्हारा मकान कहाँ है?

भिखा०—इसी नगर में।

मृणा०—क्या तुम गीत गाकर हो दिन बिताती हो?

भिखा०—और कुछ तो जानती नहीं।

मृणा०—तुम ऐसे गाने कहाँ पाती हो?

भिखा०—जहाँ जो मिल जाय, सीख लेती हूँ।

मृणा०—यह गाना तुमने कहाँ सीखा?

भिखा०—एक बनियेने मुझे सिखाया है।

मृणा०—वह बनिया कहाँ रहता है?

भिखा०—इसी नगर में।

मृणालिनी का मुख प्रसन्नतासे खिल उठा—मानों सवेरे की सूर्य-किरणों से कमल खिले। उसने कहा—"वह बनिया किस चीज का रोजगार करता है?"

गिरि०—जो सबका व्यवसाय है, वही उसका भी है।

मृणा०—काहेका व्यवसाय?

गिरि०—बातोंका।

मृणा०—यह तो नया व्यवसाय है। इसमें नफा-नुकसान कैसा?

गिरि०—इसमें लाभ का अंश प्रेम और नुकसान रोने का है।

मृणा०—तुम भी व्यवसायी हो। इसका महाजन कौन है।

गिरि०—जो महाजन है।

मृणा०—तुम इसमें क्या हो?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरि०—नकद मुट्ठी !

मृणा०—अच्छा, अपना बोझ उतारो, देखूँ—कौन-सी चीजें हैं !

गिरि०—मेरा सामान देखने का नहीं, सुनने का है ।

मृणा०—अच्छा, तो सुनाओ !

गिरिजाया गाने लगी—

"यमुनार जले मोरकि निधि मिलिलो,
झांप दिया पशिजले, यतने तुलिया गले,
परेछिन्न कुतूहले जे रतन—
निद्रार आवेरो भोर, गृहेते पशिलो चोर,
कण्ठेर काटिलो मोर, मणि हरे निलो !"

मृणालिनीने वाष्पपीड़ित लोचनसे, गद्‌गद् स्वरसे फिर भी हँस कर कहा—"यह किस चोर की बात है ?"

गिरि०—बनिये ने कहा है कि चोरी का धन लेना ही उस का व्यवसाय है ।

मृणा०—उनसे कहना कि चोर के व्यापार से साधुओं की जान नहीं बचती ।

गिरि०—शायद व्यापारी की भी नहीं ।

मृणा०—क्यों, व्यापारी का क्या ?

गिरिजाया ने गाया—

"घाट बाट तट माठ फिरि फिरिन्न बहु देश !
कांहा मेरे कान्तवरण, कांहा राजवेश ॥
हिया पर रोचन्द्र पंकज, कैतु यतन आदि ।
एहि पंकज कांहा मोर, कांहा मृणाल हामारि ॥

मृणालिनीने स्नेहके साथ कोमल स्वरमें कहा—"मृणाल कहाँ है ? उस का पता मैं बताती हूँ, तुम याद रख सकोगी ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गिरि०—हाँ, वह कहाँ है, बताओ !

मृणालिनीने कहा—

"कन्टके गठिलो विधि, मृणाल अंधमें !
जले तारे डुबाइलो पड़िया मरमे ॥
राजहँस देखि एक नयनरंजन ।
चरण बेड़िया तारे करिलो बन्धन ॥
बोले हँसराज कोथा करिबे गमन ।
हृदयकमले दिबो तोमार आसन ।
आसिया बसिलो हँस हृदयकमले ।
काँपिलो कण्टक सह मृणालिनी जले ॥
हेनकाले कालोमेघ उठिलो आकाशे ।
छड़िलो मरालराज, मानस-विलासे ॥
भाँगिल हृदयपद्म तार वेगभरे ।
डूबिया अतल जले मृणालिनी मरे ॥

क्यों गिरिजाया, गीत सीख सकोगी ?"

गिरि०—हाँ, क्या आँख के आँसू तक सीखूँ ?

मृणा०—नहीं, इस व्यवसाय में मेरा वही लाभ है ।

मृणालिनी गिरिजाया को इस कविता का अभ्यास करा रही थी, इसी समय मणिमालिनी के पैरों की आवाज सुनाई दी । मणिमालिनी उस की स्नेहशालिनी सखी थी, यह सभी लोग जानते थे । फिर भी उसे ऐसा विश्वास नहीं हुआ कि मणिमालिनी पितृ-प्रतिज्ञा के भङ्गमें सहायता करेगी । इसलिये उसने इस बातको छिपानेको चेष्टामें गिरिजाया से कहा—"अब आज और कोई जरूरत नहीं; केवल नगरी से मुलाकात करना । अपना बोझ लेकर कल फिर आना । यदि लेनेको कोई सामग्री होगी, तो मैं उसे लूँगी ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरिजाया विदा हुई। मृणालिनीने उसे जो पुरस्कार देना चाहा था, उसे वह भूल गई।

गिरिजाया के कई कदम बढ़ जाने पर मणिमालिनी ने कुछ चावल, एक दल केला, एक पुराना वस्त्र और कुछ कौड़ियां ला कर गिरिजाया को दीं। मृणालिनी भी एक पुराना वस्त्र देना चाहती थी। देने के समय उसने उनके कानमें कहा—"मुझे धैर्य नहीं है; कल तक आसरा देख न सकूँगी, तुम आज रात एक पहरके समय आकर इस मकान की उत्तरी दीवारके पास ठहरना, वहाँ मुझसे मुलाकात होगी। यदि तुम्हारे वणिक साथ आयें, तो लेती आना।"

गिरिजायाने कहा—"समझ गई, मैं निश्चय आऊँगी।"

मृणालिनीके पास मणिमालिनीके आकर बैठनेपर मणिमालीने कहा—"सखी, भिखारिणीकेकान में क्या कह रही थी ?"

मृणालिनीने कहा—

"कि बोलिबो सखी—
सखि मनेर कथा सखि, मनेर कथा सखि—
काने-काने कि कथाटि बोले दिलि ओई !
सखी फिरे कोना सखी, सखी फिरे कोना सखी।
सखी कथा कोस् कथा कबो, नहले कारों नई॥"

मणिमालिनीने हँस कर कहा—"तू क्या हो गई सखी ?"

मृणालिनीने कहा—"तुम्हारी ही सखी तो !"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

४

दूती

● ●

लक्ष्मणावती नगरीके एक प्रदेशमें सर्वधन वणिक्के मकानमें हेमचन्द्र निवास करते थे। वणिक् के दर्वाजेपर अशोक का वृक्ष विराज रहा था; हेमचन्द्र तीसरे पहर उसके नीचे बैठे थे और एक खिली हुई अशोककी शाखा पकड़े, बिना किसी मतलबके उसके टुकड़े-टुकड़े कर रहे थे और बार-बार राहकी ओर देखते जाते थे, मानों किसीकी प्रतीक्षा कर रहे हों। जिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे; वह आई नहीं। नोकर दिग्विजय आया। हेमचन्द्रने दिग्विजयसे कहा—"दिग्विजय, भिखारिणी आज अभी तक नहीं आई। मैं बहुत घबरा रहा हूँ। तुम जरा उसकी खोजमें जाओ।"

"जैसी आज्ञा!" कह कर दिग्वजय गिरिजायाकी खोजमें चला गया। नगरकी बड़ी सड़कपर गिरिजायासे उसकी मुलाकात हुई।

गिरिजायाने कहा—"कौन है, दिग्विजय?" दिग्विजयने चिढ़कर कहा—"मेरा नाम दिग्विजय है।"

गिरि०—अच्छा दिग्विजय! आज कौनसा दिक् जय करने चले हो?

दिग्०—तुम्हारा दिक्।

गिरि०—मैं क्या एक दिक् हूँ? तुम्हें तो दिग्विदिक्का भी ज्ञान नहीं।

दिग्०—कैसे हो, तुम तो अन्धकार हो, अब चलो, प्रभुने तुम्हें बुलाया है।

गिरि०—क्यों?

दिग्०—शायद तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरि०—क्यों, क्या तुम्हारे मुँहमें आग लगानेवाली और कोई नहीं मिली ?

दिग्०—नहीं, यह काम तुम्हें ही करना पड़ेगा। अब चलो।

गिरि०--मैं तो परायोंके लिये ही मरी, अच्छा चलो।

यह कह गिरिजाया दिग्विजयके साथ चली। दिग्विजय अशोक के नीचे बैठे हेमचन्द्र को दिखाकर और कहीं चला गया। हेमचन्द्र न जाने किस सोचमें धीरे-धीरे गाते थे—

"विकच नलिने, यमुना-पुलिने,
बहुत पिपासा रे !"

गिरिजायाने पीछेसे गाया—

"चन्द्रमाशालिनी, या मधुमालिनी
के मिटिलो आशा रे।"

गिरिजायाको देखकर हेमचन्द्रका मुँह प्रसन्न हुआ। उन्होंने कहा—"कौन, गिरिजाया ! क्या आशा मिटी ?"

गिरि०—किसकी आशा ? आपकी या मेरी ?

हेम०—मेरी आशा। मेरी मिटनेसे ही तुम्हारी भी मिटेगी।

गिरि०—आपकी आशा कैसे मिटे ? लोग कहते हैं कि राजा-रजवाड़ों की आशा किसी तरह भी नहीं मिटती।

हेम०—मेरी तो बहुत मामूली-सी आशा है।

गिरि०—यदि कभी मृणालिनीसे मुलाकात होगी, तब यह बात उनसे कहूँगी।

हेमचन्द्र उदास हो गये। उन्होंने कहा—"तब क्या आज भी मृणालिनी के साथ मुलाकात नहीं हुई ? आज किस मुहल्लेमें गाने गई था ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गिरि०—कितने ही मुहल्लोंमें—यह आपसे नित्य-नित्य क्या बताऊँ ? और कुछ कहिये ।

हेमचन्द्रने नि.श्वास त्यागकर कहा—"समझ गया कि विधाता विमुख हैं । अच्छा, कल फिर खोजमें जाना ।"

तब गिरिजाया ने प्रणाम कर कपट रूप से जाने का उद्योग किया । चलने के समय हेमचन्द्र ने उससे कहा—गिरिजाया, तुम हँसती नहीं हो, किन्तु तुम्हारी आंखें हँस रही हैं । आज क्या तुम्हारा गाना सुनकर किसी ने कुछ कहा है ?"

गिरि०—किस-किस को बताऊँ मैं ? एक औरत तेजी से निकल कर मारने आई थी—उसने कहा कि मथुरावासिनी के लिये श्यामसुन्दर का तो माथा दुःख रहा है !

हेमचन्द्र दीर्घ निःश्वास से बुदबुदाते हुए मानों आप-ही-आप कहने लगे—"इतनी खोजसे भी यदि पता न लगा, तब अब आशा वृथा है—क्यों नाहक दिन बिता कर अपना काम नष्ट करूँ ? गिरिजाया, मैं कल तुम्हारे नगर से विदा हो जाऊँगा ।"

"अच्छा !" कह कर गिरिजाया, धीरे-धीरे गाने लगी—

"शुनि जाउये चलि, बाजयि मुरली,
वने-वने एका रे !"

हेमचन्द्र ने कहा—"यह गाना छोड़ो । दूसरा गाना गाओ ।"

गिरिजाया ने गाया—

"जे फूल फूटिलो सखी, गृहतरु शाखे,
केनो रे पवना उड़ालि ताके ।"

हेमचन्द्र ने कहा—"हवा में जो फूल उड़ा, उसके लिये दुःख क्या ? कोई अच्छा-सा गाना गाओ !"

गिरिजाया ने गाया—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

"कण्टके गठिलो विधि, मृणाल अधमे !
जले तारे डुबाइलो, पीड़िया मरमे ॥"

हेम०—क्या-क्या !—मृणाल क्या ?

गिरि०—कण्टके गठिलो विधि, मृणाल अधमे ।
जले तारे डुबाइलो, पीड़िया मरमे ॥
राजहँस देखे एक नयन रञ्जन ।
चरण वेड़िया तारे करिलो बन्धन ॥

नहीं—"दूसरा गाना गाऊँ ?"

हेम०—नहीं-नहीं, यही गाना ! यही गाना गाओ, तुम राक्षसी हो ।

गिरि०—बोले हँसराज कोछा करिबे गमन ।
हृदय कमले दिबो तोमार आसन ॥
आसिया बसिलो हँस हृदय कमले ।
काँपिलो कण्टक सह मृणालिनी जले ॥

हेम०—गिरिजाया ! गिरिजाया, यह गाना तुम्हें किसने सिखाया ?

गिरि०—(हँसकर ,—
"हेनकाले कालो मेघ उठिलो आकाशे ।
उड़िलो मरालराज मानस-तिला से ॥
भाङ्गिलो हृदयमध्य तार वेग भरे !
डूबिया अतल जले मृणालिनी मरे ॥"

हेमचन्द्र ने आँसू भरी आँखों से, गद्गद् स्वर में गिरिजाया से कहा—"यह मेरी मृणालिनी है । तुमने उसे कहाँ देखा ?"

गिरि०—देखा सरोवर में, कांप रही है, पवन के झँकोरे से मृणाल के ऊपर मृणालिनी !

हेम०—अब रूपक छोड़ो, मेरी बातका जवाब दो, मृणालिनी कहाँ है ?

गिरि०—इसी नगर में ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेमचन्द्र ने चिढ़ कर कहा—"यह तो मैं अनेक दिन से जानता हूँ। इस नगर के किस स्थान में ?"

गिरि०—ऋषिकेश शर्मा के घर।

हेम०—कैसा झूठ बोलती है! यह बात तो मैंने ही तुमसे कह दी थी। इतने दिन तक तो तुम उसका पता लगा नहीं सकीं, अब तुमने कौन-सा नया पता लगाया ?

गिरि०—पता लगाया है!

हेमचन्द्र ने दो विन्दु—सिर्फ दो विन्दु आँसू पोंछे। उन्होंने फिर कहा—"वह यहाँ से कितनी दूर है ?"

गिरि०—बहुत दूर।

हेम०—यहाँ से किधर जाना होता है ?

गिरि०—यहाँ से दक्षिण, इसके बाद पूर्व, इसके बाद उत्तर, फिर पश्चिम—

हेमचन्द्रने हाथ की मुट्ठी बाँधी। कहा—"इस समय दिल्लगी छोड़ो—नहीं तो मैं माथा तोड़ दूँगा।"

गिरि०—शान्त हों। क्या रास्ता बता देने से पहचान सकेंगे ? यदि नहीं पा सकते, तो पूछने से फायदा ? आज्ञा होगी तो मैं अपने साथ ले चलूँगी।

बादल हटे, सूर्य की तरह हेमचन्द्रका मुँह प्रसन्न हुआ। उन्होंने कहा—"तुम्हारी सब कामनाएँ सिद्ध हों—मृणालिनी ने क्या कहा ?"

गिरि०—वह तो बता चुकी—

"डूबिया अतल-जले मृणालिनी मरे !"

हेम०—मृणालिनी कैसी है ?

गिरि०—देखा, शरीर में तो कोई बीमारी नहीं।

हेम०—क्या समझीं ? वह सुख में है या तकलीफ में ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरि०—शरीर पर गहने हैं, पहनने के लिये अच्छे कपड़े हैं—हृषिकेश ब्राह्मण की कन्या की वह सखी है।

हेम०—तुम्हारा सत्यानाश हो, उसके मनकी कुछ बात समझीं ?

गिरि०—बरसात के कमलकी तरह, मुँह केवल पानीपर तैर रहा है।

हेम०—पराये के घर में किस प्रकार है ?

गिरि०—इसी अशोक फूल के गुच्छे की तरह ! अपने गौरव से आप ही नम्र है।

हेम०—गिरिजाया ! तुम उम्रमें बालिका मात्र हो, लेकिन तुम्हारे जैसी बालिका देखी नहीं।

गिरि०—माथा तोड़नेवाले ऐसे उपयुक्त पात्र को भी न देखा होगा।

हेम०—मेरे उस अपराध पर कुछ ध्यान न दो। मृणालिनी ने और क्या कहा ?

गिरि०—जिस दिन जानकी—

हेम०—फिर ?

गिरि०—जिस दिन जानकी ने रघुवीर को देख—

हेमचन्द्र ने गिरिजाया का बाल पकड़े। तब उसने कहा—"छोड़ो, छोड़ो, कहती हूँ।"

"कहो !" कह कर हेमचन्द्र ने बाल छोड़ दिये।

तब गिरिजाया ने आद्योपान्त मृणालिनी की बात-चीत का विषय कहा। बाद में कहा—"महाशय, यदि आप मृणालिनी को देखना चाहते हैं, तो मेरे साथ एक पहर रात को चलिये।"

गिरिजाया की बात समाप्त होने पर हेमचन्द्र बहुत देर तक अशोक के नीचे टहलते रहे। बहुत देर बाद कुछ न कह कर घर के भीतर चले गये और वहाँ से एक पत्र लाकर गिरिजाया को दिया और कहा—"मुझे मृणालिनी के साथ मिलने का अधिकार अभी नहीं है। तुम रात

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

को वादेके मुताविक उससे मुलाकात करना और यह पत्र उसे देना। कहना—"देवता के प्रसन्न होने पर शीघ्र ही वर्ष के भीतर ही मुलाकात होगी।" मृणालिनी जो कुछ कहे, वह आज रातको ही मुझसे कह जाना।"

गिरिजाया के जाने पर हेमचन्द्र बहुत देर तक चिन्तित हृदय से अशोक वृक्ष तले चटाई पर लेटे रहे। वह भुजाओं पर माथा रख, पृथ्वी की ओर मुँह कर सोये। कुछ देर के वाद एकाएक उनकी पीठ पर किसी के कड़े हाथों का स्पर्श हुआ। उन्होंने मुँह फेर कर देखा, सामने माधवाचार्य हैं।

माधवाचार्य ने कहा—"वत्स, उठो ! मैं तुम पर असन्तुष्ट हुआ हूँ—और सन्तुष्ट भी हूँ। तुम मेरी ओर विस्मय के साथ क्या देख रहे हो ?"

हेमचन्द्र ने कहा—"आप यहाँ कहाँ से आये ?"

माधवाचार्य ने इस बातका कोई जवाव न दे कहा—"तुम अभी तक नवद्वीप न जा कर राह में देर करते हो—इसमें मैं तुम पर असन्तुष्ट हुआ हूँ। और तुमने जो मृणालिनी का पता पा कर भी अपनी प्रतिज्ञा के प्रतिपालन के लिये उससे मिलने के सुयोग से उपेक्षा की, इससे तुम पर सन्तुष्ट ही हुआ। मैं तुम्हारा तिरस्कार न करूँगा। किन्तु अब तुम्हारे यहाँ विलम्ब करने की जरूरत नहीं। मृणालिनी के पत्रोत्तर की प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी। वेगवान् हृदय का विश्वास नहीं। मैं आज नवद्वीप जाऊँगा। तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा—नाव तैयार है। घर में से अस्त्र-शस्त्रादि जो कुछ हो, उठा लाओ। मेरे साथ चलो !"

हेमचन्द्र ने निःश्वास त्याग कर कहा—"कोई हर्ज नहीं—मैंने आशा-भरोसा सब छोड़ दिया है, चलिये। किन्तु आप कामचर हैं या अन्तर्यामी !"

यह कह हेमचन्द्र ने घर के भीतर प्रवेश कर वणिक् से विदाई ली और अपना असबाब एक मजदूर के सिर पर रख आचार्य के साथ चले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

५

लुब्ध

मृणालिनी या गिरिजाया इनमें कोई भी अपनी प्रतिज्ञा नहीं भूली। दोनों एक पहर रात को हृषिकेश के घर के पास एक-दूसरी से मिलीं। मृणालिनी ने गिरिजाया को देख कर कहा—"हेमचन्द्र कहाँ हैं?"

गिरिजा ने कहा—"वह नहीं आये।"

"आये नहीं!" यह आवाज मृणालिनी के हृदय से ध्वनित हुई। क्षण भर के लिये दोनों चुप रहीं। इसके बाद मृणालिनी ने पूछा—"क्यों नहीं आये?"

गिरि०—यह मैं नहीं जानती। उन्होंने यह पत्र दिया है।

यह कर गिरिजायाने उसको पत्र थमा दिया। मृणालिनीने कहा—पढ़ूँ कैसे? घर में जाकर दीपक जलाकर पढ़ने से मणिमालिनी जान जायेगी।

गिरिजाया ने कहा—"अधीर न हो। मैं दीपक, तेल, चकमक, पत्थर आदि सभी ले आई हूँ। अभी रोशनी करती हूँ!"

गिरिजाया ने शीघ्रता के साथ आग उत्पन्न कर दीपक जला दिया। आग पैदा करने की आवाज एक पड़ोसी के कान में पहुँची—उसने चिराग की रोशनी भी देखी।

गिरिजाया के दीपक जलाने पर मृणालिनी ने निम्नलिखित पत्र मन-ही-मन पढ़ा।

"मृणालिनी! क्या कह कर मैं तुम्हें पत्र लिखूँ? तुम मेरे लिये गृहत्यागिनी हो पराये घर में कष्ट से दिन बिता रही हो। यदि दैवानुग्रह से

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुम्हारा पता पाया, फिर भी तुमसे मुलाकात नहीं की। इससे तुम मुझे अप्रणयी समझोगी—या कोई दूसरी होती, तो ऐसा अवश्य समझती—तुम ऐसा न करोगी। मैं किसी विशेष व्रतमें नियुक्त हूँ, यदि उसके प्रति लापरवाही करूँ, तो मैं कुलांगार होऊँगा। इसके साधन के लिये गुरु के आगे प्रतिज्ञा की है, इसलिये तुम्हारे साथ यहाँ मुलाकात न करूँगा। मैं निश्चय जानता हूँ कि तुम भी ऐसा न चाहोगी कि मैं तुम्हारे लिये अपना वचन भंग कर दूँ। अतएव एक वर्षं किसी तरह दिन बताओ। बाद में ईश्वर प्रसन्न हुए, तो शीघ्र ही तुम्हें राजपुत्रवधू बनाकर अपने सुख को संपूर्ण करूँगा। इस कमउम्र बातूनी बालिकाके हाथ उत्तर भेजना।''

मृणालिनी ने पत्र पढ़कर गिरिजाया से कहा—''गिरिजाया! मेरे पास कागज-लेखन कुछ भी नहीं, कैसे उत्तर लिखूँ। तुम मेरा उत्तर जुबानी ले जाओ। तुम विश्वासी हो, मैं तुम्हें पुरस्कार स्वरूप अपने शरीर का अलंकार देती हूँ!''

गिरिजाया ने कहा—''जवाब किसके पास ले जाऊँगी? उन्होंने मुझे पत्र देकर विदा करने के समय कह दिया था कि आज रात को ही जवाब ले आना। मैंने भी स्वीकार कर लिया था। आते समय मैंने सोचा कि शायद तुम्हारे पास लिखने का कोई समान न हो, इसलिये सब जुटा-जुटा कर ले आने के ख्याल से मैं उनके पास गई। उनसे मुलाकात नहीं हुई, सुना कि वह शाम को ही नवद्वीप चले गये।''

मृणा०—नवदीप!

गिरि०—हाँ, नवद्वीप।

मृणा०—संध्या को ही?

गिरि०—हाँ, संध्या को ही। सुना कि उनके गुरु आकर उन्हें अपने साथ ले गये।

मृणा०—माधवाचार्य! माधवाचार्य ही मेरे काल हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

इसके बाद कुछ देर सोचकर मृणालिनी ने कहा—"गिरिजाया ! अब तुम जाओ। मैं अब घर के बाहर न रहूँगी।"

गिरिजाया ने कहा—"तो मैं जाती हूँ !" कहकर गिरिजाया विदा हुई। उसके मधुर-मधुर गाने को सुनती हुई मृणालिनी ने भी घर में प्रवेश किया।

मृणालिनी घर में जा कर जैसे ही दर्वाजा बन्द करने चली, वैसे ही पीछेसे आ कर किसीने उसका हाथ पकड़ा। मृणालिनी चौंक पड़ी। हाथ पकड़नेवाले ने कहा—"भला साध्वी ! अब जालमें फँसी हो। क्या मैं सुन सकता हूँ कि वह अनुगृहीत पुरुष कौन है ?"

मृणालिनीने क्रोध से कांप कर कहा—"व्योमकेश ! ब्राह्मण-कुलमें पाषण्ड !—मेरा हाथ छोड़।"

व्योमकेश हृषिकेशका पुत्र है। यह आदमी बहुत ही मूर्ख और दुश्चरित्र है। वह मृणालिनीके प्रति विशेष अनुरक्त हुआ था और अपनी अभिलाषाकी पूर्तिके लिये और कोई सम्भावना न देख जबर्दस्ती करनेको तैयार था। किन्तु मृणालिनी प्रायः मणिमालिनी का साथ छोड़ती नहीं, इसलिये व्योमकेश को अब तक कोई मौका न मिला था।

मृणालिनीकी फटकार पर व्योमकेशने कहा—"हाथ क्यों छोड़ूँ ? हाथ छोड़कर क्या करना है ? हाथ छोड़ने-छुड़ानेकी जरूरत नहीं जी ! जरा मेरे मनकी व्यथा तो सुनो, क्या मैं आदमी नहीं हूँ ? जब एकका मनोरंजन किया, तब दूसरेका नहीं कर सकतीं ?"

मृणा०—कुलांगार ! यदि हाथ न छोड़ा तो अभी आवाज देकर घरके सब लोगोंको जगा दूँगी।

व्योम—जगाओ, मैं कहूँगा कि मैंने अभिसारिका को पकड़ा है।

मृणा०—तेरा सत्यानाश हो !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यह कह मृणालिनी ने जोर लगाकर हाथ छुड़ानेकी चेष्टा की, किन्तु कृतकार्य हो न सकी। व्योमकेशने कहा—"अधीर न हो। मेरा मनोरथ पूरा होते ही मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। इस समय तुम्हारी सखी, बहन मणि-मालिनी कहाँ है ?

मृणा०—मैं भी तुम्हारी वहन हूँ।

व्योम०—तुम मेरे सम्बन्धी की बहन हो—मेरी ब्राह्मणी के भाई की बहन हो—मेरी प्राणाधिका राधिका—सर्वार्थ साधिका हो!

यह कह व्योमकेश मृणालिनी को हाथ पकड़ खींच कर ले चला। जब माधवाचार्यने उसे हरण किया था, तब मृणालिनीने स्त्रीस्वभावसुलभ चीखने का बल नहीं दिखाया, इस समय भी वह कुछ न बोली।

किन्तु मृणालिनी अब हँस न सकी। उसने मन-ही-मन लाखों ब्राह्मणों को प्रणाम कर, व्योमकेश को जोरसे लातसे मारा। व्योमकेशने लात खाकर कहा—"अच्छा, अच्छा! मैं धन्य हुआ। इन चरणोंके स्पर्श से तो मैं मोक्ष पाऊँगा। सुन्दरि, तुम मेरी द्रौपदी हो—मैं तुम्हारा अर्जुन हूँ।"

एकाएक व्योमकेश चीत्कारकर कातर स्वरसे चिल्ला उठा—"राक्षसी! तेरे दांतोंमें जहर कहाँसे आया?" यह कह व्योमकेश मृणालिनीका हाथ छोड़ अपनी पीठ पर हाथ सुहलाने लगा। स्पर्शसे उसे मालूम हो गया कि पीठ पर भरभराके खून बह रहा है।

मृणालिनी हाथ छूटने पर भी भागी नहीं। वह भी उस समय व्योमकेश की तरह घबरा उठी थी; क्योंकि उसने तो व्योमकेश को काटा नहीं। भालू-बन्दर जैसा काम वह कर नहीं सकती। किन्तु उसी समय उसे तारोंकी रोशनीमें नाटी बालिका-मूर्ति सामनेसे जाती दिखाई दी। गिरि-जाया उसके कपड़ेको खींच "भाग आओ!" कह कर स्वयं भागी।

भागना मृणालिनीके स्वभावमें नहीं और वह भागी भी नहीं। व्योमकेश आँगनमें खड़ा हो आर्तनाद कर रहा था, यह देख वह गजेन्द्र गमनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अपनी कोठरीकी ओर चली गई। किन्तु तब तक व्योमकेश की चीखसे घरके सब लोग जाग गये थे। सामने हृषिकेशने पुत्रको छटपटाता देखकर पूछा—"क्या हुआ है ? क्यों साँड़की तरह हुँकड़ रहा है ?"

व्योमकेशने कहा—"मृणालिनी अभिसार करने गई थी, मैंने उसे पकड़ा, इसलिये उसने मेरी पीठ पर जोर से काट लिया है।"

हृषिकेश पुत्र की कुचाल जानते न थे। मृणालिनी को आंगन से जाते देख उन्हें इस का विश्वास हो गया। उस समय उन्होंने मृणालिनीसे कुछ नहीं कहा। चुपचाप गजगामिनीके पीछे-पीछे उसके शयनागार में आये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

६

हृषिकेश

मृणालिनीके साथ-साथ उसके शयनागार में जाकर हृषीकेश ने कहा—"मृणालिनी ! तुम्हारा यह कैसा चरित्र है ?"

मृणा०—मेरा कैसा चरित्र !

हृषि०—तुम किसकी लड़की, कैसा चरित्र है, मैं कुछ नहीं जानता; गुरु के अनुरोधसे मैंने तुम्हें घरमें स्थान दिया है। तुम मेरी लड़की मणिमालिनीके साथ एक बिस्तर पर सोती हो—तुममें यह कुलटा वृत्ति क्यों ?

मृणा०—मुझे जो कुलटा कहे, वह झूठा है।

क्रोधसे हृषिकेशके होंठ काँपे। उन्होंने कहा—'पापिनी ! मेरे अन्नसे पेट भरेगी और मुझे ही दुर्वाक्य सुनायेगी ? मेरे घरसे अभी निकल जा ! बहुत होगा, माधवाचार्य नाराज होंगे; उनके डरसे मैं काली नागिन घरमें रख न सकूँगा।"

मृणा०—जो आज्ञा—कल सबेरे आप मुझे न देख पायेंगे।

हृषिकेश समझे थे कि उनके घरसे निकलते ही मृणालिनी आश्रयहीन हो जायेगी, तब ऐसा उत्तर उसके लिये सम्भव नहीं। किन्तु मृणालिनीको निराश्रयकी आशङ्कासे कुछ भी डरी न देख वह समझे कि इसने अपने प्रेमीके घर स्थान पानेके भरोसे ही ऐसा जवाब दिया। इससे हृषिकेशका कोप और बढ़ गया। उन्होंने बड़ी तेजीके साथ कहा—"कल सबेरे क्या, आज ही निकल !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मृणा—जो आज्ञा ! मैं सखी मणिमालिनीसे विदा होकर आज ही दूर होती हूँ।

यह कहकर मृणालिनी उठी।

हृषिकेशने कहा—"मणिमालिनीके साथ कुलटाकी बातचीत कैसो ?"

अब मृणालिनीकी आँखोंमें आँसू आ गये, उसने कहा--"ऐसा ही सही। मैं कुछ ले कर नहीं आई। कुछ ले भी न जाऊँगी। इसी एक कपड़ेसे चली। आपको प्रणाम !"

यह कह, दूसरी बात कहे-सुननेके पूर्व ही मृणालिनी सोनेकी कोठरीसे निकल बाहर चली।

जैसे घरके अन्यान्य लोग व्योमकेशकी चीखसे शय्या छोड़ कर उठ पड़े थे, वैसे ही मणिमालिनी भी जाग उठी थी। मृणालिनीके साथ-साथ उसके शय्यागृहमें पिताको जाते देख वह अपने भाई से बातचीत कर रही थी और भाईकी दुश्चरित्रताको समझ कर वह उसे धिक्कार रही थी। जब वह धिक्कार देकर लौटी, तब आँगनमें तेजीके साथ जानेवाली मृणालिनीके साथ उसकी मुलाकात हुई। उसने पूछा—"सखी ! इस तरह इतनी रातको कहाँ जा रही हो ?" मृणालिनीने कहा—"सखी, मणिमालिनी, तुम चिरायुष्मती हो, मेरे साथ बात न करो--तुम्हारे पिताजीने मना किया है।"

मणि०—यह क्या मृणालिनी ! तुम रोती क्यों हो ? सर्वनाश ! पिताजीने कहनेको न जाने क्या कह दिया है--सखी लौटो, क्रोध न करो !

मणिमालिनी मृणालिनीको लौटा न सकी। पर्वतकी चोटीसे गिरे शिलाखण्ड की तरह अभिमानिनी साध्वी चली गई। तब बहुत घबरा कर मणिमालिनी पिताके पास आई। मृणालिनी भी घरसे बाहर निकली।

उसने बाहर आकर देखा, पहलेके बताये स्थानपर गिरिजाया खड़ी है। मृणालिनीने उसे देखकर कहा—"तुम अब-तक खड़ी क्यों हो ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गिरि०—मैंने तुम्हें भागनेको कहा था। तुम आई या नहीं, यही देखनेको खड़ी थी।

मृणा०—क्या तुमने ब्राह्मणको काट लिया था ?

गिरि०—तो इसमें क्या हर्ज ? ब्राह्मण ही तो है, गऊ तो नहीं।

मृणा०—किन्तु मैंने तो सुना, तू गाती हुई चली गई।

गिरि०—इसके बाद तुम लोगोंकी बातचीत सुन लौट आई थी। देखके याद आया कि एक दिन मर्दुएने 'कालो चोंटी !' कहकर मुझसे दिल्लगी की थी। उस दिन डङ्क मारना बाकी था। मोका देख ब्राह्मणका ऋण चुका दिया। अब तुम कहाँ जाओगी ?

मृणा०—तुम्हारे घर-द्वार है ?

गिरि०—है, पत्तोंकी झोंपड़ी।

मृणा०—वहाँ और कौन रहता है ?

गिरि०—सिर्फ एक बूढ़ी। मैं उसे आई कहती हूँ।

मृणा०—चलो, तुम्हारे घर चलूँगी।

गिरि०—चलो, मैं भी यही सोच रही थी।

यह कहकर दोनों चलीं। चलते-चलते गिरिजायाने कहा—"किन्तु वह झोपड़ी है, उसमें कितने दिन रहोगी ?"

मृणा०—कल सबेरे और जगह चली जाऊँगी।

गिरि०—कहाँ मथुरा ?

मृणा०—मथुरामें मेरे लिये स्थान नहीं।

गिरि०—तब कहाँ ?

मृणा०—यमालयमें।

इसके बाद दोनों कुछ देर चुप रहीं। तब मृणालिनीने कहा—"क्या इस बातपर तुम्हें विश्वास होता है ?"

गिरि०—विश्वास क्यों न होगा ? किन्तु वह स्थान तो है ही, जब इच्छा हो, तभी जा सकती हैं। इस समय एक जगह क्यों नहीं जातीं ?

१२१६८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मृ०—कहाँ ?

गिरि०—नवद्वीप ।

मृणा०—गिरिजाया, तुम भिखारिणीके वेशमें कोई मायाविनी हो । तुमसे कोई बात न छिपाऊँगी । विशेष करके तुम हितैषिणी हो । मैंने नवद्वीप जानेका ही निश्चय किया है ।

गिरि०—अकेली जाओगी ?

मृणा०—साथी कहाँ पाऊँगी ?

गिरि०—(गाते-गाते)

मेघ दरशने हाय, चातकिनी धाय रे !
सङ्ग जानो के के तोरा आय आय आय रे ।।
मेघे ते बिजली हांसी, अमि बड़ो भालोवासी ।
जे जाबी से जाबी तोरा, गिरिजाया जाय रे ।।

मृणा०—यह कैसा रहस्य है गिरिजाया ?

गिरि०—मैं चलूँगी ।

मृणा०—सचमुच !

गिरि०—सच, मैं चलूँगी ।

मृणा०—क्यों चलोगी ?

गिरि०—मेरे लिये सर्वत्र समान है । राजधानीमें भिक्षा बहुत मिलेगी ।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

द्वितीय खण्ड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

२

गौड़ेश्वर

बहुत ही विस्तीर्ण सभामण्डपमें नवद्वीपोज्ज्वलकारी राजाधिराज गौड़ेश्वर विराज रहे हैं। ऊँचे सफेद पत्थरकी वेदीपर रत्नप्रवाल विभूषित सिंहासनपर रत्नप्रवाल-मण्डित छत्रके नीचे बूढ़े राजा बैठे हैं। सिरपर स्वर्ण-किङ्किणोसे वेष्टित विचित्र बेलबूटे कढ़ा सफेद चँदोवा शोभा पा रहा है। एक ओर कुशासनपर होमकी विभूषित, अनिंद्य, मूर्ति ब्राह्मण-मण्डल सभापण्डित को घेरकर बैठे हैं। जिस आसनपर एक दिन हलायुध बैठे थे, उस आसन पर इस समय एक अपरिणामदर्शी चालाक अधिष्ठान करता है। दूसरी ओर महामात्य धर्माधिकारीको आगेकर प्रधान राजपुरुष-गण बैठे हुए हैं। महासामन्त, महाकुमारामात्य, अमात्य, औपरिदक, दासा-पराधिक, चौरोद्धरणिक, शौल्किक, गौल्मिकगण, क्षत्रप, आलबालगण, कोष्ठपाल, काण्डरिक, तदापुन्नक, विनियुक्तक आदि सब बैठे हुए हैं। महा-प्रतिहार आवाज देकर सभाकी असावधानीकी रक्षा कर रहे हैं। स्तवक-गण दोनों ओर कतार बाँधे खड़े हैं। सबसे पृथक् आसनपर कुशासनमात्र बिछाकर पण्डितवर माधवाचार्य बैठे हैं।

राजसभाका नियमित कार्य समाप्त होनेपर सभा-भङ्गकी तैयारी हुई। तब माधवाचार्यने राजाको सम्बोधन कर कहा—"महाराज! ब्राह्मणकी वाचालताके लिये क्षमा कीजियेगा। आप राजनीति-विशारद हैं। इस समय भूमण्डलमें जितने राजा हैं, उन सबमें बहुदर्शी, प्रजापालक एकमात्र आपही आजन्म राजा हैं, आप जानते हैं कि शत्रुदमन राजाका प्रधान-कर्म है। आपने प्रबल शत्रुके दमन का क्या उपाय किया है?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा ने कहा—"आप क्या आज्ञा करते हैं ?" बूढ़े राजा सब बातें सुन नहीं सके ।

माधवाचार्य के फिर बोलने की प्रतीक्षा न कर धर्माधिकारी पशुपतिने कहा—"महाराजाधिराज ! माधवाचार्य पूछना चाहते हैं कि राज-शत्रु के दमन का क्या उपाय हुआ है ? बङ्गेश्वर का कोई शत्रु अबतक दमित नहीं हुआ, इसे अभी तक आचार्य ने प्रकट नहीं किया, वह अच्छी तरह बयान करें ।"

माधवाचार्य ने कुछ हँस कर इस वार कुछ ऊँचे स्वर से कहा—"महाराज, तुर्कों ने आर्यावर्त्त को प्रायः सब हस्तगत कर लिया है। इस समय उन सबने मगध जीत कर गौड़ राज्य पर आक्रमण करने का उद्योग किया है ।"

इस बार आवाज राजाके कान में पहुँची । उन्होंने कहा—"तुर्कों की बात कह रहे हैं ? क्या तुर्क लोग आये हैं ?"

माधवाचार्य ने कहा—"ईश्वर रक्षा कर रहे हैं । अभी तक वह सब यहाँ नहीं आये । किन्तु आने पर किस प्रकार आप उन्हें दूर करेंगे ?"

राजा ने कहा—"मैं क्या करूँ ? और फिर मैं कर भी क्या सकता हूँ !—मेरा यह वृद्ध शरीर—मैं युद्ध के लिये तैयार नहीं हो सकता । अब तो गंगालाभ होना ही सबकुछ है । तुर्क-पठान जो आते हैं, सो आवें ।"

इस प्रकार राजा की बात समाप्त होने पर सभा के सभी लोग चुप रह गये । केवल महासामन्त के म्यान की तलवार अकारण झङ्कार कर उठी । अधिकांश सुननेवालों के मुँहपर किसी प्रकार का भाव प्रकट नहीं हुआ; माधवाचार्य की आँखों से एक बूँद आँसू टपक पड़ा ।

इसपर सभापंडित दामोदर गम्भीर स्वरसे बोले—"आचार्य, क्या आप क्षुब्ध हो गये ? जैसी राजाज्ञा हुई, वह शास्त्रसंगत है । शास्त्रमें ऋषिवाक्य है कि तुर्क लोग इस देश पर अधिकार करेंगे । शास्त्रमें जो है, वह अवश्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

होगा—किसमें सामर्थ्य है जो इसे दूर करे? तब युद्धकी तैयारीकी जरूरत क्या है?"

माधवाचार्यने कहा—"अच्छा, सभापण्डित महाशय! एक बात पूछता हूँ, आपने ऐसी उक्ति किस शास्त्र में देखी है?" दामोदर ने कहा—"विष्णु पुराण में है; यथा—"

माध०—'यथा' रहने दीजिये—विष्णु पुराण लाने की आज्ञा दीजिये और दिखाइये कि ऐसी उक्ति कहाँ है?

दामो०—मैं क्या इतना भुलक्कड़ हूँ? अच्छा, जरा याद करके देखिये; मनु में यह बात है या नहीं?

माध०—गौड़ेश्वर के सभापण्डित क्या मानवधर्म शास्त्र में भी पारदर्शी नहीं हैं?

दामो०—कैसी आफत है। आपने मुझे विह्वल कर डाला! आपके सामने सरस्वती भी भूलती हैं, मैं तो क्षार हूँ। आप के सामने ग्रन्थ का नाम ही न याद आयेगा, किन्तु कविताओं को याद कीजिये।

माध०—गौड़ेश्वर के सभापण्डित ने अनुष्टुप छन्द में किसी कविता की रचना की होगी, यह कुछ असम्भव नहीं। किन्तु मैं मुक्तकण्ठ से कहता हूँ—तुर्क जाति द्वारा गौड़-विजय के विषयकी कातें किसी भी शास्त्र या पुराण में नहीं लिखीं।

पशुपति ने कहा—"क्या आप सर्वशास्त्रवित् हैं?"

माधवाचार्य ने कहा—"यदि आप से हो सके, तो मुझे शास्त्रसम्मत तरीकेसे परास्त कीजिये—

सभापण्डित के एक परिषद् ने कहा—"मैं करूँगा! आत्मश्लाघा शास्त्र में निषिद्ध है, जो आत्मश्लाघा करता है, वह यदि पण्डित है, तो मूर्ख कौन है?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

माधवाचार्य ने कहा—"मूर्ख तीन आदमी होते हैं। जो आत्मरक्षा न कर सकता हो, जो उस यत्नहीनता का परिपोषक है और जो आत्म-बुद्धि के अतीत विषय में वाक्य-व्यय करता है, वही मूर्ख है। आप त्रिविध मूर्ख हैं—समझे!"

सभापण्डित के परिषद् सिर झुकाकर बैठ गये।

पशुपति ने कहा—"यवन के आने पर हम लोग युद्ध करेंगे।"

माधवाचार्य ने कहा—"साधु! साधु! आपका जैसा यश है, वैसा ही प्रस्ताव आपने किया। जगदीश्वर आपका कुशल करें। मुझे केवल यही पूछना है कि यदि युद्ध ही अभिप्राय है, तो उसका उद्योग क्या किया गया है?"

पशुपतिने कहा—"मन्त्रणा छिप कर ही होनी चाहिये, इस सभास्थल में प्रकट रूप में नहीं। किन्तु जो घोड़े, पैदल और नाविक लोग संग्रह किये जा रहे हैं, उसे आप कुछ दिन इस नगरी में पर्यटन करने से समझ सकेंगे।"

माध०—बहुत कुछ जान गया हूँ।

पशु०—तब यह प्रस्ताव क्यों कर रहें हैं?

माध०—प्रस्ताव का तात्पर्य यह है, कि एक वीर पुरुष इस समय यहाँ आये हुए हैं। आप लोग मगध के युवराज हेमचन्द्र की बहादुरी की ख्याति सुन चुके होंगे।

पशु०—खूब सुना है। यह भी सुना है कि वह आप के शिष्य हैं। आप यह बता सकते हैं कि ऐसे वीर पुरुष की बाहू से रक्षित मगधराज्य शत्रु के हाथ किस प्रकार गया?

माध०—इतना ही कारण है कि यवन विप्लव के समय युवराज विदेश में थे।

पशु०—क्या वह समय नवद्वीप में आये हैं?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

माघ०—आये हैं। राज्य हरण करनेवाले यवन इस देश में आ रहे हैं, इस देशमें उनके साथ संग्राम कर दस्यु का दण्ड-विधान करेंगे। गौड़राज उनके साथ सन्धि-स्थापन कर शत्रु-विनाश की चेष्टा करेंगे, तो दोनों का ही मंगल होगा।

पशु०—राजवल्लभ आज ही उनकी परिचर्या में नियुक्त हों। उनके निवास के लिये यथायोग वासगृह निर्दिष्ट होगा। सन्धि के विषय की सलाह यथासमय स्थिर होगी।

तब राजा की आज्ञा से सभा भङ्ग हुई।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२

कुसुम-निर्मिता

राजपुरुषों ने उपनगर के प्रान्त में गंगा किनारे की एक अट्टालिका में हेमचन्द्र का वासस्थान निर्दिष्ट किया। हेमचन्द्र ने माधवाचार्य के परामर्श के अनुसार सुरम्य अट्टालिका में डेरा स्पापित किया।

नवद्वीप में जनादर्न नामक एक वृद्ध ब्राह्मण निवास करते थे। वह बुढ़ापे की वजह और कान से न सुनाई देने की वजह सब तरह से असमर्थ थे और निःसहाय थे। उनकी सहधर्मिणी भी बूढ़ी और शक्तिहीना हैं। कुछ दिन हुए इन की पर्णकुटी प्रबल आँधी से विनष्ट हो गई थी। उसी समयसे यह लोग आश्रय के अभाव से उस वृहत् मकान के आँगनमें राजपुरुषों की अनुमति लेकर रहते हैं।

इस समय यह सुनकर कि कोई राजपुत्र वहाँ आकर निवास करेंगे, वे लोग पराया अधिकार छोड़ कर दूसरे घर की खोज कर रहे थे।

यह सुनकर हेमचन्द्र दुःखी हुए। सोचा कि इतने बड़े स्थान में हम दोनों एक ही मकान में रह सकते हैं। ब्राह्मण क्यों निराश्रय हों? हेनचन्द्र ने दिग्विजय को आज्ञा दी कि ब्राह्मण को घर छोड़ने से मना करो। नौकर ने मुस्कुरा कर कहा—"यह काम नौकर से न होगा। ब्राह्मण देवता मेरी बात कान से नहीं सुनेंगे।"

सचमुच ब्राह्मण कितने हो लोगों की बात पर ध्यान नहीं देते। क्यों कि वह बहरे हैं। हेमचन्द्र समझे कि ब्राह्मण अभिमान के कारण नौकर की बात-चोत न मानेंगे। इसलिये स्वयं उनसे बात-चीत करने गये, उन्होंने ब्राह्मणको प्रणाम किया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जनार्दन ने आर्शीवाद देकर पूछा—"तुम कौन हो?"

हेम०—मैं आपका सेवक हूँ।

जना०--क्या कहा—"तुम्हारा नाम रामकृष्ण है?"

हेमचन्द्र समझ गये कि ब्राह्मणकी श्रवणशक्ति प्रबल नहीं है। इसलिये ऊँचे स्वरसे कहा--"मेरा नाम हेमचन्द्र है। मैं ब्राह्मणोंका दास हूँ।"

जना०–अच्छा, अच्छा; पहले अच्छी तरह सुन नहीं सका—तुम्हारा नाम हनुमानदास है!

हेमचन्द्र ने सोचा कि नामकी बात दूर रही, कार्यसाधन होने से ही काम चलेगा। उन्होंने कहा--"यह महल नवद्वीप के राजाका है, उन्होंने रहने के लिये मुझे यह स्थान दिया है। सुना कि मेरे आनेसे आप स्थान त्याग रहे हैं।"

जना०–नहीं, अभी गङ्गास्नान को नहीं गया; अब स्नान का ही उद्योग कर रहा हूँ।

हेमचन्द्र (बहुत ऊँचे स्वरसे)--स्नान यथासमय करियेगा। अब मैं आप से यह अनुरोध करता हूँ कि आप इस घरको छोड़कर न जायें।

जना०–क्या घर में भोजन न करूँ? तुम्हारे मकान में क्या है? आद्य श्राद्ध है!

हेम०–अच्छा! आहारादिकी इच्छा है, तो उसकी भी तैयारी हो जायगी। अभी आप जैसे इस मकानमें हैं, वैसे ही रहें।

जना०--अच्छा अच्छा; ब्राह्मण-भोजन कराने से दक्षिणा तो मिलेगी ही। इसके कहने की जरूरत नहीं। तुम्हारा मकान कहाँ है?

हेमचन्द्र हार कर लौट रहे थे, ऐसे समय पीछे से किसी ने उनका दुपट्टा खींचा। हेमचन्द्र ने पलट कर देखा। देखते ही पहले उन्हें जान पड़ा, कि सामने किसी कुसुम-निर्मिता देवीकी प्रतिमा है। दूसरे क्षण उन्होंने देखा कि प्रतिमा सजीव है; तीसरे क्षण देखा कि प्रतिमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नहीं, विधाता के निर्माण-कौशलकी सीमा-स्वरूपिणी बालिका अथवा पूर्णयौवना तरुणी है।

हेमचन्द्र उसे देखकर यह निश्चित कर न सके कि यह बालिका है या तरुणी !

वीणानिन्दित स्वरमें सुन्दरी ने कहा—"तुम मेरे दादासे क्या कह रहे थे ? तुम्हारी बात उन्हें सुनाई ही क्यों देने लगी ?"

हेमचन्द्र--वह सुन तो नहीं सके ! तुम कौन हो ?

बालिकाने कहा--"मैं मनोरमा हूँ।"

हेम०-यह तुम्हारे दादा हैं !

मनो०—तुम दादाजी से क्या कह रहे थे ?

हेम०—सुना कि वह इस घर को छोड़ कर जाने की तैयारी कर रहे हैं --वही मैं मना करने आया हूँ।

मनो०—इस घर में एक राजपुत्र आये हैं। वह हम लोगों को रहने देंगे ?

हेम०—मैं ही वह राजपुत्र हूँ। मैं तुम लोगों से अनुरोध कर रहा हूँ कि तुम लोग यहीं रहो।

मनो०—क्यों ?

इस 'क्यों' का कोई जवाब नहीं। हेमचन्द्रने कोई उत्तर न पा कर कहा—"क्यों ? समझ लो कि यदि तुम्हारा भाई आकर इस मकान में रहता, तो क्या तुम लोगों को हटा देता ?"

मनो०—क्या तुम मेरे भाई हो ?

हेम०—आज से तुम्हारा भाई हुआ। अब समझी ?

मनो—समझ गई ! किन्तु बहन समझ कर मेरा तिरस्कार तो न करोगे ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेमचन्द्र मनोरमा की बातों के ढँग पर कुछ आश्चर्य में आये। सोचा कि यह कैसी अलौकिक सरला बालिका है? या पागल है। उन्होंने कहा—"तिरस्कार क्यों करूँगा?"

मनो०—यदि मैं दोष करूँ।

हेम०—दोष देखने से कौन न तिरस्कार करेगा?

मनोरमा उदास हो कर खड़ी रह गई। कहा—"मैंने कभी भाई नहीं देखा; क्या भाई से लज्जा करना चाहिये?"

हेम०—नहीं।

मनो०—तब मैं तुमसे लज्जा न करूँगी, तुम मुझसे लज्जा करोगे?

हेमचन्द्र हँसे, उन्होंने कहा—"मैं अपनी बात तुम्हारे दादा को समझा न सका, इसका क्या उपाय है?"

मनो०—मैं कहती हूँ।

यह कह मनोरमा ने मीठे स्वर में जनार्दन से हेमचन्द्र का अभिप्राय प्रकट किया। हेमचन्द्र यह देख कर विस्मय में आये कि मनोरमा की मधुर बातें बहरे की समझ में आ गईं।

ब्राह्मण ने आनन्दित हो राजपुत्र को आशीर्वाद दिया और कहा—"मनोरमा! ब्राह्मणी से कहो कि राजपुत्र तुम्हारे पौत्र हुए—आशीर्वाद दें।" यह कहकर ब्राह्मण स्वयं 'ब्राह्मणी! ब्राह्मणी' कह कर बुलाने लगे। उस समय ब्राह्मणी दूसरी तरफ घर के काम में लगी हुई थीं—आवाज सुन न सकीं। ब्राह्मण ने असन्तुष्ट होकर कहा—"ब्राह्मणी में यह बड़ा भारी दोष है। कान से कम सुनती है।"

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

3

नौकायान में

हेमचन्द्र तो उपवन-गृह में संस्थापित हुए और मृणालिनी ! निर्वासित, परपीड़िता, सहायहीना मृणालिनी कहाँ है ? सान्ध्य-गगन में रक्तिम मेघमाला ने कांचनवर्ण त्याग कर धीरे-धीरे कृष्णवर्ण धारण किया। रात के तिमिर आवरण में गंगा का विशाल हृदय अस्पष्ट हो गया। सभामण्डप में परिचारकों के हाथ से जलाये दीपमाला की तरह अथवा सवेरे उद्यान-कुसुम के ढेर की तरह आकाश में तारे खिलने लगे। अन्धकार में नदीके हृदयकी धड़कनने रातकी हवासे कुछ तेजी धारण की। इससे रमणी-हृदय में नायक के स्पर्श से उत्पन्न प्रकम्प की तरह नदी के फेनपुंज में श्वेत-पुष्पमाला गुँथी जाने लगी। बहुतेरे लोगों के कोलाहल की भाँति लहरों का शोर होने लगा। मल्लाह नाव किनारे लगाकर रात के विश्राम की व्यवस्था करने लगे। इनमें एक छोटी डोंगी, अन्य नावों से अलग एक किनारे लगी। मल्लाह भोजनादि की व्यवस्था करने लगे।

छोटी डोंगी में सिर्फ दो सवारी है और दोनों ही स्त्री ! पाठकों को बताना न पड़ेगा कि यह मृणालिनी और गिरिजाया थीं।

गिरिजाया ने मृणालिनी को सम्बोधन कर कहा—"आज का दिन तो बीता।"

मृणालिनी ने कोई जवाब नहीं दिया।

गिरिजाया ने फिर कहा—"कल का दिन भी बीतेगा—परसों का दिन बीतेगा—क्यों बीतेगा ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मृणालिनी ने तब भी कोई जवाब नहीं दिया। केवल एक ठण्डी साँस ली।

गिरिजाया ने कहा—"यह क्या, दिन-रात चिन्ता करने से क्या होगा ? यदि हम लोगों ने नवद्वीप आ कर अच्छा काम न किया हो, तो चलो; अब भी लौट चलें।"

अब मृणालिनी ने जवाब दिया—"कहाँ ! कहाँ जायँ ?"

गिरि०—चलो, हृषीकेश के घर चलें।

मृणा०—इससे तो गंगा में डूब क्यों न मरूँ।

गिरि०—तब चलो, मथुरा चलें।

मृणा०—मैं तो कह चुकी हूँ कि वहाँ मेरे लिये स्थान नहीं। कुलटा की तरह जिस बाप के घर से रात को चली आई हूँ, उस बाप के घर अब कैसे मुँह दिखाऊँगी ?

गिरि०—किन्तु तुम अपनी इच्छा से तो आई नहीं, बुरे ख्याल से भी नहीं आई। तब जाने में हर्ज क्या है ?

मृणा०—इस बात का विश्वास कौन करेगा ? जिस बाप के घर मैं प्यार की पुतली थी, उस बाप के घर घृणित हो कर कसे रहूँगी ?

गिरिजाया अन्धकार में देख न सकी कि मृणालिनी की आँखों से बूँद-के-बूँद आँसू टपक रहे हैं। गिरिजायाने कहा—"तब कहाँ चलोगी ?"

मृणा०—जहाँ चल रही हूँ !

गिरि०—यह तो सुख की यात्रा है। तब तुम अनमनी क्यों हो ? 'जिसे देखने से प्रेम बढ़ता है, उसी को देखने जा रही हो' इससे बढ़ कर सुख और क्या है ?

मृणा०—नदिया में मुझसे हेमचन्द्र से मुलाकात न होगी।

गिरि०—क्यों, क्या वह वहाँ नहीं हैं ?

मृणा०—वहाँ ही हैं। किन्तु तुम तो जानती हो कि उन्होंने एक मुझसे न मिलनेका व्रत लिया है। मैं उनके उस व्रतको क्यों तोड़ूँ ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गिरिजाया चुप हो रही। मृणालिनी ने फिर कहा—"और क्या कह कर उनके सामने खड़ी होऊंगी? क्या मैं कहूँ कि हृषीकेश पर क्रोध करके आई हूँ या कहूँ कि हृषीकेश ने मुझे कुलटा कह कर निकाल दिया है?"

गिरिजायाने कुछ देर ठहर कर कहा—"तब क्या नदियामें तुमसे और हेमचन्द्र से मुलाकात न होगी?"

मृणा०—नहीं।

गिरि०—तब क्यों जाती हो?

मृणा०—वह मुझे देख न सकेंगे, किन्तु मैं उन्हें देखूँगी। उन्हींको देखने जा रही हूँ।

गिरिजाया की हँसी रोके न रुकी। उसने कहा—"तब मैं गीत गाऊँ—"

"चरण तले हिनु हे श्याम पराण-रतन!
दिबोना तुम्हारे नाथ मि-छार यौवन॥
ए रतन समतुल, इहा तुमीदिबे मूल,
दिवानिशि मोरे नाथ दिवेदरशन।"

तुम तो उन्हें देख कर जीवन धारण करोगी। मैं तुम्हारी दासी हुई हूँ, इससे तो मेरा पेट भरेगा नहीं, मैं क्या खाकर जिऊँगी?"

मृणा०—मैं थोड़ा शिल्प-कर्म जानती हूँ, माला गूँथना जानती हूँ, चित्र लिखना जानती हूँ, कपड़े के ऊपर फूल बनाना जानती हूँ, तुम बाजार में मेरी शिल्प की चीजें बेचना।

गिरि०—और मैं घर-घर गाना गाऊँगी? 'मृणाल अधमे' गाऊँ?

मृणालीने आधी हँसी और आधी क्रोधकी दृष्टि से गिरिजाया की ओर देखा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गिरिजाया ने कहा—"इस तरह ताकोगी, तो मैं गीत गाऊँगी।" यह कहकर उसने गाया—

"साधेर तरणी अमार के दिलो तरङ्गे।
के आछे काण्डारी हेन, के जाइबो सङ्गे ॥

मृणालिनीने कहा—"यदि इतना भय है, तो अकेली क्यों आई ?"

गिरिजाया 'आगे न जाना'—कह कर गाने लगी—

"भास् लो तरी सकाल वेला, भाविलाम ए जलखेला,
मधुर बहिबो वायु भेसे याबो रङ्गे।
एखन—गगगने गरजे घन, बहे खर समीरण,
कल त्यजि एलामकेनो मरिते आतङ्के !"

मृणालिनीने कहा—"किनारे क्यों नहीं लौट जाती ?" गिरिजाया गाने लगी—

"मने करि कुले फिरै, बाहि तरी धीरि, धीरि,
कुले ते कण्टक तरु वेष्टित भुजङ्गे !"

मृणालिनी ने कहा—"तब डूब क्यों नहीं मरती ?"

गिरिजायाने कहा—"मरूँ तो कोई हर्ज नहीं, किन्तु !" कहकर उसने फिर गाया—

"याहारे काण्डारी करि, साजादया दिनु तरी,
से काउना दिल चद, तरणीर अङ्गे।"

मृणालिनी ने कहा—"गिरिजाया, यह किस अप्रेमी का गाना है ?"

गिरि०—क्यों ?

मृणा०—मैं होती तो नाव डुबा देती।

गिरि०—शौकसे ?

मृणा०—शौकसे !

गिरि०—तब तुमने पानीके भीतर रत्न देखा है ?

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

४

खिड़को में

हेमचन्द्रने कुछ दिन उपवन-गृहमें निवास किया। जनार्दन से नित्य मुलाकात होती थी; किन्तु ब्राह्मणकी वधिरताकी वजह सिर्फ इशारेसे बात होती थी। मनोरमासे हमेशा मुलाकात होती, मनोरमा कभी उनसे उपयाचिका हो बातचीत करती, कभी बिना बोले दूसरी तरफ चली जाती। वास्तवमें मनोरमाकी प्रकृति उनके लिये अधिक विस्मयजनक जान पड़ने लगी। पहले तो उसकी उम्रका पता लगाना कठिन है, इस तरह वह बालिका जान पड़ती थी, किन्तु कभी-कभी मनोरमा बहुत ही गाम्भीर्यशालिनी दिखाई देती थी। क्या मनोरमा आज तक कुमारी है ? एक दिन बात-चीत के बहाने हेमचन्द्रने मनोरमासे पूछा—"मनोरमा, तुम्हारी सुसराल कहाँ है ?" मनोरमाने कहा—"मैं कह नहीं सकती।" और एक दिन पूछा—"मनोरमा, तुम कितने वर्षकी हुई ?" मनोरमाने उस पर भी जवाब दिया—"मैं कह नहीं सकती।"

माधवाचार्य हेसचन्द्रको उपवनमें बैठाकर देश-पर्यटनके लिये चले गये। उनका मतलब यह था कि समय पर गौड़देशके अधीन राजा नवद्वीपमें ससैन्य इकट्ठे हो गौड़ेश्वरके अनुकूल हो रहें, इसके लिए उनमें प्रवृत्ति दी जाय। हेमचन्द्र नवद्वीपमें उनकी प्रतीक्षा करने लगे; किन्तु बेकार दिन बिताना क्लेशकर हो उठा। हेमचन्द्र विरक्त हुए। बार-बार इच्छा होने लगी कि दिग्विजयको घरमें रख वह घोड़े की सवारीसे एकबार गौड़ चलें। किन्तु वहाँ मृणालिनीसे मुलाकात होनेपर उसकी प्रतिज्ञा भङ्ग होगी,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बिना मुलाकातके गौड़यात्राका फल क्या ? इन सब आलोचनाओंसे यद्यपि गौड़यात्रासे हेमचन्द्र बाज आये, तथापि दिन-रात मृणालिनीकी चिन्तामें हृदय लगा रहता। एक दिन तीसरे पहर वह शयनगृहमें पलँगके ऊपर लेट कर मृणालिनीकी चिन्ता कर रहे थे। चिन्तासे भी हृदयको सुख मिल रहा था। खुली खिड़की की राहसे हेमचन्द्र प्रकृतिकी शोभा देख रहे थे। नवीन शरदका उदय था। चाँदनी रात, आकाश निर्मल, विस्तृत ताराओंसे जटित, कहीं-कहीं स्तर परम्परा विन्यस्त सफेद मेघमालाकी तरह विभूषित था। खिड़की की राहसे समीपकी भागीरथी भी दिखाई देती थीं; भागीरथी विशाल छाती, बहुत दूर तक सर्पिणीकी भाँति टेढ़ी-मेढ़ी बहती, चाँदनीकी चोटसे उज्जवल तरंगिणी, हर प्रान्तमें धूममयी नये पानीके आगमनसे आह्लादिनी थीं। नये पानीके कल्लोलको सुन सकते थे। खिड़कीकी राहसे वायु प्रवेश कर रही थी। वायु गङ्गाकी तरङ्गसे उड़ते हुए छींटेके स्पर्शसे शीतल, रातके आगमनसे खिले हुए वन-कुसुमके स्पर्शसे सुगन्धित, चाँदनी की चमकसे श्यामोज्ज्वल वृक्षपत्रोंको धोती हुई नदीके किनारे विराजित काँसके फूलोंको झकझोरती हुई वायु खिड़की की राहसे घुस रही थी ! हेमचन्द्र बहुत प्रसन्न हुए।

एकाएक खिड़कीमें कुछ अंधेरा हुआ—चांदनीके आनेमें रुकावट हुई। हेमचन्द्रने खिड़कीके पास एक मनुष्य का सिर देखा। खिड़की जमीनसे कुछ ऊँची है—इसलिये किसी के हाथ-पैर दिखाई न दिये। केवल एक चेहरा दिखाई दिया। चेहरा विशाल मूँछ-दाढ़ीसे भरा हुआ है, उसके सिरपर पगड़ी है। उस खिली हुई चाँदनीमें खिड़कीके पास सामने पगड़ी पहने दाढ़ीदार मनुष्यका सिर देख हेमचन्द्रने शय्यासे उछलकर अपनी तेज तलवार हाथमें लेली।

तलवार उठा कर हेमचन्द्रने देखा कि खिड़की में अब मनुष्य का सिर नहीं !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हेमचन्द्र तलवार हाथमें लिये दर्वाजा खोल कोठरीसे बाहर निकले और खिड़कीके नीचे आये। वहाँ कोई नहीं था!

घरके चारों ओर, गङ्गा किनारे, वनमें हेमचन्द्रने इधर-उधर देखा। कहीं कोई दिखाई न दिया।

हेमचन्द्र घर लौट आये। तब राजपुत्रने अपने शरीरपर पिताके दिये योद्धावेश को सिरसे पैर तक मण्डित किया। कुसमय जलोदय से विभूषित गगनमण्डलकी तरह उनकी सुन्दर मुख-कान्तिपर अन्धकार छा गया। वह अकेले उस गम्भीर रातमें शस्त्रमय हो बाहर निकले। खिड़की में मनुष्य का सिर देख वह समझ गये कि बङ्गालमें तुर्क आ गये।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

५

वापी के किनारे

●●●

अकाल जलदोदय स्वरूप भीममूर्ति राजपुत्र हेमचन्द्र मुसलमानों की खोजमें निकले। बाघ जैसे शिकार देखते ही वेगसे दौड़ता है, वैसे ही हेमचन्द्र तुर्क देखकर दौड़े। किन्तु तुर्कसे मुलाकात कहाँ हो—इसका कोई ठिकाना नहीं।

हेमचन्द्रने एक ही तुर्क देखा था। किन्तु उन्होंने यह निश्चय किया, कि शायद तुर्क सेना नगरके पास पहुँच कहीं छिपी हुई है, या यह आदमी तुर्क सेनाका पूर्वचर हो। यदि तुर्क सेना ही आई हो, तो उसके साथ अकेले तो संग्राम सम्भव नहीं। किन्तु जो हो, असल बातकी बिना जांच किये हेमचन्द्र कभी स्थिर रहनेवाले नहीं। जिस महत्कार्यके लिये उन्होंने मृणालिनीका त्याग किया था, आज रात नींदमें सो कर वह उस कामसे उपेक्षा करनेवाले नहीं। विशेषत: यवनवधमें हेमचन्द्र को आन्तरिक आनन्द था। पगड़ीदार सिर देख कर उनकी इच्छा भयानक रूपसे प्रबल हो उठी, सब उनके स्थिर होने की सम्भावना कहाँ? इसलिये जल्दी कदम बढ़ाते हेमचन्द्र राजपथ पर चले।

उपवनगृहसे राजपथ कुछ दूर है। जो रास्ता तय कर उपवनगृहसे सड़क पर जाते हैं, वह थोड़े आदमियों के चलने का ग्राम्यपथ मात्र है। हेमचन्द्र उसी राहसे चले। उस राहके किनारे खूब लम्बी-चौड़ी सीढ़ियोंसे सुशोभित एक बावली थी। बावलीके किनारे मौलिश्री, शाल, अशोक, चम्पा, कदम्ब, पीपल, वट, आम आदिके वृक्ष थे। वृक्ष सुश्रृङ्खलताके साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक कतारमें नहीं थे; कई वृक्ष आपसमें शाखा-से-शाखा भिड़ाकर वावलीके किनारे घोर अन्धकार किये हुए थे। दिनमें भी वहाँ अँधेरा रहता है। अफवाह थी कि इस सरोवरमें भूत विहार करते हैं। यह संस्कार पड़ोसियोंके मनमें इतना दृढ़ हो रहा था कि अकसर वहाँ कोई जाता न था। यदि कोई जाता भी, तो अकेले न जाता। रातमें कोई कभी न जाता।

पौराणिक धर्मके एकाधिपत्यके समय हेमचन्द्र भूतयोनिके सम्बन्धमें विश्वासी रहे होंगे, इसमें संदेह नहीं। किन्तु प्रेतके सम्बन्धमें विश्वासी होनेपर भी वह अपने गन्तव्य पथपर जानेमें संकोच करें, ऐसे डरपोक नहीं थे। इसलिये वह निःसंकोच तालाबके रास्ते चले। निःसंकोच थे, किन्तु कौतुहलशून्य नहीं; तालाबके किनारे चारों ओर, उसके किनारेकी ओर वह अच्छी तरह देखते हुए चले। वह सीढ़ीकी राहके पास पहुँचे। एकाएक चौंक पड़े। अफवाह पर उनका विश्वास दृढ़ हुआ। उन्होंने देखा कि चाँदनीमें सबसे नीचेकी सीढ़ीपर पानीमें पैर लटकाये श्वेत वस्त्र पहने कोई कोई बैठा है। वह स्त्री-मूर्ति जान पड़ती है। श्वेतवसना बिना चोटी बाँधे वेणीसहित खुले बाल, कन्धे पर बालोंकी लटें फेंक, दोनों बाँह, मुखमण्डल, सर्वत्र ढँकके बैठी हुई है। प्रेत समझकर हेमचन्द्र चुपचाप चले जा रहे थे। किन्तु मन में सोचा कि शायद कोई मनुष्य हो? इतनी रात को यहाँ कौन है? शायद उसने तुर्क को देखा हो। इस सन्देह से हेमचन्द्र लौटे। निर्भय हो वह तालाब के किनारे उतरे, वह सीढ़ियों से धीरे-धीरे उतरने लगे। प्रेतिनी उनका आना जानकर भी हटी नहीं। पहले ही की तरह बैठी रही। हेमचन्द्र उसके पास आये। तब वह उठ खड़ी हुई। वह हेमचन्द्र की ओर पलटी; उसने हाथ से मुंह पर छाये बालों को हटाया। हेमचन्द्र ने उस का मुँह देखा—वह प्रेतिनी नहीं, किन्तु प्रेतिनी होनेसे हेमचन्द्र उतने आश्चर्यमें न आते। पूछा—"कौन मनोरमा! तुम यहाँ?"

मनोरमा—मैं यहाँ कई बार आती हूँ—किन्तु तुम यहाँ कैसे?

हेम०—मुझे काम है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मनो०—इतनी रातको कौन काम ?

हेम०—फिर बताऊँगा। तुम इतनी रातको यहाँ कहाँ ?

मनो०—तुम्हारा यह वेश कैसा ? हाथ में माला, कमर में तलवार, तलवार में यह क्या चमक रहा है ? क्या यह हीरा है ? माथे पर यह क्या है ? इसमें जगमग झलक रहा है, वह क्या है। वह हीरा है ? यह हीरा कहाँ पाया ?

हेम०—मेरे पास था।

मनो०—इतनी रात को इतने हीरे पहन कर कहाँ जा रहे हो ? चोर छीन लेंगे।

हेम०—मेरे पास से चोर ले नहीं सकते।

मनो०—तब इतनी रातको इतने जेवरों की ज़रूरत क्या ? क्या तुम विवाह करने जा रहे हो ?

हेम०—तुम्हें क्या जान पड़ता है मनोरमा ?

मनो०—मनुष्य मारने का अस्त्र ले कर कोई विवाह करने नहीं जाता। तुम युद्ध में जा रहे हो !

हेम०—किसके साथ युद्ध करूँगा ? तुम यहाँ क्या कर रही हो ?

मनो०—स्नान कर रही थी। स्नान करके हवा में बाल सुखा रही थी। यह देखो, बाल अब भी गीले हैं ? यह कह मनोरमाने गीले केशोंको हेमचन्द्र के हाथ से छुलाया।

हेम०—रातको स्नान क्यों ?

मनो०—मेरे शरीर में ज्वाला होती है।

हम०—तो गङ्गास्नान न करके यहाँ क्यों ?

मनो०—यहाँ का पानी बहुत ठण्डा है।

हेम०—तुम सदा यहाँ आती हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मनो०—हाँ, आती हूँ।

हेम०—मैं तुम्हारा सम्बन्ध ठहरा रहा हूँ—तुम्हारा विवाह होगा। विवाह होने पर ऐसे किस प्रकार आओगी ?

मनो०—पहले विवाह तो हो।

हेमचन्द्र ने हँस कर कहा—"तुझे लज्जा नहीं मुँहकाली ?"

मनो०—तिरस्कार क्यों करते हो ! तुमने तो कहा था कि तिरस्कार न करूँगा ?

हेम०—इसके लिये क्षमा करना। तुमने यहाँ से किसी को जाते देखा है ?

मनो०—देखा है।

हेम०—वह किस वेश में था ?

मनो०—तुर्क के वेश में।

हेम०—बहुत विस्मित हुए; उन्होंने कहा—"यह क्या ? तुमने तुर्कको कैसे पहचाना ?"

मनो०—मैंने पहले तुर्क देखा है।

हेम०—कैसे ? कहाँ देखा है ?

मनो०—जहाँ कहीं देखा। क्या तुम उसी तुर्क की खोज में जा रहे हो ?

हेम०—हाँ, वह किस राह गया ?

मनो०—क्यों ?

हेम०—मैं उसे मारूँगा।

मनो०—मनुष्य को मारने से क्या होगा ?

हेम०—तुर्क मेरे परम शत्रु हैं।

मनो०—तब एक के मारने से क्या तृप्ति होगी ?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेम०—मुझे जितने तुर्क दिखाई देंगे, उतने मारूँगा।

मनो०—मार सकोगे ?

हेम०—हाँ मार सकूँगा।

मनोरमा ने कहा—"तब सावधान, मेरे साथ आओ।"

हेमचन्द्र इधर-उधर करने लगे। यवन के युद्ध में यह बालिका पथ-प्रदर्शनी ?

मनोरमा—उनके मनका भाव समझ गई। उसने कहा—"मुझे बालिका समझ कर अविश्वास कर रहे हो ?"

हेमचन्द्र ने मनोरमा की ओर देखा, साथ ही विस्मय में आ कर सोचा—क्या मनोरमा मानुषी है !

—:o:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

६

पशुपति

गौड़ देश के धर्माधिकार पशुपति असाधारण व्यक्ति थे; वह दूसरे गौड़ेश्वर थे। राजा वृद्ध हैं; वार्द्धक्य के धर्मानुसार परमतावलम्बी और राजकार्यमें अयत्नवान् हुए थे; इसलिये प्रधान अमात्य, धर्माधिकार के हाथ में ही गौड़राज्यका सम्पूर्ण भार अर्पित था और सम्पद तथा ऐश्वर्य में पशुपति गौड़ेश्वर की बराबरी के आदमी हो चले थे।

पशुपति की उम्र पैंतीस वर्ष की होगी। वह देखने में बहुत सुन्दर पुरुष हैं। उनका शरीर लम्बा, छाती चौड़ी, सर्वाङ्ग अस्थिमांस के उपयुक्त संयोग से सुन्दर है। उनका वर्ण तपे हुए सोने जैसा, ललाट बहुत विस्तृत, मानसिक शक्ति के मन्दिर-स्वरूप हैं। नाक लम्बी और ऊँची, आँखें छोटी; किन्तु उनमें असाधारण चमक है। मुखकान्ति ज्ञान-गांभीर्य प्रकट करता और रात-दिन विषयानुष्ठानकी चिन्ता के गुण से कुछ पुरुष-भाव प्रकाशक हैं। यह होने से क्या होता है, राजसभा में उनके ऐसा सर्वाङ्गसुन्दर पुरुष और कोई न था। लोग कहते थे कि गौड़ देशमें वैसा पण्डित और विचक्षण व्यक्ति कोई न था।

पशुपति जाति के ब्राह्मण हैं; किन्तु यह कोई भी नहीं जानता कि उनका जन्मस्थान विशेष रूपसे कहाँ है। कहते हैं कि उनके पिता शास्त्र-व्यवसायी दरिद्र ब्राह्मण थे।

पशुपति केवल अपनी बुद्धि-विद्याके प्रभावसे गौड़ राज्यके प्रधान-पद पर अधीष्ठित हुए थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पशुपति युवावस्था में काशीधाम में पिता के पास रह कर शास्त्रका अध्ययन करते थे। वहाँ केशर नामक एक वंगीय ब्राह्मण निवास करते थे। हेमवती नाम की केशर की एक आठ वर्ष की कन्या थी। उसके साथ पशुपति का विवाह हुआ। किन्तु अदृष्टवश विवाह की रातको ही केशर सम्प्रदान की हुई कन्या को ले कर गायब हो गये। फिर उनका कोई पता न लगा। तब से पशुपति पत्नी के सहवास से वञ्चित थे। कारणवश उन्होंने अब तक दूसरा विवाह नहीं किया। वह इस समय राजप्रासाद के समान ऊँचे महल में निवास करते थे; किन्तु स्त्रीकी आँखों में निकली ज्योति के अभाव से वह ऊँचा महल आज भी अन्धकारमय है!

आज रात उसी ऊँचे महल की एक एकान्त कोठरी में पशुपति अकेले चिराग की रोशनी में बैठे हुए हैं। इस कोठरी के पिछवाड़े ही अमराई है। अमराइ से निकलने के लिये एक गुप्त द्वार है उस दर्वाजे पर इस रात में आकर किसी ने धीरे से खटखटाया। घर के भीतर से पशुपति ने दर्वाजा खोल दिया। एक आदमी ने घर में प्रवेश किया। वह मुसलमान है। हेमचन्द्र ने उसे ही खिड़कीमें देखा था। तब पशुपतिने उसे अलग आसन पर बैठनेको कह कोई विश्वासजनक चिह्न देखना चाहा। मुसलमान ने भी चिह्न दिखाया!

पशुपतिने संस्कृतमें कहा—"समझ गया, आप तुर्क सेनापति के विश्वासपात्र हैं। इसलिए मेरे भी विश्वासपात्र है! आप ही का नाम मुहम्मद अली है? अब आप सेनापति का मतलब कहिये।"

यवन ने भी संस्कृतमें उत्तर दिया—किन्तु उसकी संस्कृतमें तीन हिस्सा फारसी और बाकी चौथा हिस्सा संस्कृत थी, जो भारतवर्षमें कभी व्यवहार में लाई नहीं गई। यह मुहम्मद अली की बनाई संस्कृत है। पशुपति बहुत ही कष्टसे उसका अर्थ समझे। पाठकोंको वह कष्ट भोगने की आवश्यकता नहीं। हम यहाँ उनके समझनेके लिये उस नवीन संस्कृत का अनुवाद किये देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यवनने कहा—"खिलजी साहब का अभिप्राय आप जानते हैं। उनकी इच्छा है कि आप बिना युद्धके गौड़-विजय करें। आप कैसे यह राज्य उनके समर्पण करेंगे ?"

पशुपतिने कहा—"यह निश्चित नहीं है कि मैं यह राज्य उन क अर्पण करूँगा या नहीं! स्वदेश-वैर महापाप है। मैं ऐसा काम क्यों करूँ ?"

मुह०—अच्छी बात है। मैं चला ! तब आपने खिलजी के पास दूत क्यों भेजा था ?

पशु०—यह जानने के लिये कि उनमें युद्ध का जोश कितना है !

यवन०—वह मैं आपको बताये जाता हूँ,। उन्हें युद्ध में ही आनन्द है।

पशु०—मनुष्य युद्धे पशु युद्धे च ? हाथी के युद्ध में कितना आनन्द है ?

मुहम्मद अलीने क्रोधके साथ कहा—"गौड़में युद्धके अभिप्राय से आना पशु-युद्धमें ही आना है। मैं समझ गया ! व्यंग करनेके लिये ही आपने सेनापतिको आदमी भेजनेको कहा था। हम लोग युद्ध करना जानते हैं, व्यंग नहीं जानते। जो जानते हैं, वह करेंगे।"

यह कह मुहम्मद अली जानेको तैयार हुआ। पशुपतिने कहा—"क्षण भर ठहरिये ! और कुछ सुनते जाइए। मैं यवनके हाथ यह राज्य सौंपने को असम्मत नहीं—अक्षम भी नहीं हूँ। मैं ही गौड़ का राजा हूँ; वह नाम मात्रके राजा हैं। किन्तु समुचित मूल्य न मिलनेसे मैं अपना राज्य क्यों आप लोगों को दूँ ?"

मुहम्मद अलीने कहा—"आप क्या चाहते हैं ?"

पशु०—खिलजी क्या देंगे !

मुह०—जो कुछ आप का है वह सभी रहेगा—आपका जीवन, ऐश्वर्य, पद सभी रहेगा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पशु०—तब मैंने पाया क्या ? यह तो सभी है ही—किस लालच से मैं इतना पाप करूँ ?

मुह०—हम लोगोंके अनुकूल न रहने से कुछ भी न रहेगा। युद्ध करने से आपका ऐश्वर्य, पद और जीवन तक भी न रहेगा।

पशु०—यह तो युद्ध समाप्त हुए बिना नहीं कहा जा सकता। हम लोगोंको युद्ध करनेसे बिल्कुल अनिच्छुक भी न समझियेगा। विशेषतः मगधमें जो विद्रोहका उद्योग हो रहा है, उसे भी मैं जानता हूँ। उसे ही दबानेमें खिलजी आजकल व्यस्त हैं। गौड़-विजयकी चेष्टा उन्हें कुछ दिनके लिये त्यागनी पड़ेगी--यह सब मैं जानता हूँ। मेरा माँगा हुआ पुरस्कार मिले या न मिले, किन्तु यदि युद्ध करना ही स्थिर हो, तो हम लोगोंके उद्योगका यही समय है। जब बिहारमें विद्रोही सेना सज्जित होगी, तब गौड़ेश्वरकी सेना भी सज्जित होगी।

मुह०—हर्ज क्या है ? चींटी काटनेके बाद मच्छरके काटे हाथी नहीं मरता। किन्तु मैं सुन जाना चाहता हूँ कि आप क्या पुरस्कार चाहते हैं।

पशु—सुनिये ! मैं इस समय सच्चा गौड़ेश्वर हूँ, किन्तु लोग मुझे गौड़ेश्वर नहीं कहते। मैं अपने नामसे राजा होना चाहता हूँ। सेनवंश का लोप हो और पशुपति गौड़ाधिपति हों !

मुह०—इसमें आपने हम लोगों का क्या उपकार किया ! हम लोगों को क्या देंगे !

पशु०—राजकर मात्र! मुसलमानके अधीन मैं करप्रद राजा होऊँगा ?

मुह०—अच्छा; आप ही यदि सच्चे गौड़ेश्वर हैं, राजा इस तरह आप को मुट्ठी में हैं, तब हम लोगों के बात-चीत करनेकी आवश्यकता ही क्या है ? हम लोगों को सहाय की आवश्यकता ही क्या है ? आप हम लोगों को कर क्यों देंगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पशु०—इसे मैं साफ-साफ बता दूंगा। इसमें कपट न करूँगा। प्रथमतः सेनराज हमारे प्रभु हैं, उम्र में वृद्ध हैं, मुझ पर स्नेह करते हैं। अगर मैं अपने बल से उन्हें राज्यच्युत करूं, तो बहुत लोकनिन्दा होगी। आप लोग जरा भी युद्ध-उद्योग न कर, मेरी अनुकूलतासे बिना युद्ध के ही राजधानी में प्रवेश कर, उन्हें सिंहासन से उतार मुझे उसपर बैठायेंगे, तो निन्दा न होगी। द्वितीयतः राज्य अनधिकारी के अधिकार में आने से विद्रोह की सम्भावना है, आप लोगों की सहायता से उस विद्रोह को मैं सहज ही दबा सकूँगा। तृतीयतः मेरे स्वयं राजा होने से इस समय सेनराज के साथ आप लोगों के साथ युद्ध की सम्भावना है। युद्ध के लिये मैं तैयार हूँ—किन्तु जय और पराजय दोनों की ही सम्भावना है। जीतने से मुझे कोई नया लाभ न होगा; किन्तु पराजय से सर्वस्व हानि है। किन्तु आप लोगोंसे सन्धि कर राज्य ग्रहण करनेसे यह आशंका न रहेगी। विशेषतः सदा युद्ध के लिये तैयार रहने से नया राज्य शासित नहीं होता।

मुह०—आप वे राजनीतिज्ञ की तरह विचार किया है। आपकी बात से मुझे पूरा विश्वास हुआ है। मैं भी ऐसे ही स्पष्ट रूप में खिलजी साहब का अभिप्राय प्रकट करूँगा। यह सही है कि वह इस समय बहुतेरी चिन्ताओं में व्यस्त हैं; किन्तु हिन्दुस्तान में यवन राजा एकेश्वर होंगे, दूसरे राजा का नाम भी हम लोग रहने न देंगे; किन्तु आपको गौड़ का शासनकर्त्ता बना देंगे। जैसे दिल्ली में मुहम्मद गोरी के प्रतिनिधि कुतुबुद्दीन हैं, जैसे पूर्व देश में कुतुबुद्दीन के प्रतिनिधि बख्तियार खिलजी हैं, वैसे ही आप गौड़ में बख्तियार के प्रतिनिधि होंगे। आप इस पर राजी हैं या नहीं।

पशुपति ने कहा—"मैं इस पर राजी हूँ।"

मुह०—अच्छा! किन्तु मुझे और एक बात पूछना है। आप जो स्वीकार करते हैं, उसके साधन की क्षमता आप में है?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पशु०—मेरी आज्ञा बिना एक पैदल सिपाही भी युद्ध न करेगा। राजकोष मेरे अनुचरों के हाथ हैं। मेरी आज्ञा न होने से युद्ध की तैयारी के लिए एक पैसा भी न खर्च किया जायगा। सिर्फ पाँच आदमियोंको ले कर खिलजी को राजपुर में प्रवेश करने को कहो। कोई पूछेगा भी नहीं कि तुम लोग कौन हो।

मुह०—और भी एक बात बाकी है। इस देश में यवनों का परमशत्रु हेमचन्द्र रहता है। आज रात को ही उसका सिर यवन छावनी में भेजना होगा।

पशु०—आप लोग आकर ही उसका सिर काटिएगा। मैं शरणागत की हत्या का पाप कैसे स्वीकार करूँ?

मुह०—हम लोगोंसे यह न होगा। यवनों का आना सुनते ही वह नगर छोड़ कर भाग जायगा। आज वह निश्चिन्त है। आज ही आदमी भेज कर उसका वध कराइये।

पशु०—अच्छा, यह भी स्वीकार किया।

मुह०—अब हम सन्तुष्ट हुए। मैं आपका जवाब ले कर जाता हूँ।

पशु०—जैसी इच्छा। मुझे और एक बात पूछना है।

मुह०—क्या, कहिये!

पशु०—मैं जो राज्य आप लोगों के हाथ दे दूँगा। बाद को यदि आप लोग मुझे निकाल बाहर करें?

मुह०—हम लोग आप की बात के भरोसे थोड़ी-सी सेना ले कर दूत का परिचय देते हुए इस नगर में प्रवेश करेंगे। इस पर यदि मैं अपने वादे के अनुसार काम न करूँ, तो आप सहज ही हम लोगों को निकाल सकते हैं।

पशु०—और अगर आप थोड़ी सेना ले कर न आयें तो?

मुह०—तो युद्ध कीजियेगा।—यह कहकर मुहम्मदअली विदा हुआ।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

७

जासूस

मुहम्मदअली के बाहर हो निगाहों की ओट होने पर और किसी आदमी ने गुप्तद्वारके समीप पहुँच कर मधुर स्वरमें कहा—"प्रवेश करूँ ?"

पशुपतिने कहा—"हाँ, आओ।"

एक जासूस ने प्रवेश किया। उसके प्रणाम करने पर पशुपति ने आशीर्वाद दे कर पछा—"कैसे हो शान्तशील! सब मंगल-समाचार है न ?"

जासूस ने कहा—"आप एक-एक प्रश्न कीजिये। मैं सब समाचार देता हूँ।"

पशु०—यवनोंके वास-स्थान पर गये थे ?

शान्त०—वहाँ कोई जाने नहीं पाता।

पशु—क्यों ?

शान्त०—बहुत ही घना वन है, दुर्भेद्य है।

पशु०—हाथमें कुल्हाड़ी ले कर जंगल काटते हुए क्यों न गये ?

शान्त०—वाघ और भालुओंका उपद्रव है।

पशु०—सशस्त्र हो कर क्यों नहीं गये ?

शान्त०—जिन सब लकड़हारों ने बाघ-भालुओंका वध कर वन में प्रवेश किया था, उन सबने यवनोंके हाथसे प्राण-त्याग किया—कोई लौट कर न आया।

पशु०—बहुत होता, तुम भी न आते ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शान्त०—तब यहाँ आ कर आपको समाचार कौन देता ?

पशुपतिने हँस कर कहा—"तुम्हीं आते !"

शान्तशीलने प्रणाम कर कहा—"मैं ही समाचार देने आया हूँ।"

पशुपतिने आनन्दित हो पूछा—"तुम कैसे गये ?"

शान्त०—पहले पगड़ी, अस्त्र और तुर्क-वेश संग्रह किया। उसको बाँध कर पीठ पर लादा। इसके बाद लकड़हारोंके साथ वनमें घुसा। राहमें जब मुसलमान लकड़हारों को देख कर उन्हें मारने दौड़े, तब मैंने हट कर वृक्षकी ओटमें जा कर वेश बदला। इसके बाद मुसलमान बना कर यवनों की छावनी सर्वत्र घूमा।

पशु०—प्रशंसनीय काम किया। यवन सेना कितनी दिखायी दी ?

शान्त०—उस घने जंगल में जितने समा सकें, शायद पचीस हजार होंगे।

पशुपति भौंह सिकोड़ कर कुछ देर चुप रहे। इसके बाद उन्होंने कहा—"उनकी बातचीत क्या सुनाई दी ?"

शान्त०—बहुत कुछ सुना—किन्तु उसमें कुछ भी आप से कह न सका।

पशु०—क्यों ?

शान्त०—मैं मुसलमानी भाषा में पण्डित नहीं हूँ।

पशुपति हँसे—तब शान्तशील ने कहा—"मुहम्मदअली जो यहाँ आया था, उससे विपद की आशंका होती है।

पशुपति ने चौंक कर कहा—"क्यों ?"

शान्त०—वह छिप कर आ न सके। उनके आने का हाल कोई-कोई जान गया है।

पशुपति ने बहुत शङ्कित होकर कहा—"तुमने कैसे जाना ?"

शान्तशील ने कहा—"मैंने श्रीचरणदर्शन के लिए आने के समय देखा कि वृक्ष के पीछे एक आदमी छिपा हुआ है। वह युद्धकी सजावट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

में हैं। उसके साथ बात-चीत से मालूम हुआ कि वह मुहम्मदअली को इस पुरी में प्रवेश करते देख उसके लिए प्रतीक्षा कर रहा है। मैं अन्धकर में उसे पहचान न सका।"

पशु०—इसके बाद ?

शान्त०—इसके बाद यह सेवक उसे चित्रगृहमें कैद करके आया है।

पशुपत चौरोद्धरणिक (जासूस) की प्रसंशा करने लगे और कहा—"कल सबेरे उठ कर उस आदमी का प्रबन्ध किया जायगा। आज रात उसे कैद ही रहने दो। अब तुम्हें और एक कार्य करना पड़ेगा। यवन-सेनापति की इच्छा है कि आज रात को वह मगध-राजपुत्र के कटे सिर को देखें। उसे अभी संग्रह करो।"

शान्त—यह काम बिल्कुल सहज नहीं हैं। राजपुत्र चींटी-मच्छर नहीं हैं।

पशु०—मैं तुम्हें अकेले युद्ध में जाने को, नहीं कह रहा हूँ। कुछ आदमियों को लेकर तुम उसके मकान पर आक्रमण करो।

शान्त०—लोग क्या कहेंगे ?

पशु०—लोग कहेंगे कि डाकू उन्हे मार गये।

शान्त०—जो आज्ञा, मैं जाता हूँ।

पशुपति ने शान्तशील को पुरस्कार दे कर बिदा किया इसके बाद घरके भीतर, जहां विचित्र नक्काशी के काम के मन्दिर में अष्टभुजा मूर्ति स्थापित हैं, वहां जा कर उन्होंने प्रतिमाको साष्टांग प्रणाम किया। इसके बाद उठ कर हाथ जोड़ भक्ति-भाव से इष्ट देवीकी स्तुति कर कहा—"जननि ! विश्वपालिनी ! मैं अगाध सागर में कूदा हूँ—तुम देखना, मेरा उद्धार करना। मैं जननि-स्वरूपा जन्मभूमि को कभी देवद्वेषी यवनों के हाथ न बेचूँगा। केवल यह मेरी पापाभिसन्धि है कि अक्षम प्राचीन राजाके स्थान में मैं राजा बनूँगा। जैसे कांटे से कांटे को निकाल बाद को दोनों कांटे दूर फेंक दिये जाते हैं, वैसे ही यवनों की सहायता से राज्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लाभ कर राजसहायता से यवनों का निःपात करूँगा। इसमें क्या पाप है, माँ! यदि इससे पाप हो, तो यावज्जीवन प्रजा का अनुष्ठान कर उस पाप का प्रायश्चित करूँगा। जगत-प्रसविनी प्रसन्न हो, मेरी कामना सिद्ध करो!"

यह कह पशुपति ने फिर साष्टाङ्ग प्रणाम किया। प्रणाम करके उठे, शय्यागृह में जाने के लिए पलट कर देखा—अपूर्व दर्शन है! सामने दर्वाजे को छेंक कर जीवनमयी प्रतिमारूपिणी तरुणी खड़ी हुई है।

पशुपति पहले चौंके—कांप उठे। इसके बाद उछलते हुए समुद्र के पानी की तरह आनन्द से फूल उठे।

तरुणीने वीणानिन्दित स्वर में कहा—"पशुपति!"

पशुपति ने देखा कि मनोरमा है!

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मोहिनी

उस रत्न-प्रदीप से दीप्त देवीमन्दिरमें चाँदकी चाँदनी में विभासित दर्वाजे पर मनोरमा को खड़े देख पशुपतिका हृदय उछलते हुए समुद्रकी तरह स्फीत हो उठा। मनोरमा बिल्कुल नारी नहीं है, फिर भी वह बालिका जान पड़ती है; उसका कारण यह है कि उसके मुखकी कान्ति बहुत ही कोमल है, अनिर्वचनीय मधुर, बिल्कुल बालिका वयस में औदार्य विशिष्ट है, इसलिये हेमचन्द्र ने उसके १५ वर्ष की होने का जो अनुमान किया था, वह गलत नहीं। मनोरमा की उम्र यथार्थमें पन्द्रह वर्ष की है, सोलह या उससे अधिक उन्नीस है, यह इतिहास से लिखा नहीं। पाठक महाशय स्वयं सिद्ध करें।

मनोरमाकी उम्र चाहे कितनी ही क्यों न हो, उसकी रूपराशि अतुल है—आँखों में ठहरती नहीं। बाल्य, कैशोर, यौवन सब समय में वह रूपराशि दुर्लभ है। एक तो रङ्ग सुनहले चम्पे के समान, उस पर लाल सर्प की तरह उसके घुंघराले अलक मुँहके आस-पास लटके हुए हैं। इस समय वापी के जल से सिंच कर वह केश लिपट गये हैं। अर्द्धचन्द्राकृति निर्मल ललाट, भ्रमर के भार से हिलते हुए नील-पुष्प के समान कृष्णतारा-युक्त चंचल, लोचनयुगल, बार-बार सिकुड़ती और फैलती हुई पँखुड़ियाँ-युक्त नासिका का गठन सुन्दर है, अधर-ओष्ठ मानो सबेरे की ओस से सिक्त हैं, प्रातः सूर्यकी किरण में रत्न-कुसुमावली के स्तनयुगल समान थे, कपोल पर मानो चन्द्रकरोज्ज्वल बहुत ही स्थिर गङ्गाजल के विस्तार के समान

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रसन्न हैं; शावकी हिंसा से आशङ्कित उत्तेजित हँसनी की तरह उसकी गर्दन—वेणी बांधने पर भी उस गर्दन के ऊपर बिना बँधे घुंघराले बाल केलि कर रहे हैं। दोनों दन्तपंक्तियाँ यदि कुसुम की तरह कोमल होतीं, अथवा चम्पा यदि गठन होने योग्य काठिन्य पाता या चन्द्रकिरण यदि शरीर-विशिष्ट होता, तब उससे वह बाहुयुगल बनाई जा सकती है—वह हृदय केवल उसी हृदय से गढ़ा जा सकता था—यह सभी सुन्दरियों में है। मनोरमाकी रूपराशि अतुल है—केवल उसके सर्वाङ्गीण सौकुमार्य के कारण उसका चेहरा सुकुमार, अधर, भ्रूयुगल, ललाट सुकुमार, लाल कपोल तथा सुकुमार केश हैं। अलकावली बाल सर्पके समान हैं, वह भी सुकुमार भुजङ्ग-शिशु—गर्दन और गर्दन के घूमने में सौकुमार्य हैं। हृदय के उछ्वास से वह सौकुमार्य है। सुकुमार चरण, चरणविन्यास सुकुमार है। गमन सुकुमार, बसन्त-वायु संचालित है, कुसुमित लताके समान वचन सुचुमार, रात के समय जलराशि के पार से समागत विरह-संगीत के समान है; कटाक्ष सुकुमार, क्षणमात्र के लिये मेघमाला युक्त सुधांशु के किरण-विकिरण के समान; और जो यह मनोरमादेवी घरके दर्वाजे पर खड़ी हैं—पशुपति का मुख देखने के लिये कुछ मुँह उठाये, आँखों के तारे अर्द्धावस्थापन स्पन्दित और बावली के पानी से सिंचे हुए ऊपर की ओर उठते हुए स्पन्दित और वापी जलसे सिक्त केशराशि के कुछ अंशको एक हाथसे पकड़, एक पैर थोड़ा-सा आगे बढ़ाकर जिस भाव से मनोरमा खड़ी है, वह भाव भी सुकुमार है—नवीन सूर्योदयमें सद्यः प्रफुल्लदलमाला-मयी नलिनीके प्रसन्न क्रीड़ा के समान !....उस माधुर्यमय देहके ऊपर वेदी के पार्श्वस्थित रत्नदीपके आलोक से चमक उठा। पशुपति अतृप्त नयन से देखने लगे।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

८

मोहिता

पशुपति अतृप्त नयनों से देखने लगे। देखते-देखते उन्हें मनोरमा के सौन्दर्य-सागर में एक अपूर्व महिमा दिखाई दी। जैसे सूर्य तेज किरणों से हँसता हुआ पानी मेघ-संचार से धीरे-धीरे काले रंग को प्राप्त होता है, वैसे ही पशुपति ने देखते-देखते मनोरमाके सौकुमार्यमय मुखमण्डल गम्भीर होता देखा! अब वह बालिका सुलभ औदार्यव्यञ्जक भाव न रहा। अपूर्व तेजोभिव्यक्ति के साथ अधेड़ उम्रमें भी दुर्लभ गाम्भीर्य उस पर विराजने लगा। सरलतता को ढँक कर प्रतिभा उदित हुई। पशुपति ने कहा—"मनोरमा, इतनी रातको क्यों आई हो? आज तुम्हारा यह भाव क्यों?"

मनोरमाने उत्तर दिया–"तुमने मेरा कौन-सा भाव देखा?"

पशुपति०—तुम्हारी दो मूर्त्तियां हैं—एक मूर्ति आनन्दमयी, सरल बालिका की है—तुम उस मूर्ति में क्यों नहीं आईं?—उस रूप से मेरा हृदय शीतल होता है और तुम्हारी यह मूर्ति गम्भीर, तेजस्विनी, प्रतिभामयी, प्रखर बुद्धि-शालिनी है, इस मूर्त्ति को देखने से मैं डरता हूँ। तब समझ जाता हूँ कि तुम दृढ़-प्रतिज्ञा में आबद्ध हो। आज तुम इस मूर्त्ति से मुझे भय दिखाने क्यों आई हो?

मनो०—पशुपति, तुम इतनी रात को जाग कर क्या कर रहे हो?

पशु०—मैं राजकार्य में व्यस्त था—किन्तु तुम?

मनो०—फिर वही पशुपति? राजकार्य या अपने काम में?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पशु०—अपना काम ही कहो, राजकार्य हो या अपना काम हो, मैं कब नहीं व्यस्त रहता ? तुम आज ऐसा क्यों पूछती हो ?

पशु०—क्या सुना है ?

मनो०—यवन के साथ पशुपति की सलाह....शान्तिशील के साथ सलाह—मैंने दर्वाजे पर रहकर सब सुना है।

पशुपति के मुँह पर मानो अन्धकार छा गया। उन्होंने बहुत देर तक चिन्ता में डूबे रहने के बाद कहा—"अच्छा ही हुआ। मैं सब बातें तुमसे कहता—इतना ही हुआ कि तुमने अहले सुन लिया तुम कौन बात नहीं जानती ?"

मनो०—पशुपति, तुमने मेरा त्याग किया ?

पशु०—क्यों, मनोरमा! तुम्हारे ही लिये तो मैंने सब सलाह की है। मैं इस समय राजाका नोकर हूँ, अपनी इच्छाके अनुसार काम नहीं कर सकता। इस समय विधवा-विवाह करने से जन-समाज से परित्यक्त होऊँगा, किन्तु जब मैं स्वयं राजा होऊँगा, तब कौन मुझे त्याग करेगा ? जैसे बल्लालसेन ने कौलीन्यके लिये नई पद्धति प्रचलित की थी, वैसे ही मैं विधवा-विवाह की नई पद्धति चलाऊँगा।

मनोरमा ने दीर्घ निश्वास त्याग कर कहा—"पशुपति, यह सब मेरा स्वप्नमात्र है। तुम्हारे राजा होने से मेरा वह स्वप्न भङ्ग होगा। मैं कभी तुम्हारी रानी न बनूँगी।"

पशु०—क्यों मनोरमा ?

मनो०—क्यों ? तुम जब राज्य-भार ग्रहण करोगे, तब मुझसे प्रेम करोगे! राजा ही तुम्हारे हृदय में प्रधान स्थान पाएगा। तब मेरे प्रति तुम्हारा अनादर होगा। तुम जब प्रेम ही न करोगे, तब मैं क्यों तुम्हारी पत्नीत्व की श्रृंखला में बंधूँ।

पशु०—इस बातको तुमने मनमें स्थान क्यों दिया है। पहले तुम, पीछे राज्य होगा—मैं सदा ऐसे ही रहूँगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मनो०—राजा हो कर यदि ऐसा करो, राज्यको छोड़ कर यदि रानीसे अधिक प्रेम करोगे, तब तुम राज्य न कर सकोगे। तुम राजच्युत होगे। स्त्रैण राजाका राज्य नहीं रहता।

पशुपति प्रशंसमान दृष्टि से मनोरमा के मुँहकी ओर देखते रहे; उन्होंने कहा—"जिसके बायें ऐसी सरस्वती है, उसे आशङ्का क्या है। न सही, ऐसा ही हो। मैं तुम्हारे लिये राज्यका त्याग करूँगा।"

मनो०—तब राज्य क्यों ले रहे हो? त्यागके लिये ग्रहण का क्या फल!

पशु०—तुम्हारा पाणिग्रहण।

मनो०—यह आशा छोड़ दो, तुम राज्यलाभ करोगे, तो मैं कभी तुम्हारी पत्नी न बनूँगी।

पशु०—क्यों मनोरमा, मैंने क्या अपराध किया?

मनो०—तुम विश्वासघातक हो—मैं विश्वासघातक की भक्ति कैसे करूँ? किस तरह विश्वासघातक से प्रेम करूँ?

पशु०—क्यों, मैं विश्वासघातक कैसे हुआ?

मनो०—अपने प्रतिपालक प्रभु को राज्यच्युत करने की कल्पना कर रहे हो, शरणागत राजपुत्र को मारने की कल्पना कर रहे हो; क्या यह विश्वासघातक का काम नहीं है? जिसने पुत्र के आगे विश्वास नष्ट किया, वह स्त्री के प्रति अविश्वासी क्यों न होगा?

पशुपति चुप हो रहे। मनोरमा फिर कहने लगी—"पशुपति, मैं विनती करती हूँ, इस दुर्बुद्धि का त्याग करो।"

पशुपति पहले ही की तरह सिर झुकाये बैठे रहे, उनकी राज्याकांक्षा और मनोरमा को प्राप्त करने की आकांक्षा दोनों ही बड़ी थी। किन्तु राज्यलाभ का यत्न करने से मनोरमा का प्रणय खोना पड़ता है, वह भी अत्याज्य है। दोनों सङ्कटों से उनके चित्त में बड़ा चाञ्चल्य उत्पन्न हुआ। उनकी मतिकी स्थिरता दूर होने लगी। यदि मनोरमा को पाऊँ, तो भिक्षा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भी अच्छी हैं; राज्यसे क्या काम ! इस तरह बराबर मनमें इच्छा होने लगी । किन्तु इसीके बाद फिर सोचने लगे--"किन्तु ऐसा होने से लोक-निन्दा होगी, जनसमाज में कलङ्क होगा, जातिनष्ट, होगी; सबके आगे घृणित हो जाऊँगा, तब इसे कैसे सहूँगा।" पशुपति चुप रहे, कोई जवाब दे न सके।

कोई जवाब न पा कर मनोरमा कहने लगी—"सुनो पशुपति, तुमने मेरी बातका जवाब नहीं दिया। मैं चली। किन्तु यह प्रतिज्ञा करती हूँ, कि विश्वासघातक के साथ इस जन्म में मेरी मुलाकात न होगी।"

यह कहकर मनोरमा पीछे पलटी। पशुपति रो उठे।

उसी समय मनोरमा फिर लौटी। उसने आकर पशुपति का हाथ पकड़ लिया। पशुपतिने उसके मुंहकी ओर देखा। उन्होंने देखा कि तेजोगर्वविशिष्टा, सिकुड़ी भौंहों से तिरछे देखनेवाली सरस्वती मूर्ति अब नहीं है; वह प्रतिभा देवी अन्तर्द्धान हो चुकी हैं; कुसुम-सुकुमारी बालिका उनका हाथ पकड़ उनके साथ रो रही है।

मनोरमा ने कहा—"पशुपति, रोते क्यों हो ?"

पशुपतिने आँखों के आँसू पोंछ कर कहा—"तुम्हारी बात पर !"

मनो०—क्यों, मैंने क्या कहा।

पशु०—तुम मुझे त्याग कर जा रही थीं।

मनो०—अब मैं ऐसा न करूँगी।

पशु०—तुम मेरी राजमहिषी होगी।

मनो०—होऊँगी।

पशुपति का आनन्द-सागर उछल पड़ा। दोनों आँखों में आँसू भरे, दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हुए बैठे रहे। एकाएक मनोरमा यक्षिणी की तरह उठ कर चली गई।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२०

फन्दा

पहले ही कहा गया है, कि सरोवर के किनारे से हेमचन्द्र मनोरमा के साथ चल यवन की खोज कर रहे थे। मनोरमा ने धर्माधिकार के घरसे कुछ दूर ठहर कर हेमचन्द्र से कहा—"सामने यह महल देख रहे।"

हेम०—देखता हूँ।

मनो०—वहीं यवन गया है।

हेम०—क्यों।

इस प्रश्न का उत्तर न दे मनोरमाने कहा—"तुम यहाँ ही वृक्ष की ओट में रहो। यवन को इसी राह से जाना पड़ेगा।"

हेम०—तुम कहाँ जाओगी।

मनो०—मैं भी इसी घर में जाऊँगी।

हेमचन्द्र ने स्वीकार किया। वह मनोरमा का आचरण देख कुछ विस्मित हुए। उसकी सलाह के अनुसार पास के एक बृक्ष की ओट में छिप रहे। मनोरमा ने गुप्तराह से चुपचाप महल में प्रवेश किया।

उसी समय शान्तशील पशुपति के घर जा रहा था। उसने देखा, कि एक आदमी वृक्षकी ओट में छिपा है। शान्तशील सन्देहवश उस वृक्षके नीचे गया। वहाँ हेमचन्द्र को देख पहले उसने चोर समझ कर कहा—"तुम कौन हो। यहाँ क्या कर रहे हो।" इसके बाद ही उसने हेमचन्द्र का बहुमूल्य अलङ्कारों से सुशोभित योद्धावेश देख कर कहा—"आप कौन हैं?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेम०—मैं चाहे कोई क्यों न होऊँ।

शान्त०—आप यहाँ क्या करते हैं?

हेम०—मैं यहाँ यवन को खोज रहा हूँ।

शान्तशील ने चौंक कर पूछा–"यवन कहाँ है?"

हेम०—इसी घर में गया है।

शान्तशील ने डरे हुए व्यक्ति की तरह कहा—इस घर में क्यों?

हेम०—यह मैं नहीं जानता।

शान्त०—यह घर किस का है?

हेम०—यह मैं नहीं जानता।

शान्त०—तब आपने कैसे जाना कि इस घर में यवन ने प्रवेश किया है?

हेम०—यह सुन कर तुम क्या करोगे?

शान्त०—यह घर मेरा है। यदि यवन ने इसमें प्रवेश किया है, तो इसमें सन्देह नहीं कि वह किसी अनिष्ट की कामना से ही गया है। आप योद्धा और यवन के शत्रु जान पड़ते हैं। यदि हो, तो मेरे साथ चलिये—दोनों ही मिल कर चोर पकड़ेंगे।

हेमचन्द्र राजी हो शान्तशील के साथ चले। शान्तनील ने सिंहद्वार की राह से पशुपति के घर में हेमचन्द्र के साथ प्रवेश किया और एक कोठरी में जा कर कहा–"इसी घरमें मेरा सुवर्ण-रत्नादि सब कुछ है, आप इसके पहरे पर रहिये। मैं अभी पता ले कर आता हूँ कि यवन कहाँ छिपा है।"

यह कह कर शान्तशील उस कोठरी से निकला और हेमचन्द्र के जवाब देते-देते उसने बाहर से कोठरी का दर्वाजा बन्द कर दिया। हेमचन्म फन्दे में फँस कैद हो गये।

–:०:–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२२

मुक्त

मनोरमा पशुपति से विदा हो कर तेजी के साथ उस चित्रगृह में आई। पशुपति और शान्तशील की बात-चीत में उसने सुना था कि उस घर में हेमचन्द्र कैद हैं। आते ही उसने चित्रगृह का दर्वाजा खोल दिया। हेमचन्द्र से कहा—"हेमचन्द्र, कोठरी से बाहर निकल आओ।"

हेमचन्द्र कोठरी से बाहर आये। मनोरमा भी उन्हीं के साथ-साथ आई। अत हेमचन्द्र ने मनोरमा से पूछा—"मैं कैद क्यों हुआ था ?"

मनो०—यह पीछे कहूँगी।

हेम०—जिस आदमी ने मुझे बन्द किया था, वह कौन है ?

मनो०—शान्तशील।

हेम०—शान्तिशील कौन ?

मनो०—चौरोद्धरणिक।

हेम०—क्या यह उसी का मकान है ?

मनो०—नहीं।

हेम०—यह मकान किसका है ?

मनो०—बाद को कहूँगी।

हेम०—यवन कहाँ गया ?

मनो०—छावनी में गया।

हेम०—छावनी ! कितने यवन आये हैं ?

मनो०—पचीस हजार।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेम०—उसकी छावनी कहाँ है ?

मनो०—महावन में ।

हेम०—महावन कहाँ है ?

मनो०—इस नगर से उत्तर, कुछ दूर ।

हेमचन्द्र सिर पर हाथ रख कुछ सोचने लगे ।

मनोरमा ने कहा—"सोचते क्या हो ? तुम उन लोगों के साथ युद्ध करोगे ?"

हेम०—पचीस हजार के साथ अकेले का युद्ध सम्भव है ?

मनो०—तब क्या करोगे—घर लौट चलोगे ?

हेम०—अभी घर न जाऊँगा ।

मनो०—कहाँ जाओगे ?

हेम०—महावन में ।

मनो०—जब युद्ध ही न करोगे, तब महावन क्यों जाओगे ?

हेम०—यवनों को देखने ।

मनो०—युद्ध न करोगे, तब देखने से क्या होगा ?

हेम०—देख कर यह समझ सकूँगा कि किस उपाय से उन सबको मार सकूँगा ।

मनोरमा चौंक पड़ी। उसने कहा—"पच्चीस हजार आदमी मारोगे ? कैसे सर्वनाश है, छिः !"

हेम०—मनोरमा, तुमने यह सब समाचार कहाँ पाया ?

मनो०—और भी समाचार हैं । आज तुम्हें मारने के लिये तुम्हारे घर में डाकू आयेंगे । आज घर न जाना ।

यह कह मनोरमा एक साँस में भागी ।

-:o:-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

१२

अतिथि-सत्कार

● ● ●

हेमचन्द्र घर लौट एक सुन्दर घोड़ा कस कर उस पर सवार हुए और चाबुक लगा कर महावन की ओर चले। नगर पार हुए, इसके बाद मैदान का भी कुछ हिस्सा पार किया, इसो समय एकाएक उनके दाहिने कन्धेपर कुछ दर्द जान पड़ा। देखा कि कन्धे में एक तीर लगा है। पीछे घोड़ों के टाप की आवाज सुनाई दी। पलट कर देखा कि तीन सवार आ रहे हैं।

हेमचन्द्र घोड़े का मुँह फेर उनकी राह देखने लगे। पलट कर देखा कि हरेक सवार ने उनको लक्ष्य कर एक-एक तीर चढ़ाया। हेमचन्द्र ने विचित्र शिक्षा-कौशल से हाथ का भाला उठा कर तीनों तीरों की चोट को एक ही वार में विफल कर दिया।

सवारों ने फिर एक साथ तीर चढ़ाये और उनके नष्ट हो जाते-जाते फिर चलाये।

इस तरह वह लगातार हेमचन्द्र पर तीर चलाने लगे। तब हेमचन्द्र ने विचित्र रत्नादि-मण्डित चर्म को हाथ में लिया और उसे चलाते हुए देखते-देखते उस शरजाल की वर्षा को दूर किया, शायद दो-एक तीर घोड़े को लगे। वह स्वयं अक्षत रहे।

विस्मय में तीनों सवार चुप हो रहे। आपस में सलाह करने लगे। इसी अवसर में हेमचन्द्र ने एक पर एक तीर चलाया। निशाना अचूक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

था। तीर एक सवार के ललाट में घुस गया। वह उसी समय घोड़े की पीठ से जमीन पर गिर गया।

उसी समय अन्य दोनों घोड़े को चाबुक लगा और अपने-अपने भाले को तान कर हेमचन्द्र पर दौड़े और भाला चलाने लायक स्थान पर पहुँच भाला चलाया। यदि वह सब हेमचन्द्र को लक्ष्य कर भाला चलाते, तो हेमचन्द्र की विचित्र शिक्षा से उससे बचने की सम्भावना थी। किन्तु ऐसा न कर आक्रमणकारियों ने हेमचन्द्र के घोड़े को लक्ष्य कर भाला चलाया था। उतनी दूर नीचे की ओर हाथ चलाने में हेमचन्द्र को विलम्ब हुआ। एकका भाला तो खाली गया, पर दूसरेका खाली न गया। भाला घोड़े की गर्दन के नीचे लगा। उस चोट को खा कर वह रमणीय घोड़ा बेदम हो जमीन पर गिर पड़ा।

सुरक्षित की तरह हेमचन्द्र गिरते हुए घोड़े से उछल कर जमीन में खड़े हो गये। उन्होंने पलक झपकते अपने हाथ का कराल भाला उठा कर कहा—"मेरे पिता का दिया हुआ शूल शत्रु का खून पिये बिना कभी नहीं लौटता।" उनकी यह बात समाप्त होते-होते उससे छिद कर दूसरा सवार जमीन में गिर गया।

यह देख तीसरा सवार घोड़े का मुँह फेर तेजी के साथ भागा। वही शान्तशील था।

तब हेमचन्द्र ने मौका पा कर अपने कन्धे का तीर निकाला। तीर कुछ अधिक मांस में धँस गया था—निकालते ही खून की धारा बहने लगी। हेमचन्द्र अपने कपड़े से उसे बन्द करने की चेष्टा करने लगे। किन्तु वह निष्फल हुआ। खून बहने के कारण हेमचन्द्र धीरे-धीरे कमजोर होने लगे। तब वह समझ गये कि यवनों की छावनी में अब जाने की कोई सम्भावना नहीं। घोड़ा मारा गया—अपना बल भी जा रहा है। अतएव खिन्न मन से धीरे-धीरे लौटने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हेमचन्द्र ने मैदान पार किया। तब तक शरीर बहुत शिथिल होने लगा—खून के बहाव में सर्वांग भीग गया। चलने की शक्ति घटने लगी। कष्ट से उन्होंने नगर में प्रवेश किया। अब चला नहीं जा रहा था। एक कुटी के पास वट वृक्ष के नीचे बैठ गये। तब सवेरा हो रहा था। रात के जागने, सारी रात परिश्रम करने, खून के बहाव से कमजोर होने—इन सब कारणों से हेमचन्द्र की आँखों में पृथ्वी चकराने लगी। उन्होंने वृक्ष में पीठ टेक दी। आँखें मुँद गईं। बेहोशी तेज हुई, होश जाता रहा। उन्होंने तन्द्रा के आवेश में स्वप्नकी-सी स्थिति में सुना, कोई गा रहा है—

"कण्टके गठिलो विधि मृणाल अधमें !"

—: o :—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तृतीय खण्ड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

२

वह तुम्हारे कौन हैं ?

● ●·◎

जिस कुटी के पास, वृक्ष के नीचे बैठ हेमचन्द्र विश्राम कर रहे थे, उस कुटा में एक रंगरेज रहता था। कुटी में तीन कोठरियाँ हैं। एक कोठरी में उसका रसोई-पानी था। दूसरे घर में उस की स्त्री बाल-बच्चों को लेकर सोई थी। तीसरी कोठरी में रंगरेज की युवती कन्या रत्नमयी और अन्य दो स्त्रियाँ सोई हुई थीं। वह दो स्त्रियाँ पाठक महाशय की परिचिता ही हैं---मृणालिनी और गिरिजाया! नवद्वीपमें और कहीं आश्रय न पा कर उनने यहाँ आश्रय लिया है।

एक के बाद एक तीनों स्त्रियाँ सबेरे जागीं। पहले रत्नमयी जागी। उसने गिरिजाया को सम्बोधन कर कहा—"सखी!"

गिरि०—क्या सखी?

रत्न०—तुम कहाँ हो सखी?

गिरि०—बिछौने पर।

रत्न०—उठो न सखी।

गिरि०—नहीं सखी।

रत्न०—शरीर पर पानी छिड़क दूँ?

गिरि०—पानी सखी!

रत्न०—नहीं तो क्या छोड़ दूँ?

गिरि०—छोड़ोगी क्यों सखी? तुम मेरे प्राण की सखी हो। तुम्हारे समान कोई है? तुम पारघाट की रसमयी हो—तुम्हें न कहूँ, तो और किसको कहूँ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

रत्न०—बातों में तो सखी तुम सदा विजयी हो, मैं तुम्हारे आगे बेवकूफ बन जाती हूँ, मेल मिला नहीं सकती।

गिरि०—और भी मेल चाहिये।

रत्न०—तुम्हारे मुँह पर कालिख, अब मेलका काम नहीं, मैं अपने काम पर जाती हूँ।

यह कह रत्नमयी घर के काम में लगी। मृणालिनी अब तक कुछ न बोली। अब गिरजाया ने उसका सम्बोधन कर कहा—"जागी हो?"

मृणा०—"जागती ही तो हूँ, जागती ही रहती हूँ।"

गिरा०—क्या सोच रही थी?

मृणा०—जो सोचती हूँ।

तब गिरिजाया ने गम्भीर भाव से कहा—"क्या करूँ? मेरा दोष नहीं। मैंने सुना है, कि वह इसी नगर में हैं, अब तक उनका पता नहीं पाया। किन्तु हम लोग तो अभी दो-तीन दिन हुए आई हैं। शीघ्र ही पता लगा लूँगी।"

मृणा०—गिरिजाया, यदि इस नगर में पता न लगा, तो मृत्यु पर्यन्त इस पाटनी के घर रहना पड़ेगा। मेरे जाने को और कोई जगह नहीं।

मृणालिनी ने ओढ़नी में मुंह छिपा लिया। गिरिजाया के गालों पर भी चुपचाप आंसू बह चले।

इसी समय रत्नमयी ने घबराहट के साथ घर में आ कर कहा—"सखी, सखी! जरा देख लो। हमारे बरगद के नीचे कौन सोता है। विचित्र पुरुष हैं।"

गिरिजाया कुटी के द्वार पर देखने आई। मृणालिनि ने भी कुटी के दर्वाजे तक आकर देखा। दोनों देखते ही पहचान गईं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सागर एक बारगी उछल पड़ा। मृणालिनी ने गिरिजाया का आलिङ्गन किया। गिरिजाया ने गाया—

"कण्टके गठिलो विधि मृणाल अधमे।"

इस ध्वनि ने स्वप्न की तरह हेमचन्द्र के कान में प्रवेश किया। मृणालिनी ने गिरिजाया के गले की खुजली देख कर कहा—"चुप, राक्षसी! हम लोगों में देखी-देखा न होगी, यह लो! वह जाग गये। इसी ओर से देखो कि वह क्या करते हैं। वह जहाँ जायें, अदृश्य भाव से दूर रह कर उनके साथ जाओ। यह क्या ? उनके शरीर पर इतना खून क्यों दिखाई दे रहा है। तब चलो, मैं भी साथ चलूँगी।"

हेमचन्द्र की नींद खुल गई थी। प्रातःकाल हुआ देख वह भाला टेक कर उठ खड़े हुए और धीरे-धीरे घर की ओर चले।

हेमचन्द्र के कुछ दूर जाने पर मृणालिनी और गिरिजाया उनके साथ लगने को घर से निकली तब रत्नमयी ने पूछा—"यह तुम्हारे कौन हैं?"

मृणालिनी ने कहा—"भगवान् जानें!"

—:o:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२

प्रतिज्ञा—पर्वतो वह्निमान

विश्राम करने से हेमचन्द्र कुछ सबल हो गये थे, खून का बहाव भी कुछ कम हो गया था। भाला टेकते हुए हेमचन्द्र आराम से घर लौटे।

उन्होंने घर आकर देखा, कि मनोरमा दर्वाजे पर खड़ी है।

मृणालिनी और गिरिजाया ने ओट में रह कर मनोरमा को देखा।

मनोरमा चित्रलिखी पुतली की तरह खड़ी थी। उसे देख कर मृणालिनी ने मन-ही-मन सोचा—"मेरे राजपुत्र यदि रूप के वशीभूत हुए हों, तब मेरी सुख की रातका सवेरा हुआ है।" गिरिजाया ने सोचा—"राजपुत्र यदि रूप पर मुग्ध हों, तो मेरी मालकिन का भाग्य फूटा।"

हेमचन्द्र ने मनोरमा के पास आकर कहा—"मनोरमा—इस तरह क्यों खड़ी हो?"

मनोरमा ने कोई जवाब नहीं दिया। हेमचन्द्र ने फिर बुलाया—"मनोरमा!"

फिर भी कोई जवाब नहीं। हेमचन्द्र ने देखा कि उस की आँखें आकाश की ओर उसकी दृष्टि लगी हुई है।

हेमचन्द्र ने फिर कहा—"क्या हुआ, मनोरमा!"

तब मनोरमा ने धीरे-धीरे आकाश से आँखें फेर कर हेमचन्द्र के मुख की ओर देखा और कुछ देरतक एकटक देखती रही, बादको उसकी निगाह हेमचन्द्र के खून से लतपथ कपड़ों पर पड़ी। तब मनोरमा ने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विस्मित हो कर कहा—"यह क्या हेमचन्द्र ! यह खून कैसा ? तुम्हारा मुँह सूखा हुआ है; क्या तुम घायल हो गये हो?"

हेमचन्द्र ने उंगली से कन्धे का घाव दिखाया।

तब मनोरमा हेमचन्द्र का हाथ पकड़ घर में पलंग के ऊपर ले गई और पलक झपकते पानी से भरा गंगाल ला कर हेमचन्द्र के शरीर के कपड़े उतरवा, शरीरके खून को धो डाला फिर गौओं का प्रलोभन हरी-हरी दूवें भूमि से उखाड़ कर उसने अपने कुन्दनिन्दित दांतों से चबाया। इसके बाद उसने उसे घाव के मुँह पर रख जनेऊ की तरह कपड़े से बांध दिया। तब उसने कहा—"हेमचन्द्र ! और क्या करूँ ? तुम सारी रात जागे हो, सोओगे ?"

हेमचन्द्रने कहा—"निद्रा के अभाव से बहुत कातर हो रहा हूँ।"

मृणालिनीने मनोरमाका सेवा-कार्य देख चिन्तित हृदय हो गिरिजाया से कहा—"यह क्या है, गिरिजाया ?"

गिरि०—नाम तो सुना, मनोरमा है।

मृणा—यह क्या हेमचन्द्र की मनोरमा है ?

गिरि०—तुम क्या समझती हो ?

मृणालिनी०—मैं सोचती हूँ, मनोरमा ही भाग्यवती है। मैं हेमचन्द्र की सेवा कर न सकी, उसने किया। जिस काम के लिये मेरा हृदय जल रहा था—उस काम को मनोरमा ने सम्पूर्ण किया। देवता लोग उसे आयुष्यती करें। गिरिजाया मैं घर चली, मेरा रहना अब उचित नहीं। तुम इसी मुहल्ले में रहती हो, समाचार ले आना कि हेमचन्द्र कैसे हैं। मनोरमा चाहे जो हो, हेमचन्द्र मेरे ही हैं।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

३

हेतु धूमात्

मनोरमा और हेमचन्द्र के घर में प्रवेश करने पर मृणालिनी को विदा कर गिरिजाया उपवनगृह की प्रदक्षिणा करने लगी। उसने जहाँ-जहाँ खिड़की देखी, वहाँ-वहाँ सावधानी के साथ मुँह ऊँचा कर घरके भीतर देखा। एक कोठरी में उसने हेमचन्द्र को सोई हुई हालत में देखा। देखा कि उनकी शय्यापर मनोरमा बैठी है। गिरिजाया उसी खिड़की के नीचे बैठ गई। पहली रात उसी खिडकी में हेमचन्द्र को यह न दिखायी दिया था।

गिरिजाया के खिड़की के नीचे बैठने का यह कारण है कि हेमचन्द्र और मनोरमा में कैसी बात-चीत होती है, उसे अलग बैठ कर सुने। किन्तु हेमचन्द्र नींद में सोये थे, कोई बातचीत तो होती नहीं। अकेली चुपचाप उस खिड़की के नीचे बैठने से गिरिजाया को बहुत ही कष्ट हुआ। बात बोलने नहीं पाती, हँसने नहीं पाती, व्यंग्य करने नहीं पाती, बड़ा ही कष्ट है–स्त्री की जीभ में खुजली होने लगी। वह मन-ही-मन सोचने लगी–वह पापी दिग्विजय ही कहाँ है ? उसे पाने से भी मुँह खोलती। किन्तु दिग्विजय घर में चुपके काममें व्यस्त था––किसी से भी मुलाकात न हुई। तब दूसरे पात्र के अभाव से गिरिजाया आप ही अपने मनसे बातें करने लगी। यदि उन बातों को सुनने के लिए पाठक महाशय को कौतूहल हो, तो उसे हम प्रश्नोत्तर के रूप में प्रकट कर सकते हैं। गिरिजाया ही प्रश्न करनेवाली और गिरिजिया ही उत्तर देनेवाली है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रश्न०—अरो, तू कौन बैठी है ?

उत्तर०—मैं गिरिजाया हूँ ।

प्रश्न०—यहां क्यों ?

उत्तर०—मृणालिनी के लिये ।

प्रश्न०—मृणालिनी तेरी कौन है ?

उत्तर०—कोई नहीं ।

प्रश्न०—तब उसके लिए मुझे इतना सिर दर्द क्यों ?

उत्तर०—मेरा और काम ही क्या है, घूम-फिर कर क्या करूँगो ?

प्रश्न०—मृणालिनी के लिये यहाँ क्यों ?

उत्तर०—यहाँ और एक सिकड़ी कटी चिड़िया है ।

प्रश्न०—क्या चिड़िया को पकड़ ले जायगी ?

उत्तर०—यदि सिकड़ी कटी होगी, तो पकड़ के क्या करूँगी ? पकड़ूँगी ही कैसे ?

प्रश्न०—तब बैठी क्यों है ?

उत्तर०—यह देखने को सिकड़ी कटी है या नहीं ।

प्रश्न०—कटी है या नहीं, यह जान कर क्या करोगी ?

उत्तर०—चिड़िया के लिये मृणालिनी हर रातको छिप-छिप कर रोती है—राधाकृष्ण नाम सुना हो, तो फिर जंगल से चिड़िया घर ले आओ । पढ़े हुए पक्षी की आशा छोड़ो । पिंजरा खाली न रखो ।

प्रश्न०—मर भिखारिणी की लड़की ; तूने अपने मन जैसी बात कही । यदि मृणालिनी चिढ़कर पिंजरा तोड़ डाले ?

उत्तर०—ठीक कहती है सखी ! ऐसा वह कर सकती है, उससे न कहो ।

प्रश्न०—तब यहाँ बैठकर धूप में मरती क्यों है ?

उत्तर०—माथा बहुत दुख रहा है । यह जो लड़की घरके भीतर बैठी है—वह बेवकूफ है—नहीं तो अब तक बोलती क्यों नहीं ? औरतों का मुँह कभी बन्द हुआ है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कुछ देर बाद गिरिजाया की मनोकामना पूर्ण हुई। हेमचन्द्र की नींद खुली। तब मनोरमा ने उनसे पूछा—"क्यों, तुम्हारी नींद हो गई?"

हेम०—खूब अच्छी नींद आई।

मनो०—अब बताओ कि तुम्हें कैसे चोट लगी?

तब हेमचन्द्रने रातकी घटनाको संक्षेपमें कह सुनाया। सुनकर मनोरमा पछताने लगी।

हेमचन्द्र ने कहा—"तुम्हारा प्रश्न समाप्त हुआ। अब मेरी बात का जवाब दो। कल रातको मेरा साथ छोड़ कर जानेपर जो कुछ हुआ, वह सब कहो।"

मनोरमा ने धीरे-धीरे अस्फुट स्वर में कहा। उसे गिरिजाया सुन न सकी। समझी कि चुपचाप कुछ बातचीत हुई।

और कोई बात न सुन सकने के कारण गिरिजाया उठी; तब फिर प्रश्नोत्तर की माला मन-ही-मन फेरने लगी।

प्रश्न०—क्या समझी?

उत्तर०—सिर्फ कुछ लक्षण।

प्रश्न०—कैसे लक्षण?

गिरिजाया उँगली पर गिनने लगी—एक—लड़की-आश्चर्य सुन्दरी है, आग के आगे घी क्या गाढ़ा रह सकता है? दो—मनोरमा हेमचन्द्र से प्रेम करती है, नहीं तो इतना आदर क्यों करती? तीन—एकांत निवास! चार—एक साथ रातको घूमना। पाँच—चुपके-चुपके बातें करना।

प्रश्न०—क्या मनोरमा हेमचन्द्र से प्रेम करती है?

उत्तर०—बिना हवा के कहीं पानी में लहर उठती है? यदि कोई मुझसे प्रेम करे, तो इसमें सन्देह नहीं कि मैं भी उनसे प्रेम करूँगी।

प्रश्न०—किन्तु मृणालिनी भी तो हेमचन्द्र से प्रेम करती है। तब हेमचन्द्र मृणालिनी से प्रेम करेंगे ही।

उत्तर०—सही है। किन्तु मृणालिनी अनुपस्थित और मनोरमा उपस्थित है।

यही सोचती गिरिजाया धीरे-धीरे मकान के दर्वाजे पर आ खड़ी हुई। वहाँ उसने एक गीत गा कर कहा—"भिक्षा दो।"

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

४

उपनयन—वह्नि व्याप्यो धूमवान्

● ● ●

गिरिजाया ने गीत गाया—

"काहे सखी जीयत मरत कि विधान ?
वृज किशोर सखी काँहा गेलो भागई,
व्रजजन टुटायलो 'पराण' ।

संगीत की ध्वनि हेमचन्द्रके कान में पहुँची । स्वप्नमें सुने शब्द के समान उसने कानमें प्रवेश किया ।

गिरिजाया ने फिर गाया—

'ब्रजकि किशोर सई, काहाँ गेलो भागई,
व्रजबंधु टुटाइलो पराण ।"

हेमचन्द्र ध्यान देकर सुनने लगे ।

गिरिजाया ने फिर गाया—

"मिली गेई नागरी, भूलि गेई माधव,
रूपविहीन गोप कुमारी ।
को जाने पिय सई, रसमय प्रेमिका,
हेन बँधु रूप कि भिखारो ।"

हेमचन्द्र ने कहा—"यह क्या ? मनोरमा, यह तो गिरिजाया का स्वर है । मैं चला !" यह कह उछल कर हेमचन्द्र शय्या से उतरे ।

"आगे नाहि बुझनूं, रूप देखि भूलनू,
हृदि बैनु चरण-युगल !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

यमुना सलिल सई, अल तनु डाड़व,
आनो सखि भखिबो गरल ।"

हेमचन्द्र गिरिजाया के सामने पहुँचे । उन्होंने घबराहट के साथ कहा—"गिरिजाया ! यह कौन है गिरिजाया ? तुम यहाँ कहाँ ? तुम यहाँ क्यों आयी ? तुम इस देश में कब आईं ?"

गिरिजाया ने कहा—"मैं यहां अनेक दिन से आई हूँ ।" यह कह फिर गाने लगी—

"किवा कानन-वल्लरी, गल बेड़ि बाँधई,
नबीन तमाले दिबो फाँस ।"

हेमचन्द्र ने कहा—"तुम इस देश में क्यों आई ?"

गिरिजाया ने कहा—"भिक्षा मेरी उपजीविका है । राजधानी में अधिक भिक्षा मिलने के खयाल से आई हूँ ।"

"किवा कानन वल्लरी, गलो बेड़ि बाँधई,
नवीग तमाले दिबो फाँस ।"

हेमचन्द्रने गीतकी ओर ध्यान न दे कर कहा—"मृणालिनी कैसी है, देख के आई हो ?

गिरिजाया गाने लगी—

"नहे—श्याम श्याम श्याम श्याम, श्याम नाम जपयि,
छार तनु करबो विनाश ।"

हेमचन्द्र ने कहा—"अपना गाना रहने दो । मेरी बातों का जवाब दो । मृणालिनी कैसे है, तुम देखके आई हो ?"

गिरिजाया ने कहा—"मृणालिनी को मैं देख कर नहीं आई, यह गाना आपको अच्छा नहीं लगता, दूसरा गाना गाती हूँ—

"ए जनमेर संगे कि सई जनमेर साथ कुराइबे ।
किवा जन्म-जन्मान्तरे, ए साथ मोर चुराइबे ।।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेमचन्द्र ने कहा--"गिरिजाया, तुम्हारी विनती करता हूँ, गाना छोड़ो, मृणालिनी का समाचार कहो।"

गिरि०--क्या कहूँ ?

हेम०--मृणालिनी मुझे देख कर भी क्यों नहीं आई ?

गिरि०—वह गौड़ नगर में नहीं है।

हेम०—क्यों ? कहाँ गई ?

गिरि०—मथुरा।

हेम०—मथुरा ! मथुरा किसके साथ गई ? कैसे गई....क्यों गई ?

गिरि०—उनके पिता किसी प्रकार पता पा कर, आदमी भेज कर ले गये। शायद उनका विवाह होने वाला है। विवाह करने के लिए ही ले गये हैं।

हेम०—क्या....क्या करने ?

गिरि०—मृणालिनी का विवाह करने को उनके पिता उन्हें ले गये।

हेमचन्द्र ने मुँह फेर लिया। गिरिजाया उनका मुँह देख न सकी, हेमचन्द्र के कन्धे से घाव का मुँह खुलने की वजह जो खून बह रहा था, उसे भी वह देख न सकी। उसने पहले की तरह गाया—

"विधि तारे साधि शुनो, जन्म यदि दिबे पुन,
आमारे आकार येन, रमणी-जनम दिबे।
लाज भय तेयागिबो, ए साध मोर छुटाइबो,
सागर छेंचे रतन निबो, कण्ठे राखबो निशि-दिबे।"

हेमचन्द्र ने मुँह फेरा। कहा—"गिरिजाया, तुम्हारा समाचार शुभ है। अच्छा ही हुआ है।"

यह कह हेमचन्द्र फिर घर में चले गये। गिरिजाया के सिर पर आकाश टूट पड़ा। गिरिजाया समझी थी कि झूठ ही मृणालिनी के विवाह की बात कह कर वह हेमचन्द्र की परीक्षा लेगी। समझी थी कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

झूठ ही मृणालिनी के विवाह की बात कह कर वह हेमचन्द्र की परीक्षा लेगी। समझी थी कि मृणालिनी का विवाह होनेवाला है सुनकर हेमचन्द्र बहुत कातर होंगे, बहुत चिढ़ेंगे। कहाँ, यह सब तो कुछ भी नहीं हुआ। तब गिरिजायाने सिर ठोंक कर सोचा—"हाय, मैंने क्या किया ? क्यों नाहक यह झूठी रट लगाई। देखती हूँ कि हेमचन्द्र तो सुखी हुए—कह गये कि समाचार शुभ है। अब मालकिन की क्या दशा होगी ?" हेमचन्द्र ने क्यों गिरिजाया से कहा कि तुम्हारा समाचार शुभ है; उसे गिरिजाया भिखारिणी तो ठहरी—क्या समझे ? जिस क्रोध से हेमचन्द्र ने इसी मृणालिनी ने लिये गुरुदेव के प्रति शर-सन्धान करने को उद्यत हुए थे, वही दुर्जय क्रोध उनके हृदय में उभारा था। अभिमान की अधिकता और दुर्गम क्रोध के वेग से हेमचन्द्र ने गिरिजाया से कहा—"तुम्हारा समाचार शुभ है।"

गिरिजाया इसे समझ न सकी। उसने मन में सोचा कि यह छठवाँ लक्षण है। किसी ने उसे भिक्षा नहीं दी, उसने भी आसरा न देखा। "सिकड़ी कट गई !" निश्चय करती हुई घर की ओर चली।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

५

और एक समाचार

उसी दिन माधवाचार्य का पर्यटन समाप्त हुआ। वह नवद्वीप में पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने प्रिय शिष्य हेमचन्द्र को दर्शन दे चरितार्थ किया। आशीर्वाद दिया, आलिंगन किया और कुशल आदि पूछनेके बाद एकान्तमें दोनों उद्देश्य-साधन के बारे में बात-चीत करने लगे।

अपने भ्रमण का वृत्तान्त विस्तार के साथ कह कर माधवाचार्य ने कहा—"इतनी मेहनत कर कुछ कृतकार्य हुआ हूँ। इस देश के अधीन राजाओं में अनेकों ने रणक्षेत्र में ससैन्य सेन राजा की सहायता स्वीकार की है। शीघ्र ही सब आ कर नवद्वीप में इकट्ठे होंगे।"

हेमचन्द्र ने कहा—"वह लोग आज ही यहाँ न पहुँचेंगे, तो सब विफल हो जायगा। यवन-सेना आ गई है, महावन में ठहरी है। आजकल में नगर पर आक्रमण करेगी।"

माधवाचार्य यह सुन कर काँप उठे। उन्होंने कहा—"गौड़ेश्वर की ओर से क्या तैयारी हुई है?"

हेम०—कुछ नहीं। शायद राजा तक इस समाचार का प्रचार ही नहीं हुआ। मैंने दैवात् कल यह समाचार पाया है।

माध०—इस बारे में तुमने राजा के सामने यह परामर्श क्यों न रखा?

हेम०—समाचार पाने के बाद ही राह में डाकुओं द्वारा घायल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हो मैं सड़क पर पड़ा था, अभी घर लौट कर कुछ विश्रम कर रहा हूँ। कमजोरी के कारण राजा के पास जा न सका। अब जाता हूँ।

माघ०—"तुम अभी विश्राम करो। मैं राजा के पास जाता हूँ। पीछे जो होगा, तुम्हें समाचार दूँगा।" यह कह माधवाचार्य उठ खड़े हुए।

तब हेमचन्द्रने कहा—"प्रभो! आप गौड़ तक गये थे, सुना कि—"

माधवाचार्य ने मतलब समझकर कहा—"गया था। तुम मृणालिनी के समाचार की आशा से पूछ रहे हो? मृणालिनी वहाँ नहीं है।"

हेम०—कहाँ गई?

माघ०—यह मैं नहीं जानता, कोई समाचार नहीं मिला।

हेम०—क्यों गई?

माघ०—वत्स, यह सब परिचय युद्ध के बाद दूँगा।

हेम०—पूरा वृत्तान्त मुझसे कहने से यह आशंका न करिये कि मैं मर्म-पीड़ा से कातर हो जाऊँगा। मैंने भी कुछ सुना है। आप जो जानते हैं, उसे निःसंकोच मेरे सामने कहें।"

माधवाचार्य के गौड़नगर जाने पर हृषीकेश ने उनसे अपनी समझ के अनुसार मृणालिनी का वृत्तान्त कहा था। उसी को माधवाचार्य ने भी सच्चा वृत्तान्त समझ लिया; माधवाचार्य भी स्त्री-जाति के अनुरागी नहीं—इसलिये स्त्री चरित्र समझते न थे। इस समय हेमचन्द्र की बात सुन उन्होंने समझा कि हेमचन्द्र उस हाल को कुछ-कुछ सुन कर मृणालिनी की कामना परित्याग कर दी है—इसलिए किसी नवीन मनःपीड़ा की सम्भावना न समझ, फिर बैठ कर उन्होंने हृषीकेशका कहा कुल समाचार हेमचन्द्र को सुनाया।

हेमचन्द्र ने शिर झुका कर हथेली के ऊपर भृकुटी कुटिल ललाट रख कर चुपचाप सब समाचार सुना। माघ वाचार्य की बात समाप्त होने पर भी कुछ न बोले। उसी अवस्था में रहे। माधवाचार्य ने आवाज

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दी—"हेमचन्द्र !" कोई जवाब न मिला। फिर बुलाया "हेमचन्द्र !" फिर भी लाजवाब !

तब माधवाचार्यने उठकर हेमचन्द्रका हाथ पकड़ बहुत ही कोमल स्नेह भरे स्वरमें कहा—"वत्स ! तात ! मुंह उठाओ, मेरे साथ बात करो।"

हेमचन्द्र ने मुँह उठाया। उस मुँह को देख कर माधवाचार्य भी डरे। माधवाचार्य ने कहा—"मुझसे बातें करो। अगर क्रुद्ध हुए हो, तो उसे प्रकट करो।"

हेमचन्द्र ने कहा—"किस की बात का विश्वास करूँ? हृषीकेश का ऐसा कहना है। भिखारिणी और प्रकार की बात कह गई।"

माधवाचार्य ने पूछा—"भिखारिणी कौन! उसने क्या कहा है?"

हेमचन्द्र ने बहुत ही संक्षेप में उत्तर दिया।

माधवाचार्य ने संकुचित स्वर में कहा—"हृषीकेश की बात झूठी जान पड़ती है।"

हेमचन्द्र ने कहा—"हृषीकेश की बात प्रत्यक्ष है।"

वह उठ खड़े हुए। उन्होंने पिता के दिये शूल को हाथ में लिया। कांपते शरीर से निःशब्द टहलने लगे।

आचार्य ने कहा—"क्या सोच रहे हो?"

हेमचन्द्र ने हाथ के शूल को दिखा कर कहा—"मृणालिनी को इस शूल से छेदूँगा।"

माधवाचार्य उनके मुँह की कान्ति देख डर से खिसक गये।

सबेरे मृणालिनी कह गई थी—"हेमचन्द्र मेरे ही हैं।"

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

६

मैं तो पागल हूँ

तीसरे पहर माधवाचार्य लौटे। वह समाचार ले आये कि धर्माधिकार ने प्रकट किया है कि यवन सेना आई है सही, किन्तु पहले के जीते राज्य में विद्रोह की सम्भावना सुन यवन सेनापति सन्धि-स्थापना की इच्छा करते हैं। आगामी कल वह अपना दूत भेजेंगे। दूतके आनेकी अपेक्षामें युद्धकी कोई तैयारी नहीं हो रही है। यह समाचार दे माधवाचार्यने कहा—

"यह कुलांगार राजा धर्माधिकार की बुद्धि से नष्ट होगा।"

सन्देह है कि यह बात हेमचन्द्र के कानों में पहुँची। उन्हें अनमना देख माधवाचार्य विदा हुए।

शाम को मनोरमा हेमचन्द्र के घर पहुँची। हेमचन्द्र को देख कर मनोरमा ने कहा—"भाई! आज तुम अनमने क्यों हो?"

हेम०—मैं कैसा हूँ?

मनो०—तुम्हारे मुख पर श्रावण के अन्धकार जैसा अंधेरा है। भादों की गंगा की तरह क्रोध से भरा है। इतना भौंह क्यों चढ़ाते हो? मानों आँखों पर पलक ही नहीं है। और देख रही हूँ, आँख में पानी; तुम रोये हो?

हेमचन्द्र ने मनोरमा के मुँह की ओर देखा। फिर आँखें झुका लीं। फिर ऊँची खिड़की की ओर देखा; फिर मनोरमा के मुँह की ओर देखते रहे। मनोरमा समझ गई कि ऐसी दृष्टि का कोई उद्देश्य नहीं, जब बात गले में रहती और कहने लायक नही होती, तब ऐसी ही दृष्टि होती है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मनोरमा ने कहा—"हेमचन्द्र ! तुम क्यों कातर हो रहे हो ? क्या हुआ है ?"

हेमचन्द्र ने कहा—"कुछ नहीं !"

मनोरमा पहले कुछ न बोली। फिर आप ही बड़बड़ाने लगी—"कुछ नहीं—कहूँगा नहीं। छि:-छि: ! छाती के भीतर बिच्छी पालूँगी।" कहते-कहते मनोरमा की आँखों से एक बूंद आँसू गिर गया। इसके बाद उसने एकाएक हेमचन्द्र के मुँह की ओर देख कर कहा—"मुझसे क्यों न कहोगे, मैं तुम्हारी बहन हूँ।"

मनोरमा के मुँह के भाव से, शान्त दृष्टि में इतना आदर, इतनी मधुरता, इतनी सहृदयता प्रकाशित हुई कि हेमचन्द्र का हृदय द्रवीभूत हो उठा। उन्होंने कहा—"मुझे जो यन्त्रणा है, वह बहन के सामने कहने योग्य नहीं।"

मनोरमा ने कहा—"तब मैं बहन नहीं हूँ।"

हेमचन्द्र ने किसी तरह जवाब नहीं दिया। फिर भी आशा से मनोरमा उन की ओर देखती रही। उसने कहा—"मैं तुम्हारी कोई नहीं।"

हेम०—मुझे दुःख है कि वह बहन के सुनने योग्य और किसी दूसरे के भी सुनने योग्य नहीं है।

हेमचन्द्र का कण्ठ स्वर करुणामय है—बहुत दीनता से भरा है; यह मनोरमा के हृदय में खटका, उसी समय उसका स्वर परिवर्तित हुआ और आंखों से आग की चिनगारियाँ छिटकने लगीं—उसने होंठ चबाते हुए हेमचन्द्र से कहा—"मुझे दुःख काहे का ? कुछ भी दुःख नहीं। मैंने मणि के भ्रम से काले साँप को गले में धारण किया था, अब उसे फेंक दिया।"

मनोरमा फिर पहले की तरह हेमचन्द्र की ओर एक टक देखती रही। धीरे-धीरे उसके मुखमण्डल पर बहुत ही मधुर, बहुत ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अकारण हास्य उत्पन्न हुआ। बालिका प्रगल्भता को प्राप्त हुई। सूर्य-रश्मि की अपेक्षा जो रश्मि समुज्ज्वल होती है, उसके किरीट को पहन प्रतिभा देवी दिखाई दी। मनोरमा ने कहा—"समझ गई। तुमने बिना समझे प्रेम किया है, उसी का परिणाम हुआ है।"

हेम०—"प्रेम करता था!" हेमचन्द्रने वर्तमानके बदले अतीतकालका व्यवहार किया। इसी समय चुपचाप बहते हुए आँसूओं से उन का चेहरा भीग गया।

मनोरमा चिढ़ी। उसने कहा—"छिः-छिः! प्रतारणा। जो पराये को प्रतारित करता है, वह वंचक है। जो अपनी प्रतारणा करता है, उसका सर्वनाश होता है।" मनोरमा चिढ़ की वजह अपनी अलकों को उंगली से लपेट खींचने लगी।

हेमचन्द्र विस्मित हुए, कहा—"मैंने कौन प्रतारणा की?"

मनोरमा ने कहा—"प्रेम करना क्या? तुम प्रेम करते हो। नहीं तो रोये क्यों? क्या आज तुम्हारे स्नेह-पात्र के अपराधी होने के कारण तुम्हारा प्रेम गया? किसने तुम्हें ऐसी समझ दी है?" कहते-कहते मनो-रमा की प्रौढ़भावापन्न मुखकान्ति एकाएक खिले हुए कमल की तरह अधिकतर भावव्यंजक होने लगी, आँखें अधिक ज्योति से चमकने लगीं, कण्ठस्वर अधिकतर साफ हो गया, आग्रह कम्पित होने लगा, कहने लगी—"यह केवल वीरदम्भकारी पुरुषों का दर्पमात्र है। अहंकार से आग बुझाई जा सकती है? तुम बालू का बांध-बाँध कर इस किनारे से भरी हुई गंगाके वेगको तो रोक सकोगे, तथापि तुम प्रणयिनी को पापिष्ठा समझ कभी प्रणय के वेगको रोक न सकोगे। हा कृष्ण! सभी मनुष्य प्रतारक हैं।"

हेमचन्द्र ने विस्मित हो सोचा—"मैं एक दिन इसे बालिका समझता था!"

मनोरमा कहने लगी—"तुमने पुराण सुना है? मैंने पण्डित से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गूढ़ार्थ सहित सुना है। लिखा है, भगीरथ गंगा ले आये थे, एक दाम्भिक मतवाला हाथी उसका वेग सँभालने जा कर बह गया था। इसका अर्थ क्या है ? गंगा प्रेम-प्रवाह-स्वरूप हैं; यह जगदीश्वर के चरण-कमल से निकली हुई है, यह जगत् में पवित्र है—जो इसमें स्नान करे, वह पुण्य-मय होता है। यह मृत्युंजय की जटा में विहार करनेवाली हैं; जो मृत्यु को जीत सकता है, वह भी प्रणय को मस्तक पर धारण करता है, मैंने जैसा सुना है, ठीक वैसा ही कह रही हूँ। दाम्भिक हाथी दम्भ का अवतार स्वरूप है, वह प्रणय के वेग में बह जाता है। प्रणय पहले एक-मात्र पथका अवलम्बन कर उपयुक्त समयपर शतमुखी होता है; स्वभाव-सिद्ध प्रणय होने से शतपात्र में व्यस्त होता है--अन्त में सागर-संगम में लय को प्राप्त होता है--संसार के सब जीव विलीन हो जाते हैं।"

हेम०--तुम्हारे उपदेष्टा ने क्या कहा है कि प्रणय में पात्रापात्र नहीं हैं। क्या पापी से भी प्रेम करना होगा ?"

मनो०--पापसक्त से भी प्रेम करना चाहिये। प्रणय में पात्रापात्र नहीं हैं। सभी से प्रेम करना चाहिये, प्रेम उत्पन्न होते ही उसे प्रेम से यत्न करना चाहिये, क्योंकि प्रणय अमूल्य है। भाई, जो अच्छा है, उससे कौन नहीं प्रेम करता ? जो बुरा है, मैं उससे ही अधिक प्रेम करती हूँ, किन्तु मैं तो पागल हूँ।

हेमचन्द्र ने विस्मित हो कहा—"मनोरमा, यह सब तुम्हें किसने सिखाया ? तुम्हारा उपदेष्टा अलौकिक व्यक्ति है।"

मनोरमा ने सिर झुका कर कहा—"वह सर्वज्ञानी है, किन्तु—"

हेम०—किन्तु क्या ?

मनो०—वह अग्नि के रूप में रौशन होते हैं, किन्तु जलाते भी हैं।

मनोरमा कुछ देर मुँह नीचा कर चुप हो रही।

हेमचन्द्र ने कहा—"मनोरमा, तुम्हारा मुँह देख कर और तुम्हारी बातें सुनकर मुझे जान पड़ता है, कि तुमने भी प्रेम किया है। जान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पड़ता है कि तुमने अग्नि के साथ जिसकी तुलना की, वही तुम्हारे प्रणयाधिकारी हैं।"

मनोरमा पहले ही की तरह चुप रही। हेमचन्द्र फिर कहने लगे—"यदि यह सच है, तो मेरी एक बात सुनो। स्त्रियों के लिये सतीत्व से अधिक और कोई धर्म नहीं। जिस स्त्री में सतीत्व नहीं है, वह शूकरी से भी अधम है। यह बात नहीं कि केवल कार्य से ही सतीत्व की हानि होती है, पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष की चिन्ता भी सतीत्व के लिये विघ्न है। तुम विधवा हो, यदि पति के अतिरिक्त और किसी को मन में स्थान दोगी, तो तुम इहलोक और परलोक की स्त्रियों में अधम हो कर रहोगी। इसलिये सावधान हो। यदि किसी की तरफ चित्त गया हो, तो उसे भूल जाओ।"

मनोरमा जोर से हँस पड़ी, मुँह पर अंचल देकर हँसने लगी; हँसी बन्द ही नहीं होती। इससे हेमचन्द्र कुछ नाराज हुए कहा—"हँसती क्या हो?"

मनोरमा ने कहा—"भाई, इस गंगा के किनारे जा कर खड़े हो, गंगा को बुला कर कहो--"गंगे, तुम पर्वत पर लौट जाओ।"

हेम०--क्यों?

मनो०--स्मृति क्या अपने इच्छाधीन है? राजपुत्र, काले सर्प को मन में स्थान देने में क्या सुख है? फिर भी तुम क्यों उसे भूल नहीं रहे हो!

हेम०--उसके काटने की ज्वाला से।

मनो०--यदि वह तुम्हें न काटे, तो क्या उसे भूल जाओगे।

हेमचन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया। मनोरमा कहने लगी-"तुम्हारी फूल की माला काला साँप हो रही है, तब भी तुम उसे भूल नहीं सकते; मैं तो पागल हूँ--मैं अपने फूल के हार को क्यों तोड़ूँ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हेमचन्द्र ने कहा--"तुम एक प्रकार से अन्याय नहीं कर रही हो। विस्मृति अपने अधीन का काम नहीं, लोग अपने बड़प्पन से अन्धे हो परायों को जो उपदेश देते हैं, उसमें 'भूल जाओ' के उपदेश से बढ़ कर हास्यास्पद और कुछ नहीं। कोई किसी से यह नहीं कहता कि तुम अर्थ की चिन्ता छोड़ दो, यश की इच्छा छोड़ दो, प्यास लगने की इच्छा छोड़ दो, निद्रा छोड़ दो, तब क्यों कहते हो कि प्रेम छोड़ दो? क्या प्रेम इन सब से छोटा है? इन सबसे प्रणय कम नहीं--किन्तु धर्म की अपेक्षा न्यून है। धर्म के लिये प्रेम का संहार करना चाहिये। स्त्री के लिये परम धर्म सतीत्व है। इसलिये कहता हूँ कि यदि हो सके, तो प्रेमका अंहार करो।"

मनो०—मैं अबला ज्ञान-हीना—विवश हूँ, मैं नहीं जानती कि धर्माधर्म किसे कहते हैं। मैं इतना ही जानती हूँ कि बिना धर्म के प्रेम उत्पन्न नहीं होता।

हेम०—सावधान मनोरमा! वासना से भ्रान्ति उत्पन्न होती है; भ्रान्ति से अधर्म उत्पन्न होता हैं। तुम्हें भ्रान्ति है। तुम विचार कर कहो तो सही, यदि तुम धर्म में एक को पत्नी हो और मनसे दूसरे की पत्नी हो जाओ, तो तुम द्विचारिणी हुई या नहीं?

घरमें हेमचन्द्र, तलवार लटक रही थी; मनोरमा ने उस तलवार को हाथ में ले कर कहा—"भैया हेमचन्द्र, तुम्हारी ढाल पर किसका चमड़ा है?

हेमचन्द्र हँसे। उन्होंने मनोरमा के मुँहकी ओर देखा—बालिका है।

—:o:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

७

गिरिजायाका समाचार

गिरिजाया जब पाटनी के घर लौट कर गई, तब उसने यह स्थिर कर लिया था कि चाहे प्राण जाय, किन्तु वह हेमचन्द्र के नये अनुराग की बात मृणालिनी के सामने न कहेगी। मृणालिनी उसके आनेकी प्रतीक्षा में पिंजरे में बन्द पक्षी की तरह चंचला हो रही, उसने गिरजाया को देखते ही पूछा—"कहो गिरिजाया; क्या देखा ? हेमचन्द्र कैसे हैं ?"

गिरिजाया ने कहा—"अच्छे हैं।"

मृणा०—क्यों, इस तरह क्यों बोल रही हैं ? तुम्हारी बातों में उत्साह क्यों नहीं ? मानो दुःखी हो बोल रही हो; क्यों ?"

गिरि०—यह कैसे !

मृणा०—गिरिजाया, मुझे धोखा न दे; क्या हेमचन्द्र अच्छे नहीं हुए, तो मुझसे साफ कहो। सन्देह की अपेक्षा प्रतीति अच्छी।

गिरिजाया ने इस बार हँसकर कहा—"तुम क्यों अनर्थक व्यस्त होती हो। मैं निश्चय कह रही हूँ, उनके शरीर में कोई क्लेश नहीं। वह उठ कर घूमते-फिरते हैं।"

मृणालिनी ने कुछ देर सोच कर कहा—"मनोरमा के साथ उनकी कोई बात-चीत सुनी ?

गिरि०—सुनी।

मृणा०—क्या सुना ?

तब गिरिजाया ने वह कहा, जो हेमचन्द्र कहते थे। केवल हेमचन्द्र

...l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

के साथ मनोरमा के रात घूमने और चुपके-चुपके बात करने के दो विषयों को छिपा लिया। मृणालिनी ने पूछा—"तुमने हेमचन्द्र से मुलाकात की ?

गिरिजाया ने कुछ इधर-उधर कर कहा—"हाँ की।"

मृणा०—उन्होंने कहा ?

गिरि०—तुम्हारा हाल पूछा।

मृणा०—तुमने क्या कहा ?

गिरि०—मैंने कहा कि तुम अच्छी हो।

मृणा०—यह कहा कि मैं यहाँ आई हूँ ?

गिरिड—नहीं।

मृणा०—गिरिजाया, तुम जवाब देने में इधर-उधर कर रही हो, तुम्हारा मुँह सूखा हुआ है। तुम मेरे मुँह की ओर देख नहीं सकती हो; मैं निश्चय समझ रही हूँ, कि तुम कोई अमङ्गल समाचार मुझसे छिपा रही हो। मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं हो रहा है। चाहे भाग्य में जो हो, मैं स्वयं हेमचन्द्र को देखने जाऊँगी। अगर हो सके, तो मेरे साथ चलो, नहीं तो मैं अकेली जाऊँगी।

यह कह मृणालिनी घूँघट में मुँह छिपा तेजी के साथ सड़क की ओर चली।

गिरिजाया उसके पीछे दौड़ी। कुछ दूर आ कर उसने हाथ पकड़ कर कहा—"मालकिन, लौट आओ। मैंने जो छिपाया है, उसे प्रकट किये देती हूँ।"

मृणालिनी गिरिजाया के साथ-साथ घर लौट आई। अब गिरिजाया ने जो कुछ छिपाया था, उसे विस्तार के साथ-साथ कह दिया।

गिरिजाया ने हेमचन्द्र को ठगा था। किन्तु मृणालिनी को ठग न सकी।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मृणालिनी की लिखावट

मृणालिनी ने कहा--"गिरिजाया, उन्होंने क्रोध से कहा होगा कि अच्छा हुआ, यह सुन कर वह क्यों न क्रोध करेंगे ?"

तब गिरिजाया को भी संशय हुआ। उसने कहा--"यह सम्भव है।"

तब मृणालिनी ने कहा--"तुमने यह बात कह कर अच्छा नहीं किया। इसका उपाय करना उचित है; तुम भोजनादि करने जाओ। तब तक मैं एक पत्र लिख रखती हूँ। तुम खाने के बाद यह पत्र ले कर उनके पास जाओ।"

गिरिजाया स्वीकार कर भोजनादि के लिये चली गई। मृणालिनीने संक्षेप में पत्र लिखा,--

"गिरिजाया मिथ्यावादिनी है। जिस कारण से उसने तुम्हारे आगे मेरे सम्बन्धमें झूठ कहा है, उससे पूछने से वह स्वयं तुम्हें विस्तार के साथ सुनायेगी। मैं मथुरा नहीं गई। जिस रात तुम्हारी अँगूठी देख मैं यमुना किनारे आई थी, उसी रातसे मेरे लिए मथुरा की राह बन्द है। मैं मथुरा न जा कर तुम्हें देखने के लिये नवद्वीप में जा कर भी जब तक मैंने तुमसे मुलाकात नहीं की, उसका कारण यह है कि मेरे साथ मुलाकात करने से तुम्हारी प्रतिज्ञा भङ्ग होगी। मेरी इच्छा है कि तुम्हें देखूँ, उस सिद्धि के लिये तुमसे मुलाकात करने की आवश्यकता है ?"

गिरिजाया यह पत्र लेकर फिर हेमचन्द्र के घरको ओर गई। सन्ध्या समय मनोरमा से बातचीत करने के बाद हेमचन्द्र गङ्गा-दर्शन करने जा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रहे थे। राह में गिरिजाया से मुलाकात हो गई। गिरिजाया ने उनके हाथ में पत्र दिया।

हेमचन्द्र ने कहा--"तुम फिर क्यों आई ?"

गिरि०--पत्र ले कर आई हूँ।

हेम०--किसका पत्र ?

गिरि०--मृणालिनी का।

हेमचन्द्र विस्मित हुए--"यह पत्र तुम्हारे पास कैसे आया ?"

गिरि०—मृणालिनी नवद्वीप में हैं। मैंने मथुरा की बात आप से झूठी कही थी।

हेम०—यह पत्र उन्हीं का है ?

गिरि०—हां उनके हाथ का लिखा है।

हेमचन्द्र ने बिना पढ़े चिट्ठी को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। कुल चिथड़े झाड़ीमें फेंककर उन्होंने कहा—"मैं पहले हीसे जानता हूँ कि तुम झूठी हो। तुम जिस दुष्टा का पत्र ले आई हो, वह विवाह करने नहीं गई, हृषीकेश ने उसे निकाल दिया है, इसे मैं अब से पहले सुन चुका हूँ। मैं कुलटा का पत्र न पढ़ूँगा। तू मेरे सामने से दूर हो।"

गिरिजाया चौंककर चुपचाप हेमचन्द्र के मुँह की ओर देखने लगी।

हेमचन्द्र ने सड़क के किनारे एक छोटे वृक्ष की शाखा को तोड़ उसे हाथ में ले कर कहा—"दूर हो, नहीं तो पीटूँगा।"

अब गिरिजाया से सहा न गया। उसने धीरे-धीरे कहा—"वीर पुरुष हो! शायद ऐसा ही वीरत्व प्रकाश करने के लिये नदिया में आये हो? कोई जरूरत नहीं थी—यह वीरत्व तो मगध में बैठकर भी दिखा सकते थे—विदेशी तुर्कोंका जूता ढोने और एक गरीब बेकसूर लड़की को देखकर छड़ी मारने के लिये ?

हेमचन्द्र ने लज्जित हो छड़ी फेंक दी। किन्तु गिरिजाया का क्रोध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

न गया। उन्होंने फिर कहा—"तुम मृणालिनी से विवाह करोगे ? मृणालिनी तो दूर रही, तुम मेरे योग्य भी नहीं हो।"

यह कह गिरिजाया दर्प के गजेन्द्रगमन से चली गई। हेमचन्द्र भिखारिणी का दर्प देख हैरान रह गये !

गिरिजायाने लौट कर हेमचन्द्र का आचरण विशेष रूप से मृणालिनी के सामने कहा। इस बार उसने कुछ न छिपाया। सुन कर मृणालिनीनें कोई जवाब न दिया। रोई भी नहीं। जिस हालत में बैठी सुन रही थी, उसी हालत में रही। यह देख कर गिरिजाया को शंका हुई। उस समय मणालिनी से बात-चीत का समय न समझ वहाँ से हट गई।

पाटनी के घर से कुछ ही दूर पर जो एक सीढ़ीदार पुष्करिणी थी, वहाँ जाकर गिरिजाया सीढ़ी पर वैठी। शारदीया की पूर्णिमाकी प्रदीप्त कौमुदी में पुष्करिणी साफ नीला पानी अधिकतर नीलोज्ज्वल हो प्रभा-वित हो रहा था। उसपर स्थिर फूलों की श्रेणी अधखिली होकर नीले पानी में प्रतिबिम्बित हो रही थी। चारों ओर वृक्ष-मालाएँ निःशब्द एक-दूसरे से सटे हुए आकाश की सीमाका निर्देश कर रहे थे। कहीं दो एक लम्बी शाखाएँ ऊपर की ओर उठ कर आकाश पटल में विचित्र हो रहीं थी। नीचे के अन्धकार पुंज से नवस्फुट कुसुम-सौरभ आ रहा था।

गिरिजाया सीढ़ीपर वैठ गई।

गिरिजाया ने पहले धीरे-धीरे मधुर गीत आरम्भ किया—मानो नवशिक्षिता चिड़िया पहली कोशिश में स्पष्ट गाना न गा सकती हो। धीरे-धीरे उसका स्वर स्पष्ट होने लगा—फिर धीरे-धीरे स्वर ऊँचा होता चला गया; अन्तमें वह सर्वाङ्गसम्पूर्ण ताललय-विशिष्ट कमनीय कण्ठध्वनि पुष्करिणी उपवन, और को गुंजाती हुई स्वर्गच्युत स्वर-सरित्त रंगस्वरूप मृणालिनी के कान में प्रवृष्ट होने लगी। गिरिजाया ने गाया—

"पराण ना गेलो !

जो दिन देखुनु सई जमुना के तीरे,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गावत नाचत सुन्दर धीरे - धीरे,
ओंही पर पिय सई, काहे कालो नीरे,
जीवन ना गेलो ?
फिरि घर आयनु, ना कहनु बोलि,
तितायनु आँखिनी रे आपना आँचलि,
रोई रोई पिय सई काहे लो पराणि,
तई खन ना गेलो ?
शूनन् श्रवण पथे मधुर बाजे,
राधे राधे राधे राधे विपन माझे,
सतो शुनन् लागि सई, सो मधुर बोलि,
जीवन ना गेलो ?
धायनु पिय सई, सोहि उपकूले,
लुटायनु काँदि सई, श्याम पद मूले,
सोहि पदमूले रई, काहे लो हामारि,
मरण ना भेलो ?"

गिरिजाया ने गाते गाते देखा कि उसके सामने चन्द्रमा की किरण में मनुष्य की छाया दिखाई दे रही है। उसने पलट कर देखा कि मृणालिनी खड़ी है। उसके मुँह की ओर देखा, मृणालिनी रो रही है।

देखकर गिरिजाया प्रसन्न हुई—वह समझ न सकी कि जब मृणालिनी की आँखों में आँसू आया है—तब उसकी तकलीफ में कुछ कमी हुई है। इसे सब लोग नहीं समझते—समझते हैं कि "उसकी आँखों में तो आँसू दिखाई नहीं दिये, तब इसे काहे का दुःख ?" अगर इसे सब लोग समझते, तो संसार की कितनी ही मर्म-पीड़ाओं का निवारण होता !

कुछ देर दोनों ही चुप रहीं। मृणालिनी कुछ बोल न सकी। गिरिजाया भी कुछ पूछ न सकी। आखिर मृणालिनी ने कहा—"गिरिजाया, तुम्हें और एक बार जाना होगा।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरि०—फिर उस पाषण्ड के पास जाऊं ?

मृणा०—पाषण्ड न कहो। हेमचन्द्र भ्रम में पड़े हैं—इस संसार में कौन अभ्रान्त है ? किन्तु हेमचन्द्र पाषण्ड नहीं हैं। मैं स्वयं उनके पास अभी जाऊँगी, तुम मेरे साथ चलो। तुम बहन से भी बढ़ कर मुझ पर स्नेह करती हो—तुमने मेरे लिये क्या नहीं किया है? मैं निश्चय जानती हूं कि तुम मुझे कभी अकारण मनोपीड़ा न दोगी और इन सब बातों में झूठ न बोलोगी। किन्तु फिर भी मेरे हेमचन्द्र बिना अपराध मेरा त्याग करेंगे, इसे उनके मुँह से सुनें बिना मेरा हृदय कैसे स्थिर हो सकता है ? यदि स्वयं उनके मुँह से सूनूँ, कि मृणालिनी को उन्होंने कुलटा समझ कर त्याग दिया है, तो मैं इस प्राण का विसर्जन कर सकूँगी।

गिरि०—प्राण विसर्जन ? यह क्यों मृणालिनी ?

मृणालिनी ने कोई जवाब न दिया। गिरिजाया के कन्धे पर बाहें रख रोने लगी। गिरिजाया भी रो दी।

—:o:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

८

अमृत गरल--गरलामृत

● ● ●

हेमचन्द्र ने आचार्य की बात पर विश्वास कर मृणालिनी को दुश्चरित्रा समझ लिया था। मृणालिनी के पत्र को न पढ़कर उसे टुकड़े-टुकड़े कर डाला था। उसकी दूती को मारने को तैयार हुए थे। किन्तु इतने ही से यह बात नहीं कि वह मृणालिनी से प्रेम नहीं करते थे। मृणालिनी के लिये राज्य-त्याग कर वह मथुरावासी हुए थे। गुरु के ऊपर तीर चलाने को तैयार हो गये; मृणालिनी के लिए गौड़ में अपने व्रत को भूल कर भिखारिणी की खुशामद की थी। और अब? अब हेमचन्द्र ने माधवाचार्य को शूल दिखाकर कहा था—"मृणालिनी को इस शूल से मारूँगा!" किन्तु इतने से ही क्या उनका स्नेह बिल्कुल ध्वंस हो गया था? क्या स्नेह कभी एक दिन में ध्वंस हुआ करता है? बहुत दिन से पहाड़ी पानी पृथ्वी पर घूम-फिर कर अपने लिये खाता बनाता है, तो क्या वह नदी एक दिन के सूर्य ताप से सूख जाती है? पानी ने जिस राह में अपने लिये खाता बना रखा है, वह उसी राह से ही जायगा। उसकी राह रोकने से वह पृथ्वी में फैल पड़ेगा। हेमचन्द्र उस रात को अपने सोने की कोठरी में शय्या के ऊपर लेटकर उस खुली खिड़की की ओर सिर रख खिड़की की राह देख रहे थे—क्या वह रात की शोभा देख रहे थे? यदि कोई उस समय उनसे पूछता कि रात चाँदनी है या अँधेरी, तो वह उसे सहसा बता न सकते। उनके हृदय में जिस रजनी का उदय हुआ था, वह केवल उसीको देख रहे थे। उस रात तो उस समय भी चाँदनी थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

नहीं तो उनका सिरहाना नम क्यों होता ? केवल बादल छाये हैं। जिनके हृदय-आकाश में अन्धकार विराजता है, वह रोता नहीं।

जो कभी रोया नहीं, वह मनुष्यों में अधम है; उस पर कभी विश्वास न करना। निश्चय जानना कि उसने पृथ्वी के सुख को कभी भोगा ही नहीं—पराये का सुख कभी उसे सहा न गया। ऐसा होता है कि कोई आत्म-विजयी महात्मा बिना आँखें गीली किये भयानक मनोपीड़ाओं को सहते है और सहा करते हैं; किन्तु यदि वह कभी एक दिन भी एक बूँद आँसू से पृथ्वी को सिक्त नहीं करते, तो वह चित्त-विजयी महात्मा हों, तो हो सकते हैं, किन्तु हम चाहे चोरों से प्रेम करें, फिर भी उनसे नहीं।

हेमचन्द्र रो रहे थे—जिसे पापिष्ठा और मन में स्थान देने के अयोग्य समझ रहे थे, उसी के लिये रो रहे थे! क्या वह मृणालिनी के दोष की आलोचना कर रहे थे? वह कर रहे थे सही, किन्तु सिर्फ वही नहीं। बार-बार मृणालिनी के प्रेम-परिपूर्ण मुख-मण्डल तथा प्रेम-परिपूर्ण कार्यों को याद कर रहे थे। क्या वही मृणालिनी अविश्वासिनी है? एक दिन मथुरा में हेमचन्द्र मृणालिनी के पास एक पत्र भेजने के लिए व्यस्त हो रहे थे, उन्हें कोई उपयुक्त वाहक नहीं मिला। किन्तु उन्होंने मृणालिनी को खिड़की में देखा। तब हेमचन्द्र ने एक आम के फल के ऊपर आवश्यक बातें लिख मृणालिनी की गोद को लक्ष्य कर खिड़की की राह से फेंका। आम पकड़ने के लिये जो मृणालिनी आगे बढ़ी, तो आम उसकी गोद मे न आ कर कान में लगा, उसी समय उसकी चोट से कान का लटकता हुआ कुण्डल टूट कर गिर पड़ा। मृणालिनी ने उस पर ध्यान भी नहीं दिया। उसने कान में हाथ भी नहीं लगाया; उसने हँसकर उसी समय आम लिया और उसकी लिखावट पढ़कर उसकी पीठ पर जवाब लिख, आम वापस किया और जब तक हेमचन्द्र दिखाई देते रहे, तब तक खिड़की में झुकपर खड़ी रही। हेमचन्द्र को उसकी याद आई। वही मृणालिनी क्या अविश्वासिनी है? यह सम्भव नहीं। और एक दिन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मृणालिनी को बिच्छू ने मारा था। उसकी तकलीफ से मृणालिनी मरने वालोंकी तरह कातर हो पड़ी थी। उसकी एक परिचारिका दवा जानती थी; उसके लगाते ही यन्त्रणा बिल्कुल ही शीतल पड़ जाती थी। दासी शीघ्रता से दवा लेने गई। इसी समय हेमचन्द्र ने दूती से जा कर कहा कि हेमचन्द्र बाग में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। क्षण भर में दवा आ जाती, किन्तु मृणालिनी ने उसका आसरा नहीं देखा; उसी समय मरणाधिक यन्त्रणा को भूल कर बाग में पहुँची। दवा लग न सकी। हेमचन्द्र को उसकी भी याद आई। वही मृणालिनी ब्राह्मण कुलकलङ्क व्योमकेश के कारण हेमचन्द्र के आगे अविश्वासिनी होगी? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। और एक दिन हेमचन्द्र मथुरा से गुरुदर्शन के लिये जा रहे थे। मथुरा से एक पहर की राह तय कर हेमचन्द्र बीमार हुए। वह राह में बनी एक धर्मशाला में पड़ रहे। किसी तरह यह समाचार अन्तःपुर में मृणालिनी के कान तक पहुँचा। मृणालिनी उसी रात सिर्फ एक दासी के साथ रात को वह योजन भर रास्ता पैदल चल हेमचन्द्र को देखने आई। जब मृणालिनी धर्मशाला में पहुँची, तब वह राह चलने से थक कर चूर हो गई थी, पैर में छाले पड़ गये थे—खून बह रहा था। उसी रात मृणालिनी पिता के भय से लौट आई। घर आकर वह स्वयं बीमार हो पड़ी। इसकी हेमचन्द्र को याद आई, वही मृणालिनी नराधम व्योमकेश के लिये उनका त्याग करेगी? क्या वह अविश्वासिनी हो सकती है? जो ऐसी बात पर विश्वास करे, वह अविश्वासी है, वह नराधम है, वह निरा मूर्ख है। हेमचन्द्र बार-बार सोच रहे थे—"मैंने मृणालिनी का पत्र क्यों न पढ़ा? यह क्यों नहीं मालूम किया कि वह नवद्वीप में क्यों आई है!" चिट्ठियों के जो टुकड़े वन में फेंके थे, वे शायद मिल जायें, तो उसे जोड़ कर जहाँ तक बने वहाँ तक उसको समझें, इसी आशा से वह एक बार वन तक गये, किन्तु वहाँ वन के नीचे के अन्धकार में कुछ भी देख न सके। हवा टुकड़ों को उड़ा ले गई थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

यदि उस समय अपनी बाँह काट देने से हेमचन्द्र उस चिट्ठी के टुकड़ों को पाते, तो वह वैसा ही करते।

फिर सोचते थे--आचार्य झूठी बात क्यों कहेंगे? आचार्य बहुत ही सत्यनिष्ठ हैं, कभी झूठ न बोलेंगे। विशेषतः वह मुझ पर पुत्र से अधिक स्नेह रखते हैं—जानते हैं कि इस समाचार से मुझे मरणाधिक यन्त्रणा होगी, तब क्यों वह मुझसे झूठी बात कह मुझे इतनी यन्त्रणा देंगे? फिर उन्होंने भी अपने मन से कोई बात नहीं कही। मैंने दर्प के साथ उनके मुँह से बातें निकलवा लीं, जब मैंने कहा कि मैं सब जानता हूँ—तब उन्होंने बताया। मिथ्या कहने का कोई उद्देश्य होने पर भी वह कुछ कहने की अनिच्छा क्यों करते? यह हो सकता है कि हृषीकेश ने उनसे झूठी बात कही हो। किन्तु हृषीकेश भी बिना कारण के गुरु के आगे झूठ क्यों बोलेंगे? फिर मृणालिनी ही उनका घर छोड़ कर नवद्वीप क्यों आई?

जब ऐसा सोचते हैं, तब हेमचन्द्र के मुँह पर कालिमा छा जाती है; ललाट पर पसीना आ जाता है; वह लेटना छोड़ उठ बैठते हैं, दम्भ से होठों को काटते, आँखें लाल हो फैल पड़तीं, शूल उठाने के लिये मुट्ठी बँध जाती थी। फिर जैसे ही मृणालिनी के प्रेममय मुखमण्डल की याद आती है, वैसे ही कटे हुए वृक्ष की तरह शय्यापर गिर पड़ते हैं, तकिये में मुँह छिपा कर बच्चों की तरह रोने लगते हैं। हेमचन्द्र इसी प्रकार रो रहे थे, ऐसे समय उनके शयन-गृह का द्वार खुला। गिरिजाया ने प्रवेश किया।

हेमचन्द्र ने पहले समझा कि मनोरमा है। उसी समय देखा कि वह कुसुममयी मूर्ति नहीं है। इसके बाद पहचाना कि गिरिजाया है। वह पहले विस्मित, फिर आह्लादित और फिर कौतूहलाक्रान्त हुए। पूछा—"तुम फिर क्यों आई?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरिजायाने कहा--"मैं मृणालिनी की दासी हूँ। आपने मृणालिनी का त्याग किया है, किन्तु मृणालिनी ने आप का त्याग नहीं किया है। इसलिये मुझे फिर आना पड़ा है। मुझे बेंत मारने की इच्छा हो, मारिये। मैंने निश्चय किया है कि इस बार मैं मालकिन के लिए वह सह लूँगी।"

इस तिरस्कार से हेमचन्द्र बहुत ही लज्जित हुए। उन्होंने कहा--"तुम्हें कोई शंका नहीं। स्त्री जाति पर मैं हाथ न चलाऊँगा। तुम क्यों आई हो? तीसरे पहर तुमने कहा था कि वह नवद्वीप में आई हैं; नवद्वीप में क्यों आई? मैंने उन की चिट्ठी न पढ़ कर भूल की।"

गिरि०--मृणालिनी नवदीप में आप को देखने आई हैं।

हेमचन्द्र का शरीर कण्टकित हुआ। इसी मृणालिनी को उन्होंने कुलटा समक्ष अपमानित किया? उन्होंने फिर गिरिजाया से कहा--"मृणालिनी कहाँ है?"

गिरि०--वह आपसे जन्मभर के लिये बिदाई लेने आई हैं। सरोवर के किनारे खड़ी हैं। आप चलें।

यह कह गिरिजाया चली गई। हेमचन्द्र उसके पीछे-पीछे दौड़े।

गिरिजाया सरोवर के किनारे, जहाँ मृणालिनी सीढ़ी पर बैठो थी, वहाँ पहुँची। हेमचन्द्र भी वहाँ आये। गिरिजाया ने कहा--"मालकिन, उठो; राजपुत्र आये हैं।"

मृणालिनी उठ खड़ी हुई। दोनों ने दोनों के मुंह की ओर देखा। मृणालिनी की दृष्टि लोप हुई; आँसुओं से आँखें भर गईं। जैसे अवलम्बन की शाखा के टूट जाने से शाखा में लिपटी हुई लता भूमि में गिर पड़ती है, वैसे ही मृणालिनी हेमचन्द्र के पैरों पर गिर पड़ी। गिरिजाया हट गई।

--:०:--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

१०

इतने दिन के बाद

हेमचन्द्र ने मृणालिनी का हाथ पकड़ कर उठाया। दोनों-दोनों के सामने खड़े हुए।

इतने दिन बाद दोनों में मुलाकात हुई। जिस दिन सन्ध्या समय यमुना के किनारे सन्ध्या की वायु के हिलोरे में मौलिश्री के नीचे खड़े हो, नीलाम्बुमयी की चंचल तरंगों में तारों के प्रतिबिम्ब को देखते हुए दोनों एक-दूसरे से सजलनयन हो विदा हुए थे, उस के बाद यही मुलाकात हुई है। गर्मी के बाद वर्षा बीत गई, वर्षा के बाद शरद् आई, किन्तु इनके हृदय में कितने दिन बीते, इसका हिसाब ऋतुगणना से लग नहीं सकता।

उस रात्रि के समय स्वच्छ-सलिल सरोवर के किनारे दोनों एक दूसरे के सामने खड़े हुए। चारों ओर घना वन सघनता से लता की लपेट से सुशोभित वृक्ष दृष्टिपथ को रोके हुए खड़े थे। सामने नीले बादलों के टुकड़े की तरह सरोवर शैवाल-कुमुद-कल्हार के साथ शोभित हो रहा था। सिर के ऊपर चन्द्र, तारे और बादल आकाश को चाँदनी में हँस रहे थे। चांदनी आकाश, वृक्षों की चोटी, लता-पल्लव, सरोवर की सीढ़ी और नीले पानी पर हँस रही थी। प्रकृति बिना हिले-डोले धैर्यमयी हो रही थी। उसी धैर्यमयी प्रकृति के महल में मृणालिनी और हेमचन्द्र सामने-सामने खड़े हुए।

भाषा में क्या कोई शब्द न था? उनके मन में क्या कहने-सुनने की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बात नहीं थी ? यदि मन में कहने लायक बातें थीं, भाषा में शब्द था, तो ये लोग बात-चीत क्यों नहीं करते ? उस समय आँखों की देखा-देखी से ही मन उन्मत्त था—बात-चीत कैसे हो ? इस समय केवल मात्र प्रणयी के सामने खड़े होने में इतना सुख था कि हृदय में अन्य सुख के लिये स्थान नहीं था। जो यह सुख भोगता है, वह और किसी बात के सुख की वासना नहीं करता।

उस समय इतनी बातें होती हैं कि कौन-सी बात आगे कही जाय, इसे कोई स्थिर कर नहीं सकता।

मनुष्य की भाषा में ऐसा कौन-सा शब्द है, जो उस समय प्रयुक्त हो सके ?

वे एक दूसरे का मुँह देखने लगे। हेमचन्द्र ने मृणालिनी के उस प्रेममय मुख को फिर देखा—हृषोकेश की बात की रुकावट दूर होने लगी, इस ग्रन्थ को लाइन-लाइन में पवित्रता लिखी है। हेमचन्द्र उस की आँखों की ओर देखने लगे; उस अपूर्व आयतनशाला, इन्दीवर-निन्दी अन्तःकरण के दर्पण-स्वरूप आँखों की ओर देखते रहे—उससे केवल प्रेमाश्रु बह रहे थे। जिसकी ऐसी आँखें हैं, वह क्या अविश्वासिनी है ?

पहले हेमचन्द्र ने बात छेड़ी। पूछा—"मृणालिनी !....कैसी हो ?"

मृणालिनी कुछ जवाब दे न सकी। अभी तक उसका चित्त शान्त नहीं हुआ; उसने जवाब देने की चेष्टा की, किन्तु फिर आँखों में आँसू भर गये। कण्ठ रुद्ध हुआ। मुँह से बात न निकली।

हेमचन्द्र ने फिर पूछा—"तुम कैसे आई ?"

फिर भी मृणालिनी जवाब दे न सकी। हेमचन्द्र ने उसका हाथ पकड़ सीढ़ियों पर बैठा दिया; स्वयं पास बैठ गये। मृणालिनी के मन में जो कुछ स्थिरता थी, उसका इस आदर से लोप हुआ। धीरे-धीरे उसका सिर आप ही आप हेमचन्द्र के कन्धे पर झुक पड़ा; मृणालिनी इसे जान कर भी जान न सकी। मृणालिनी फिर रोई—उसके आँसुओं से हेमचन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

का कन्धा और छाती भीग गई। इस संसार में मृणालिनी ने जितने सुखों का अनुभव किया था, उनमें कोई सुख इस रुलाई के समान नहीं।

हेमचन्द्र ने फिर कहा—"मृणालिनी ! मैंने तुम्हारे आगे बहुत बड़ा अपराध किया है। मेरे उस अपराध को क्षमा करना। मैंने तुम्हारे नाम कलंक सुन उस पर विश्वास किया था। विश्वास करने के कितने ही कारण भी थे, उन्हें तुम दूर कर दे सकोगी : मैं जो पूछता हूँ, उसका साफ जवाब दो।"

मृणालिनी ने हेमचन्द्र के कन्धे से सिर उठाये बिना ही कहा—"क्या ?"

हेमचन्द्र ने कहा—"तुमने हृषीकेश का घर क्यों छोड़ा ?"

यह नाम सुनते ही क्रोध में आई सर्पिणी की तरह मृणालिनी ने सिर उठाया। उसने कहा—"हृषीकेश ने मुझे घर से विदा कर दिया।"

हेमचन्द्र व्यथित हुए—कुछ सन्देह में भी आये, कुछ चिन्ता भी हुई। इसी बीच मृणालिनी ने, फिर हेमचन्द्र के कन्धे पर सिर रख दिया। उस सुखासन पर सिर रखने में इतना सुख था कि मृणालिनी उससे वंचित हो न सकी।

हेमचन्द्र ने पूछा—"हृषीकेश ने तुम्हें घर से क्यों निकाला ?"

मृणालिनी ने हेमचन्द्र की छाती में मुँह छिपा लिया। बहुत ही धीमे स्वर में कहा—"तुम से क्या कहूँ ? हृषीकेश ने मुझे कुलटा कह कर निकाल दिया।"

सुनते ही तीर की तरह हेमचन्द्र उठ खड़े हुए। मृणालिनी का सिर उनकी छाती से हटकर सीढ़ी से टकराया।

"पापिनी—अपने मुँह स्वीकार करती है !" दम्भ के साथ यह बात कहते हुए हेमचन्द्र वहाँ से चले गये। राह में गिरिजाया उन की सजल-जलद-भीम मूर्ति देख चौंक पड़ी। लिखते लज्जा आती है—किन्तु बिना लिखे भी नहीं चलता—हेमचन्द्र ने लात मार कर गिरिजाया को

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

राह से हटाया। कहा--"तुम जिसकी दूती हो, उसे लात मारने से मेरा पैर कलङ्कित होता।" यह कहकर हेमचन्द्र चले गये।

जिसमें धैर्य नहीं, जो क्रोध के आते ही अन्धा हो जाता है, वह संसार के सब सुखों से वंचित होता है। कवि ने कल्पना की है कि केवल अधैर्य के रोष से वीर श्रेष्ठ द्रोणाचार्य मारे गये थे। "अश्वत्थामा हतः" यह शब्द सुनते ही उन्होंने धनुष-बाण का त्याग किया। दूसरा प्रश्न कर वह उसके विशेष मतलब को समझ न सके। हेमचन्द्र में केवल अधैर्य नहीं--अधैर्य, अभिमान और क्रोध सभी कुछ था।

शीतल समीरणमयी ऊषा की पिंगल मूर्ति वापी किनारे के वन में उदित हुई। उस समय भी मृणालिनी घायल सिर लिये सीढ़ी पर बैठी रही। गिरिजाया ने पूछा--"मालकिन, क्या चोट अधिक मालूम होती है?"

मृणालिनी ने कहा--"कैसी चोट?"

गिरि०--माथे में।

मृणा०—माथे में चोट? मुझे मालूम नहीं!

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

चतुर्थ खण्ड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२

ऊर्णनाभ

● ●

जब तक मृणालिनी के सुख का तारा डूब रहा था, तब तक गौड़देश के सौभाग्य का चन्द्र भी उसी राह जा रहा था। जिस व्यक्ति के रखने से गौड़ रक्षित रहता, वह मकड़ी की तरह अलग बैठ, अभागी जन्मभूमि के बँधवाने के लिये जाल बुन रहा था। रात के समय एकान्त में धर्माधिकार पशुपति अपने दाहिने हाथस्वरूप शान्तशील को डाँट रहे थे--"शान्तशील ! सबेरे जो समाचार तुमने दिया है, वह तुम्हारी दक्षता का परिचय मात्र है। तुम पर और कोई भार देने की इच्छा नहीं।"

शान्तशील ने कहा—"जो असाध्य है, उसे मैं कर नहीं सका। अन्य कामों में परिचय ग्रहण करिये।"

पशु०—"सैनिकों को क्या आदेश दिया गया है ?"

शान्त०—यही कि हमलोगों की आज्ञा बिना कोई तैयार न हो।

पशु०—शान्तपाल और कोष्ठपालों को क्या आदेश दिया गया है ?

शान्त०—कह दिया है कि शीघ्र ही यवन-सम्राट् के पास से कर लेकर कई मुसलमान दूत के रूप में आनेवाले हैं, उन्हें रोकना नहीं।

पशु०—दामोदर शर्मा आदेश के अनुसार काम करते हैं या नहीं ?

शान्त०—उन्होंने बड़ी चतुराई के साथ काम किया है।

पशु०—वह कैसे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

शान्त०—उन्होंने एक पुराने ग्रन्थ के एक पेज को बदल कर उसमें आप की रचित कविताओं को स्थान दिया है। आज वह कविता ले कर उन्होंने सबेरे राजा को सुनाया था और माधवाचार्य की अनेक निन्दाएँ की हैं।

पशु०—कविता का भविष्यत् गौड़विजेता के रूप का वर्णन विस्तार के साथ लिखा है। उस विषयमें महाराजने कोई खोज की थी ?

शान्त०—की थी। मदनसेन हाल में काशी-धाम से लौट कर आये हैं, यह समाचार महाराज जानते हैं। महाराज ने कविता में भविष्य के गौड़-नेता के अवयव का वर्णन सुन उन्हें बुलवा भेजा था। मदनसेन के आने पर महाराज ने पूछा—"क्यों तुम मगध में यवन-राजपति को देख आये हो ?" उसने कहा—"हाँ !" तब महाराज ने आज्ञा दी—"वह देखने में कैसा है, बताओ !" तब मदनसेन ने बख्तियार खिल्जी का जो यथार्थ रूप देखा था, वही प्रकट किया। कविता में भी वैसा ही वर्णन था। इसलिये उन्होंने गौड़-विजय और अपने राज्यनाशको निश्चय समझा।

पशु०—इसके बाद ?

शान्त०—तव राजा रोने लगे। उन्होंने कहा—"मैं इस बुढ़ापे में क्या करूँ ? देखता हूँ कि सपरिवार यवन के हाथों प्राण नष्ट होगा।" तब दामोदर ने शिक्षा के अनुसार कहा—"महाराज ! इस का सदुपाय यह है कि अवसर रहते आप सपरिवार तीर्थयात्रा करें। धर्माधिकार को राजकाज का भार दे जाइये। तभी आप के शरीर की रक्षा होगी। इसके बाद शास्त्र मिथ्या हो, तो अपना सुख फिर पायेंगे।" राजा ने इस सलाह से सन्तुष्ट हो नाव तैयार होने की आज्ञा दी है। शीघ्र ही सपरिवार तीर्थयात्रा करेंगे।

शान्तशील चला गया।

—: ० :—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२

बिना सूत का हार

पशुपति ऊँची अट्टालिका में बहुतेरे नौकरों के साथ निवास करते थे सही, किन्तु उनकी पुरी में कानन से भी अधिक अन्धकार है। जिससे घर में रोशनी होती है, स्त्री-पुत्र और परिवार--यह सब उनके घर नहीं था।

आज शान्तशील के साथ बातचीत के बाद पशुपति को इन सब बातों की याद आई। मन में सोचा--"इतने दिन बाद शायद अन्धकार-पुरी उज्ज्वल हुई। यदि जगदम्बा अनुकूल हों, तो मनोरमा इस अन्धकार को दूर करेगी।"

ऐसा ही सोचते-सोचते पशुपति ने शयन से पहले अष्टभुजा के नियमित प्रणाम-वन्दना के लिये देवी-मन्दिर में प्रवेश किया। प्रवेश करके देखा कि वहाँ मनोरमा बैठी हुई है।

पशुपति ने कहा--"मनोरमा, कब आई?" मनोरमा पूजा से बचे फूलों से बिना सूत्र की माला गूँथ रही थी। उसने इस बात का कोई जवाब न दिया। पशुपति ने कहा--"मुझसे बात करो! जब तक तुम रहती हो, तब तक मैं सारी यन्त्रणाओं को भूल जाता हूँ।"

मनोरमा ने मुँह उठा कर देखा। वह पशुपति के मुँह की ओर देखती रही, क्षणभर बाद उसने कहा—"तुमसे कुछ कहने आयी थी; किन्तु अब याद नहीं आता।"

पशुपति ने कहा—"तुम समझ लो, मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

पशुपति बैठे रहे, मनोरमा माला गूँथने लगी।

बहुत देर बाद पशुपति ने कहा—"मुझे भी कुछ कहना है, ध्यान

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

देकर सुनो। मैंने इस उम्र तक केवल विद्या उपार्जन किया है। विषय की आलोचना की है, अर्थोपार्जन किया है। मैंने संसार धर्म नहीं किया। जिसमें अनुराग रहा, वही किया है। दारपरिग्रह का अनुराग नहीं था, इसलिये उसे नहीं किया। किन्तु तब तक तुम मेरी निगाह में पड़ी। वहीं से मनोरमा का लाभ मेरा एकमात्र ध्यान हो गया है। उसी लाभ के लिये मैं इस कठोर व्रत में प्रवृत्त हुआ हूँ। यदि जगदीश्वरी अनुग्रह करें, तो दो-चार दिन में राज्य-लाभ कर तुमसे विवाह करूँगा। इस पर विधवा कह कर विघ्न है, उसका शास्त्रीय प्रमाण द्वारा मैं खण्डन कर सकूँगा। किन्तु उसमें दूसरा कि तुम कुलीन कन्या हो, जनार्दन शर्मा कुलीन श्रेष्ठ हैं, मैं श्रोत्रिय हूँ।"

सन्देह है कि मनोरमा इन सब बातों पर ध्यान दे रही थी या नहीं। पशुपति ने देखा कि मनोरमा का चित्त खो गया है। पशुपति सरला अविकृता बालिका मनोरमा को चाहते थे—प्रौढ़ाएँ तीक्ष्ण बुद्धि-शालिनी मनोरमा से भय करती थीं। किन्तु आज वह दूसरे भाव से सन्तुष्ट नहीं हुई। तब भी फिर कोशिश कर पशुपति ने कहा—"किन्तु कुलरीति तो श्रद्धामूलक है नहीं, इससे कुलनाश, धर्मनाश या जातिभ्रष्ट हुआ नहीं जा सकता। उनके अनजाने यदि तुमसे विवाह कर सकूँ, तो क्या हर्ज है? तुम्हारे राजी होने से ही ऐसा कर सकता हूँ। बाद को तुम्हारे पितामह जानेंगे, तो विवाह लौटा तो लेंगे नहीं।"

मनोरमा ने कोई जवाब नहीं दिया। सन्देह है कि उसने यह सब सुना या नहीं। एक काले रङ्ग की बिल्ली उसके पास आकर बैठी थी, वह बिना सूत की माला उसके गले में पहना रही थी। पहनाने में माला खुल गयी। तब मनोरमा अपने सिर से एक बाल तोड़ उसी से माला गूँथने लगी।

पशुपति कोई जवाब न पा चुपचाप माला के फूलों में मनोरमा की अँगुली की गति देख मुग्धलोचन से उसी ओर देखते रह गये।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

3

चिड़िया पिंजरे में

पशुपति मनोरमा का बुद्धिप्रदीप जलाने के लिये अनेक यत्न करने लगे, किन्तु फलोत्पत्ति कठिन हुई। अन्त में उन्होंने कहा—"मनोरमा, रात अधिक हो गई है, मैं सोने जाता हूँ।"

मनोरमा ने अम्लानवदन से कहा—"जाओ।"

पशुपति सोने नहीं गये; बैठ कर माला गूँथने लगे। फिर दूसरे उपाय के स्वरूप भयसूचक चिन्ता के आविर्भाव से कार्य सिद्ध होने के विचार से मनोरमा को डराने के लिये पशुपति ने कहा--"मनोरमा, यदि इसी समय यवन आ जायँ, तो तुम कहाँ जाओगी ?"

मनोरमा ने माला से मुँह न उठा कर कहा--"मकान में रहूँगी।"

पशुपति ने कहा--"मकान में तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ?"

मनोरमा ने पहले ही की तरह लापरवाही से कहा--"नहीं जानती; निरुपाय हूँ।"

पशुपति ने फिर पूछा--"तुम मुझसे क्या कहने के लिये मन्दिर में आई हो ?"

मनो०--देवता को प्रणाम करने।

पशुपति चिढ़े। उन्होंने कहा--"तुम से बिनती करता हूँ, मनोरमा, मैं अब जो कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो। तुम आज भी कह दो कि मुझसे विवाह करोगी या नहीं ?"

मनोरमा का माला गूँथना पूरा हो गया था--"वह उसे एक काली बिल्ली को पहना रही थी। पशुपति की बात उसके कान तक नहीं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पहुँची। बिल्ली माला पहनने में बहुत अनिच्छा प्रकट कर रही थी--जितनी बार मनोरमा उसके गले में माला पहनाती, उतनी बार वह माला से सिर निकाल लेती थी--मनोरमा कुन्द-निन्दित दाँतों से अधर काट जरा मुस्कुराहट के साथ उसके गले में माला पहनाती थी। पशुपति ने बहुत चिढ़ कर बिल्ली को एक थप्पड़ मारा--बिल्ली दुम उठाकर दूर भागी। मनोरमा ने वैसे ही होंठ काटते हुए हँसते-हँसते वह माला पशुपति के गले में डाल दी।

बिल्ली का प्रसाद अपने गले में पाकर राजप्रासाद के चोटी के धर्माधिकारी हतबुद्ध हो रहे। कुछ क्रोध भी आया; किन्तु अधरों से होंठ काटती हुई हास्यमयी की अनुपम रूपमाधुरी को देख उन का माथा घूम गया। उन्होंने मनोरमा का आलिंगन करने के लिये हाथ फैलाया--मनोरमा उछल कर दूर जा खड़ी हुई--राह में फन उठाये काले साँप को देख राह चलते जैसे दूर जा खड़े होते हैं, उसी तरह वह भी दूर खड़ी हो गई।

पशुपति अप्रतिभ हुए; क्षण भर मनोरमा के मुँह की ओर देख न सके। इसके बाद उन्होंने देखा--मनोरमा प्रौढ़ उम्र की हँसमुख महिमामयी सुन्दरी है।

पशुपति ने कहा--"मनोरमा, बुरा न मानना। तुम मेरी पत्नी हो, मुझसे विवाह करो।"

मनोरमा ने पशुपति की ओर तीव्र कटाक्ष कर कहा--"पशुपति! केशव की कन्या कहाँ है ?"

पशुपति ने कहा--"मैं नहीं जानता कि केशव की कन्या कहाँ है--जानना चाहता भी नहीं। तुम मेरी एकमात्र पत्नी हो!"

मनो०--मैं जानती हूँ, बताऊँ केशव की लड़की कहाँ है ?

पशुपति आश्चर्य से मनोरमा के मुँह की ओर देखते रह गये।

मनोरमा कहने लगी--"एक ज्योतिषी ने गणना कर बताया था कि केशव की लड़की थोड़ी उम्र में विधवा हो पति के साथ सती होगी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

इस बात से केशव कम उम्र में ही अपनी लड़की छूटने के भय से बहुत दुःखित हुए। उन्होंने धर्मनाश के भय से लड़की का विवाह किया, किन्तु विधि लिखी को खण्डन समझ विवाह की रात को ही लड़की को लेकर प्रयाग भाग गये। उनका अभिप्राय यह था, कि उनकी लड़की स्वामी की मृत्यु का समाचार कभी जान ही न सके। दैवाधीन कुछ ही दिन बाद प्रयाग में केशव की मृत्यु हुई। उनकी लड़की की माता पहले ही मर चुकी थी—मृत्यु के समय केशव ने हेमवती को आचार्य के हाथ सौंप दिया। मरने के समय केशव आचार्य से कह गये--"इस अनाथा लड़की को अपने घर में रख इसका प्रतिपालन करें। इसके पति पशुपति हैं--किन्तु ज्योतिषी लोग कह गये हैं कि यह थोड़ी उम्र में पति के साथ सती होगी। इसलिये आप मेरे सामने स्वीकार करिये, कि इस लड़की से कभी यह न कहियेगा, कि पशुपति इसके स्वामी हैं। साथ ही पशुपति से भी कभी प्रकट न कीजियेगा, कि यह उनकी स्त्री है।"

आचार्य ने ऐसा ही स्वीकार किया। तब से उन्होंने उसको अपने परिवार में प्रतिपालन कर तुम्हारे साथ विवाह होने की बात छिपा रखी है।"

पशु०—इस समय वह कन्या कहाँ है ?

मनो०—मैं ही केशव की लड़की हूँ। जनार्दन शर्मा उसके आचार्य हैं।

पशुपति घबरा उठे; उनका माथा चकराने लगा। उन्होंने कुछ न कहकर प्रतिमा के आगे साष्टांग प्रणाम किया। फिर उठकर मनोरमा को छाती से लगाने गये। मनोरमा पहले की तरह हट गई। उसने कहा--"अभी नहीं-कुछ और भी बातें हैं।"

पशु०—मनोरमा--राक्षसी, तूने अब तक मुझे क्यों अन्धकार में रखा था ?

मनो०--क्यों ? क्या तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करते ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पशु०--मनोरमा, तुम्हारी बात पर मैंने कब अविश्वास किया है ? फिर यदि मुझे शुबहा होता, तो मैं जनार्दन शर्मा से पूछ लेता।

मनो०—तो क्या जनार्दन उसे प्रकट करते ? वह शिष्य के आगे प्रतिज्ञा से बँधे हुए हैं।

पशु०--तब उन्होंने तुमसे क्यों प्रकट किया ?

मनो०--उन्होंने मुझ से नहीं कहा। एक दिन छिपकर ब्राह्मणी से कह रहे थे। मैंने दैवात् छिपकर सुन लिया। और भी, मैं लोगों के आगे विधवा बताई जाती हूँ। तुम मेरी बात पर विश्वास कर लेते, लेकिन लोग कैसे विश्वास करते ? तुम लोगों के आगे निन्दनीय न होकर कैसे मुझे ग्रहण करते ?

पशु--मैं सब लोगों को इकट्ठा कर उन्हें समझा देता।

मनो०--अच्छा, ऐसा ही हो, लेकिन ज्योतिषियों की गणना ?

पशु०--मैं ग्रहशान्ति कराता। अच्छा, जो होना था, वह हो गया। अब यदि मुझे रत्न मिला है, तो उसे गले से क्यों उतारूँ। अब तुम मेरा घर छोड़कर जा न सकोगी।

मनोरमा ने कहा--यह घर छोड़ना होगा। पशुपति ! मैं आज जो कहने आई थी, वह सुनो। यह घर छोड़ दो। अपने राज्य पाने की दुराशा छोड़ दो। मालिक के अहित की चेष्टा छोड़ दो। यह देश छोड़कर चलो, हम लोग काशी धाम चलें। वहाँ ही मैं तुम्हारी चरण-सेवा कर अपना जन्म सार्थक करूँगी। जिस दिन हम लोगों की आयु समाप्त होगी, उस दिन एक साथ परम धाम की यात्रा करेंगे। यदि यह स्वीकार करो, तो मेरी भक्ति अचला रहेगी--नहीं तो--"

पशु०--नहीं तो क्या ?

तब मनोरमा ने शिर उठा और आँखों में आँसू भर कर देवी-प्रतिमा के सामने हाथ जोड़ गद्गद कण्ठ से कहा--"नहीं, तो देवी के सामने शपथ करती हूँ, हमारी-तुम्हारी यही मुलाकात है, इस जन्म में फिर मुलाकात न होगी।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पशुपति भी देवी के सामने हाथ जोड़ खड़े हुए। उन्होंने कहा—"मनोरमा, मैं भी शपथ करता हूँ। मेरा जीवन रहते तुम मेरा घर छोड़कर जा न सकोगी। मनोरमा, मैंने जिस राह पर पैर रखा है, उस राह से लौटने का उपाय होता, तो मैं लौट जाता—तुम्हें लेकर सर्व-त्यागी हो काशी यात्रा करता। किन्तु बहुत आगे बढ़ गया हूँ—अब लौटने का उपाय नहीं; जो गाँठ लगाई है, उसे अब खोल नहीं सकता—धारा में नाव छोड़ अब लौटा नहीं सकता। जो होना था, हो गया। क्या इसीके लिए मैं अपने चरम सुख से वंचित होऊँ? तुम मेरी स्त्री हो, मेरे भाग्य में जो हो, मैं तुम्हें गृहिणी बनाऊँगा। तुम क्षणभर ठहरो, मैं अभी आता हूँ।"

यह कह पशुपति मन्दिर से निकल गये। मनोरमा के चित्त में संशय उत्पन्न हुआ। वह चिन्तित हृदय से कुछ देर मन्दिर में खड़ी रही। अब पशुपति से विदा लिये बिना जा नहीं सकती थी।

थोड़ी ही देर में पशुपति लौट आये। उन्होंने कहा—"प्राणाधिके! अब आज तुम मुझे छोड़कर जा न सकोगी। मैं सब दर्वाजे बन्द कर आया हूँ।"

मनोरमा चिड़िया पिंजरे में बन्द हो गई।

—:o:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

४

यवनदूत या यमदूत

दिन एक पहर के समय नगरवासियों ने विस्मित हो देखा, कि किसी अपरिचित जाति के सत्रह सवार सड़क से होते हुए राज-भवन की ओर जा रहे हैं। उनके आकार और इशारे को देख नवद्वीपवासी धन्यवाद देने लगे। उनका शरीर लम्बा-चौड़ा, लम्बा और पुष्ट; उनका वर्ण तपे सोने के समान था। उनका मुँह चौड़ा, घनी काली दाढ़ियों से सुशोभित थे; आँखें बड़ी-बड़ी, चमकदार। उनका पहनावा अनर्थक जगमगाहट से शून्य था; उनका वेश योद्धाओं जैसा; सर्वांग ढके हुए जिरह बख्तर; आँखों में दृढ़ प्रतिज्ञा थी। और जिन सब सिन्धु पार के घोड़ों की पीठ पर वह लोग चढ़े आ रहे थे, वह घोड़े भी बड़े मनोहर हैं। पत्थर के शिलाखण्ड की तरह उनका आकार, बृहद् विमार्जित देह, टेढ़ी गदन, लगाम की संभाल से असहिष्णु तेजोगर्व से नाच रहे थे। सवार उसके चलाने में कौशली थे—वह बहुत ही सहज में उन रुकी हुई हवा के समान तेज घोड़ों को दमित कर रहे थे। देखकर गौड़वासियों ने बहुत प्रशंसा की।

सत्रहो सवार दृढ़ प्रतिज्ञा से होंठों को चबाते चुपचाप राजपुर की ओर चले। कौतूहलवश किसी नगरवासी ने उनसे कुछ पूछा, उनके साथ के भाषा जानने वाले आदमी ने कहना शुरू किया—"यह यवन राजा के दूत हैं।" यही कह इन लोगों ने प्रान्तपाल, और कोष्ठपालों को भी परिचय दिया था—पशुपति की आज्ञा से उसी परिचय से उन लोगों ने नगर में प्रवेश किया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

एक दो सवार राजद्वार पर पहुँचे। वृद्ध राजा की शिथिलता और पशुपति के कौशल से राजपुरी प्रायः रक्षकहीन है। राजसभा भंग हो गई थी--पुरी में केवल पुरवासी थे। थोड़े से दरवान दर्वाजे की रक्षा कर रहे थे। एक दरवान ने पूछा--"तुम लोग किसलिये आये हो?"

यवनों ने उत्तर दिया--"हमलोग यवन-राजपति के दूत हैं, गौड़ के राजा के साथ मुलाकात करेंगे।"

दर्वान ने कहा--"महाराजाधिराज गौड़ेश्वर इस समय जनानखाने में गये हैं--अभी मुलाकात न होगी।"

यवन लोग कहना न मान खुले द्वार में प्रवेश करने पर उद्यत हुए। सब से आगे एक नाटा मोटा कुरूप यवन था। दुर्भाग्यवश दर्वान उसको रोकने के लिये हाथ में शूल लेकर सामने खड़ा हो गया। उसने कहा--"लौट जाओ, नहीं तो मार दूँगा।"

"तू खुद ही मर" यह कह नाटे यवन ने दर्वान के हाथ की तलवार से उसे काट डाला। दर्वान मर गया। तब अपने साथियों का झुण्ड देखकर नाटे यवन ने कहा--"अब अपना-अपना काम करो।" इसी समय वहाँ वाचाहीन सोलहो यवनों की कमर से सोलह तलवारें निकल पड़ीं--और बिजली गिरने की तरह उन लोगों ने दर्वानों पर आक्रमण किया। दर्वान लोग लड़ने की तैयारी में नहीं थे--एकाएक निरुद्योग हमला होने से आत्मरक्षा की कोई चेष्टा कर न सके--देखते-देखते सब मारे गये।

नाटे यवन ने कहा--"यहाँ जिसे पाओ, उसे मारो। पुरी अरक्षिता है। वृद्ध राजा को भी मार डालो।"

तब यवन ने बिजली की तरह पुरी में प्रवेश कर बाल-वृद्ध-वनिता जहाँ जो पुरवासी दिखाई दिया, उसका शिर तलवार से काट लिया या भाले से मार दिया।

पौरजन भयानक आर्तनाद कर इधर-इधर भागने लगे। यह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

घोर आर्तनाद, जहाँ वृद्ध राजा भोजन कर रहे थे, वहाँ तक पहुँचा। उनका मुँह सूख गया। उन्होंने पूछा--"क्या हुआ, यवन आ गये ?"

भागने में लगे पुरवासियों ने कहा--"यवन सबको मारकर आपका वध करने आ रहे हैं।"

मुँह का ग्रास राजा के मुँह से गिर गया। उनका सूखा शरीर पानी के सोते में पड़े बेंत की तरह काँपने लगा। पास ही राजरानी थी--राजा को भोजन की थाली पर गिरते देख रानी ने उनका हाथ पकड़ लिया; कहा--"चिन्ता नहीं, आप उठिये।" यह कह उन्होंने उनका हाथ पकड़ कर उठाया। राजा पुतले की तरह खड़े रहे।

रानी ने कहा--"चिन्ता क्या है ? नाव में सब सामान पहुँच गया है; चलिये हम लोग खिड़की की राह से सोना गाँव चले चलें।"

यह कह रानी ने राजा के बिना धोये हाथ को पकड़ खिड़की की राह से सुवर्ण गाँव की यात्रा की। उसी राजकुलकलंक-असमर्थ राजा के साथ गौड़राज्य की राजलक्ष्मी भी चली गई।

सोलह साथियों को लेकर बन्दर की शक्ल के बख्तियार खिलजी ने गौड़ेश्वर को राजपुरी पर अधिकार कर लिया।

साठ वर्ष के बाद यवन-इतिहास-वेत्ता मिनहाज-उद्दीन ने ऐसा ही लिखा है। इसमें कहाँतक सत्य है और कहाँतक झूठ, इसे कौन जाने। जब मनुष्य के लिखे चित्र में सिंह पराजित होता है, मनुष्य ने सिंह का अपमान करने के लिये चित्र लिखा था, तब सिंह के हाथ में चित्र-फलक दिया जाता, तो वह कैसा चित्र लिखता ? इसमें सन्देह नहीं, कि मनुष्य चूहे के समान जान पड़ता। मन्दभागिनी वङ्गभूमि पहले ही से दुर्बला है, उस पर यवन के हाथ का चित्र फलक।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

५

जाल टूटा

● ● ●

गौड़ेश्वर के घर में बैठे-बैठे ही बख्तियार खिलजी ने धर्माधिकार के पास दूत भेजा। धर्माधिकार से मुलाकात की इच्छा प्रकट की। उनके साथ यवनों का सन्धि बन्धन हुआ था, उसके फल उत्पन्न होने का समय आ गया।

पशुपति इष्टदेवी को प्रणाम कर, क्रुद्ध मनोरमा से विदा ले, कुछ उल्लसित कुछ शंकित हृदय से यवन के पास पहुँचे। बखितयार खिलजी ने उठकर उनका सादर अभिवादन किया और कुशल-मंगल पूछा। पशुपति राजा के दासों के खून से पैर धोते हुये आये थे, सहसा कोई जवाब दे न सके। बख्तियार खिलजी ने उनके चित्त का भाव समझकर कहा—"पण्डितवर! राजसिंहासन पर बैठने की राह कोई फूलों की राह नहीं। इस राह पर चलने से मित्रों की लाश और शिर सदा पैरों से ठुकराता है।"

पशुपति ने कहा—"सही है। किन्तु जो विरोधी हैं, उनका ही वध आवश्यक है। यह निर्विरोधी हैं।"

बख्तियार ने कहा—"क्या आप खून देखकर अपने अंगीकार को याद कर दुःखी ही रहे हैं?"

पशुपति ने कहा—मैंने जो स्वीकार किया है, वह अवश्य करूँगा। महाशय भी वैसा ही करेंगे, इसमें कोई संशय नहीं।

बख्ति०—कुछ भी सन्देह नहीं। केवल हम लोगों की एक माँग है।

पशु०—फर्माइये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

बख्ति०—कुतुबुद्दीन ने गौड-शासन का भार आप के हाथ अर्पित किया। आज से आप वङ्गराज-प्रतिनिधि होंगे। किन्तु यवन-सम्राट् ने संकल्प किया है, कि इस्मालधर्मावलम्बी हुए बिना कोई उनके राजकाज में शामिल नहीं हो सकता। आपको इस्लाम धर्म ग्रहण करना पड़ेगा।

पशुपति का मुँह सूख गया। उन्होंने कहा—"सन्धि के समय इस प्रकार की कोई बात नहीं हुई।"

बख्ति०—अगर न हुई हो, तो वह भूल है। फिर इस बात के न उठाने पर भी आप जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को अनायास ही समझ लेना चाहिये। क्योंकि ऐसा कभी सम्भव नहीं, कि मुसलमान बंगाल को जीत-कर फिर हिन्दू को राज्य दे देंगे।

पशु०—मैं आपके सामने बुद्धिमान् साबित न हो सका।

बख्ति०—न समझे हों, तो अब समझिये, आप यवन धर्म ग्रहण करने के लिए तैयार हो जायें।

पशु०—(दर्प के साथ)—मैंने स्थिर संकल्प कर लिया है, यवन सम्राट् से राज्य पाने के लिये मैं सनातन धर्म को छोड़ नरकगामी न होऊँगा।

बख्ति०— यह आपकी भूल है। जिसे आप सनातनधर्म कहते हैं, उसमें भूतों की पूजा मात्र है। कुरान में लिखा धर्म ही सत्य धर्म है। मुहम्मद को याद कर इहकाल और परकाल का मङ्गल साधन कीजिये।

पशुपति यवन की शठता समझ गये। उसका अभिप्राय केवल इतना ही है कि यह कार्य सन्धि करने के बाद लिखी हुई सन्धि को भंग कर देगा। और भी समझ गये, कि छल से न होगा, तो बल से काम करेंगे। इसलिये कपटी के साथ कपट का अवलम्बन न करके मैंने नाहक दर्प किया। उन्होंने क्षणभर विचार करने के बाद कहा—"जो आज्ञा हो, मैं आज्ञानुवर्ती होऊँगा।"

बख्तियार उनके मन का भाव समझ गये। बख्तियार यदि पशुपति से अधिक चतुर न होते, तो इतने सहज में गौड़विजय कर न सकते।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

वङ्गभूमि के अदृष्ट-लेख में यही है, कि भूमि युद्ध से न जोती जायगी। चतुरता ही में इसकी जय है। चतुर क्लाइव साहब इसके द्वितीय परिचयस्थान हैं।

बख्तियार ने कहा—"अच्छा, अच्छी बात है। आज हम लोगों के लिए प्रथम दिन है। ऐसे काम में देर की जरूरत नहीं। हम लोगों के पुरोहित तैयार हैं, अभी आपको मुसलमान धर्म में दीक्षित कर देंगे।"

पशुपति ने देखा, कि सर्वनाश है। कहा—"कुछ देर के लिये मौका दीजिये। अपने परिवार को ले आऊँ, तब सपरिवार एक साथ दीक्षित होऊँगा।"

बख्तियार ने कहा—"मैं उनके बुलाने के लिए आदमी भेजता हूँ। आप इस पहरेदार के साथ जाकर विश्राम करें।"

सिपाही ने आ कर पशुपति को पकड़ा, पशुपति ने क्रुद्ध होकर कहा—"यह क्या? क्या मैं कैदी हूँ?" बख्तियार ने कहा—"अभी तो वही हो।"

पशुपति राजपुरी में बन्द कर दिये गये। मकड़ी का जाल फट गया—वह उस जाल में आप ही फँस गये।

मैंने पाठक महाशयों के आगे बुद्धिमान् के नाम से पशुपति का परिचय दिया है। पाठक महाशय कहेंगे, कि जिसने शत्रु पर इतना विश्वास किया, सहायहीन होकर उन लोगों को अधिकृत पुरी में प्रवेश कराया, उसमें चतुरता कहाँ? किन्तु आप विश्वास न करें, तो हम क्या करें। ऐसा विश्वास न करने से युद्ध करना पड़ता। मकड़ी जाला बुनती है, युद्ध नहीं करती।

उसी रात महावन से बीस हजार यवन आ कर नवद्वीप में फैल पड़े। नवद्वीप जीत लिया गया। उस दिन वहाँ का जो सूर्य अस्त हुआ, वह फिर उदित न हुआ। क्या अब उदित न होगा? उदय और अस्त दोनों ही स्वाभाविक नियम हैं।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

६

पिँजरा टूटा

● ● ●

जब तक पशुपति घर में रहे जब तक मनोरमा को नजर ही नजर में रखा। जब वह यवनों से मिलने गये, तब उन्होंने घर के सब दर्वाजे बन्द कर शान्तशील को घर की रक्षा के लिये बैठा दिया।

पशुपति के जाते ही मनोरमा भागने का उद्योग करने लगी। घर के कोने में ढूँढने लगी। भागने के लायक उसे कोई रास्ता खुला न दिखाई दिया। बहुत ऊँचाई पर कुछ खिड़कियाँ थीं, किन्तु वह चढ़ने लायक नहीं थीं। उसमें से मनुष्य शरीर के निकलने की संभावना नहीं थी। और वह जमीन से इतना ऊँचा था, कि वहाँ से कूदने पर जमीन में हड्डी चूर होने की सम्भावना थी। मनोरमा पगली है, उसने वहीं से निकल जाने की इच्छा की।

अतएव पशुपति के जाने के क्षणभर बाद ही मनोरमा पशुपति के घर में पलँग पर लेट रही। पलँग से रोशनदान पर चढ़ना सहज था। पलँग से रोशनदान में जा पहले दोनों हाथ, पीछे शिर, फिर छाती तक बाहर निकाल दिया। रोशनदान के पिछवाड़े बाग के आम के पेड़ को सुडौल डाल दिखाई दी; मनोरमा ने उसे पकड़ लिया और रोशनदान से निकल शाखाके सहारे जमीन पर आ गई। कोमल शाखा उसके भार से झुक पड़ी। भूमि उसके पैरों से समीप आ गई। मनोरमा शाखा छोड़कर सहज ही जमीन में आ गई और जरा भी देर न कर फौरन जनार्दन के घर की ओर चली।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

७

यवन-विप्लव

उस रात नवद्वीप नगर विजयोन्मत्त यवन-सेना के अत्याचार से वायु के चपेट से तरंगें लेते हुए सागर के समान चंचल हो उठा। राजपथ बहुतेरे पैदलों बहुतेरे खंगी धनुषी भाले आदि के समारोह से भर उठा। सेना-बलहीन राजधानी के नागरिक डर से अपने-अपने घर में घुस रहे। लोग दर्वाजा बन्द कर भय के साथ इष्ट नाम का जप करने लगे।

यवनों ने सड़क पर जिन अभागे आश्रयहीनों को पाया, उन्हें शूल से मारकर बन्द मकानों के दर्वाजों पर आक्रमण किया। वह सब कहीं दर्वाजा तोड़कर, कहीं दीवार फाँदकर, कहीं कहीं अत्यन्त डरे हुए व्यक्ति को रक्षित रखने की आशा दे घर में प्रवेश करने लगे। घर में घुसकर गृहस्थों का सर्वस्व अपहरण कर बाद को स्त्री-पुरुष-बालक-वृद्ध सबके ही शिर को काटने लगे। केवल युवती के लिए स्वतन्त्र नियम था।

खून से गृहस्थों का घर लथपथ होने लगा। सड़कों पर खून का कीचड़ बन गया। खून से यवन सेना लाल हो गई। लूटे हुए माल के भार से घोड़ों की पीठ और मनुष्यों का कन्धा दुखने लगा। भाले में छिदे हुए ब्राह्मणों के मुण्ड भीषण भाव प्रकट करने लगे। ब्राह्मणों के यज्ञोपवीत घोड़ों के गले में लटकने लगे। सिंहासन में रखी शालग्राम शिलायें यवनों की ठोकरों से लुड़कने लगीं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

भयानक शब्द से रात का आकाश गूँज उठा। घोड़ों के टाप, सैनिकों के शोर, हाथी के चिंघाड़, यवनों के जय शब्द, उस पर घायलों की कराह, माता का रोना, बच्चों का रोना, वृद्धों की करुणा की आकांक्षा और युवतियों का गला फटने लगा।

जिस वीर पुरुष को माधवाचार्य इतने आदर से यवनों के दमन के लिये नवद्वीप में ले आये थे, वह इस समय कहाँ है ?

इस भयानक यवन प्रलय काल में हेमचन्द्र युद्ध नहीं कर रहे थे। अकेले युद्ध कर के क्या करेंगे ?

हेमचन्द्र इस समय अपने शयन-मन्दिर में शय्या के ऊपर सोये हुए थे। नगर के आक्रमण का कोलाहल उनके कानों तक पहुँचा। उन्होंने दिग्विजय से पूछा--"यह कैसी आवाज है ?"

दिग्विजय ने कहा--"यवन-सेना ने नगर पर आक्रमण किया है।"

हेमचन्द्र चौंक पड़े। उन्होंने अब तक बख्तियार द्वारा राजपुरी पर अधिकार और राजा के भागने का हाल नहीं सुना। दिग्विजय ने विशेष रूप से हेमचन्द्र को सब सुना दिया।

हेमचन्द्र ने कहा--"नागरिक क्या कह रहे हैं ?"

दिग०--जो भाग सकता है वह भागता है, जो नहीं भाग सकता, वह मारा जाता है।

हेम०--और गौड़ीय सेना ?

दिग्०--किस के लिये युद्ध करे ? राजा भाग गये। इसलिये लोग अपनी-अपनी राह देख रहे हैं।

हेम०—मेरा घोड़ा कसो।

दिग्विजय ने विस्मित होकर पूछा—"कहाँ जायेंगे ?"

हेम०—नगर में।

दिग्वि०—अकेले ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हेमचन्द्र ने भौंह तरेरी, उनकी भौहों को देख दिग्विजय डरा और घोड़ा कसने लगा।

तब हेमचन्द्र बहुमूल्य रण-सज्जा से सज्जित हो सुन्दर घोड़े पर सवार हुए और भीषण शूल हाथमें ले झरने से बह चली धारा की भाँति उस असीम यवन-सेना-सागर में कूद पड़े।

हेमचन्द्र ने देखा कि यवन युद्ध नहीं कर रहे हैं, केवल लूट रहे हैं। युद्ध के लिये कोई उनके सामने नहीं आया, उनका ध्यान ही युद्ध की ओर नहीं था। जो लोग लुट रहे थे, उनको ही लूटने के समय बिना युद्ध के ही मारते थे। इसलिये यवनों ने दल बाँधकर हेमचन्द्र को नष्ट करने का का कोई उद्योग नहीं किया। जिस यवन ने उनके द्वारा आक्रान्त हो उनसे युद्ध किया, वह उसी समय मारा गया।

हेमचन्द्र चिढ़े। वह युद्ध की इच्छा से आये थे, किन्तु यवन पहले ही जीत चुके थे। वे लूट का धन छोड़ उनसे कायदे से नहीं लड़े। उन्होंने मन में सोचा—"वृक्ष के एक-एक पत्ते तोड़ने से जंगल को कोई कैसे बिना पत्तेका कर सकता है? एक-एक यवन को मारकर क्या करूँगा? यवन लड़ते नहीं—तब यवनों के वध में क्या सुख है? बल्कि गृहस्थों को रक्षा की सहायता पहुँचाना अच्छा। हेमचन्द्र वही करने लगे। किन्तु विशेष कृतकार्य हो न सके। दो यवन उनके साथ लड़ने लगते थे, तब तक तीसरा गृहस्थों का सर्वस्व हरण कर ले जाता है। जो हो, हेमचन्द्र यथासाध्य पीड़ितों का उपकार करने लगे। राह किनारे एक कुटी के भीतर से हेमचन्द को आर्तनाद सुनाई दिया। यवनों द्वारा सताये जाने-वाले व्यक्ति का आर्त्तनाद समझ हेमचन्द्र घर में घुस गये।

देखा, कि घर में यवन नहीं हैं, किन्तु घर में यवनों के दौरात्म्य के निशान बने हुए हैं। घर में माल असबाब कुछ नहीं, जो है वह टूटी-फूटी हालत में और एक ब्राह्मण घायल हो जमीन में पड़ा आर्तनाद कर रहा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

है। उसे इतनी गहरी चोट लगी है कि मृत्यु समीप है। हेमचन्द्र को देख वह यवन के भ्रम में कहने लगा, "आओ--मारो--शीघ्र मारो--मारो--मेरा शिर काटकर इस राक्षसी को दो। ओह! प्राण--प्राण जाता है, पानी! पानी! पानी! कौन पानी देगा?"

हेमचन्द्र ने पूछा--"तुम्हारे घर में पानी है?"

ब्राह्मण कातरोक्ति के साथ कहने लगा--"नहीं मालूम--पानी--याद नहीं, पानी! पानी! पिशाची!--उसी पिशाची के कारण मेरा प्राण गया।"

हेमचन्द्र ने कुटी में खोज कर देखा, एक घड़े में पानी है। बर्तन न होने से उन्होंने पत्ते से उसे पानी पिलाया। ब्राह्मण ने कहा--"नहीं! नहीं! पानी न पिऊँगा! यवन के हाथ पानी न पिऊँगा।"

हेमचन्द्र ने कहा--"मैं यवन नहीं--मैं हिन्दू हूँ--मेरे हाथ का पानी पी सकते हो। मेरी बातों से तुम नहीं पहचानते?"

ब्राह्मण ने पानी पिया। हेमचन्द्र ने कहा--"तुम्हारा और क्या उपकार करूँ?"

ब्राह्मण ने कहा--"और क्या करोगे? मैं मरा! मरा! जो मरता हो, उसके लिये क्या करना?"

हेमचन्द्र ने पूछा--"तुम्हारे कोई है? उसे मेरे पास रख जाओ।"

ब्राह्मण ने कहा--"और कौन है? और कौन है? बहुत है। उसमें वह राक्षसी! वह राक्षसी है, उससे भी कहना--कहना--मेरे अपराध का बदला मिल गया।"

हेमचन्द्र--वह कौन है, किस से कहूँ?

ब्राह्मण कहने लगा--"कौन?-वह पिशाची! पिशाची को नहीं पहचानते? पिशाची मृणालिनी--मृणालिनी--मृणालिनी पिशाची है?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ब्राह्मण अधिक कराहने लगा। हेमचन्द्र मृणालिनी का नाम सुन चौंक पड़े। उन्होंने पूछा--"मृणालिनी तुम्हारी कौन है?"

ब्राह्मण ने कहा--"मृणालिनी कौन है? कोई नहीं--मेरे लिये यम।"

हेम०--मृणालिनी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

ब्राह्म०--क्या बिगाड़ा?--कुछ नहीं--मैंने उसकी दुर्दशा की है, उसका बदला पाया।

हेम०--क्या दुर्दशा की है?

ब्राह्मण--अब, बोल नहीं सकता, पानी दो।

हेमचन्द्र ने फिर उसे पानी पिलाया। ब्राह्मण के पानी पीकर स्थिर होने पर हेमचन्द्र ने उससे पूछा--तुम्हारा नाम क्या है?

ब्राह्मण--व्योमकेश!

हेमचन्द की आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलीं। उन्होंने दाँतों से होंठ चबाया। हाथ के शूल को मुट्ठी ने कस लिया। फिर उसी समय शान्त होकर उन्होंने पूछा--"तुम कहाँ के रहने वाले हो?"

ब्राह्मण--गौड़--गौड़ नहीं जानते? मृणालिनी हमारे घर में रहती थी।

हेम०--इसके बाद?

ब्राह्मण--इस के बाद--और क्या? इस के बाद मेरी यह दशा है—मृणालिनी पापिष्ठा! बड़ी निर्दयी है--मेरी ओर उसने पलट कर भी न देखा। क्रोध से मैंने अपने पिता के आगे उसके नाम झूठा कलंक लगाया। पिता ने उसे बिना दोष के निकाल दिया राक्षसी! राक्षसी! हम लोगों को छोड़कर चली गई।

हेम०--तब तुम उसे गाली क्यों दे रहे हो?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ब्राह्मण--क्यों, क्यों ? गाली, गाली क्यों न दूँ ? मृणालिनी ने पलट कर मेरी ओर देखा भी नहीं। मैं--उसे देखकर जीवन--जीवन धारण करता था। वह चली आई, तभी--तभी से मैंने सब त्याग दिया। उसके लिए किस किस देश न गया। कहाँ उस पिशाची को नहीं ढूँढा ? गिरिजाया--भिखारी की लड़की--उसकी नानी ने बताया--कहाँ नवद्वीप में है। नवद्वीप में आया--कोई पता नहीं। यहाँ यवन के हाथ मारा गया--राक्षसी के लिये मैं मरा। मुलाकात हो, तो कहना, कि मुझे पाप का फल मिल गया।

व्योमकेश आगे बोल न सका। वह परिश्रम से बिलकुल निर्जीव हो पड़ा था। बुझने वाला दीपक बुझ गया। क्षण भर में विकट मुँह बनाकर व्योमकेश ने प्राण त्याग किया।

हेमचन्द्र अब खड़े न रहे। फिर उन्होंने यवनों का वध नहीं किया। किसी तरह राह में आके घर लौटे।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मृणालिनी को सुख क्या

● ● ●

जहां हेमचन्द्र उसे सीढ़ियों के पत्थर की चोट से व्यथित कर छोड़ गये थे--मृणालिनी अब भी वहीं है। उसके लिये संसार में और कहीं जाने की जगह न थी–सर्वत्र समान था। रात का सवेरा हुआ, गिरिजाया ने बहुत कुछ कहा। मृणालिनी ने कोई जवाब नहीं दिया, सिर झुकाये बैठ रही। स्नान और भोजन का समय हुआ–गिरिजाया ने उसे पानी में उतार कर स्नान कराया। स्नान करके मृणालिनी गीले कपड़े से वहीं बैठी रही। गिरिजाया मृणालिनी को उठा न सकी। साहस करके बार-बार कह भी न सकी। इसलिये उसने समीप के वन से कुछ फल मूल संग्रह कर मृणालिनी को दिया। मृणालिनी ने उसे छू भर लिया। प्रसाद गिरजाया ने खाया–मारे भूख के उसने मृणालिनी के लिये नहीं छोड़ा।

इस तरह पूर्व के सूर्य मध्य आकाश में, मध्य आकाश के सूर्य पश्चिम में गये। सन्ध्या हुई। गिरिजाया ने देखा कि फिर भी मृणालिनी घर जाने के लक्षण प्रकट नहीं कर रही है। गिरिजाया बहुत घबराई। पहली रात जागते बीती, इस रात भी जागने का आकार है। गिरिजाया कुछ न बोली–उसने पत्ती पत्ते इकट्ठे कर सीढ़ी के ऊपर अपना बिस्तर बना लिया। मृणालिनी ने उसका मतलब समझकर कहा–'तुम घर जाकर सो रहो, गिरि।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरिजाया मृणालिनी की बातें सुन आनन्दित हुई। उसने कहा—"एक साथ चलेंगे।"

मृणालिनी ने कहा—"मैं तो चल रही हूँ।"

गिरि०—तबतक मैं तुम्हारे आसरे रहूँगी। भिखारिन के दो पत्ते बिछाकर सोने में क्या हर्ज है? किन्तु हिम्मत पाऊँ तो कहूँ—राजपुत्र से इस जीवन में अब सम्बन्ध छूटा—तब हम लोग कार्तिक की इस ओस में कष्ट क्यों सहें?

मृणा०—गिरिजाया, हेमचन्द्र से इस जन्म में मेरा सम्बन्ध दूर न होगा। मैं कल भी हेमचन्द्र की दासी थी आज भी हेमचन्द्र की दासी हूँ।

गिरिजाया को बड़ी चिढ़ हुई—वह उठके बैठ गई। उसने कहा—"मालकिन, तुम अब भी कह रही हो कि तुम उस पाषण्ड की दासी हो। अगर तुम उनकी दासी हो, तो मैं चली। अब मेरी यहाँ कोई जरूरत नहीं।

मृणा०—गिरिजाया, यदि हेमचन्द्र तुम्हें तकलीफ देते हों, तो तुम दूसरों के आगे उनकी निन्दा करना। हेमचन्द्र ने मुझपर कोई अत्याचार नहीं किया। मैं क्यों उनकी निन्दा सहूँ? वह राजपुत्र हैं, मेरे पति हैं; उन्हें पाषण्ड न कहो।

गिरिजाया और भी चिढ़ी। बड़े यत्न से बिछाई पत्तों की शय्या को नोच-खसोट कर फेंकने लगी। उसने कहा—"पाखण्ड न कहूँ? एक बार कहूँगी?" (उसने शय्या के कुछ पत्ते पानी में फेंक दिये) "एकबार कहूँगी?—दस बार कहूँगी (फिर कुछ पत्ते फेंककर) सौ बार कहूँगी, (फिर पत्ते फेंककर) हजार बार कहूँगी।" इसी तरह उसने सब पत्ते पानी में फेंक दिये। कहने लगी—"पाषण्ड न कहूँ? किस दोष पर उन्होंने तुम्हारा इतना तिरस्कार किया?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मृणा०—"यह मेरा ही दोष है—मैं समझाके सब बातें उनसे कह न सकी। क्या कहने को और क्या कह गई।"

गिरि०—अपना सिर टटोल कर देखो।

मृणालिनी ने ललाट पर हाथ फेरा।

गिरि०—क्या देखा?

मृणा०—दर्द है।

गिरि०—कैसे दर्द हुआ?

मृणा०—याद नहीं।

गिरि०—तुमने हेमचन्द्र के कन्धे पर माथा रखा था। झटककर चले गये। पत्थर पर गिरने से तुम्हारे सिर में चोट आई है।

मृणालिनी ने क्षणभर के लिये विचार किया—उसे कुछ याद न आया। उसने कहा—"याद नहीं। हो सकता है कि मैं आप ही गिर गई होऊँ।"

गिरिजाया विस्मय में आई। उसने कहा—"इस संसार में तुम सुखी हो।"

मृणा०—क्यों?

गिरि०—तुम क्रोध न करो।

मृणा०—मैं सुखी हूँ—किन्तु उसके लिये नहीं।

गिरि०—तब कैसे?

मृणा०—हेमचन्द्र से मुलाकात हो गई।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

स्वप्न

● ● ●

गिरिजाया ने कहा—"घर चलो।" मृणालिनी ने कहा—"नगर में यह कैसा शोर है?"

बहुत शोर सुन दोनों को शङ्का हुई। गिरिजाया ने कहा—"चलो, अब होशियार हो जाना चाहिये।" किन्तु दोनों ने सड़क तक जाकर देखा, जाने का कोई उपाय नहीं। लाचार लौटकर सरोवर के किनारे बैठ रहीं। गिरिजाया ने कहा—"यदि वह सब यहाँ आयें तो?"

मृणालिनी चुप रही। गिरिजाया आप ही बोली—"वन की छाया में इस तरह छिपूँगी, कि कोई देख न सकेगा।"

दोनों लौटकर सीढ़ियों पर बैठी रहीं।

मृणालिनी ने सिर झुकाकर गिरिजाया से कहा—"गिरिजाया, शायद मेरा यथार्थ सर्वनाश उपस्थित हुआ।"

गिरि०—वह कैसे?

मृणा—अभी एक सवार गया है; वह हेमचन्द्र हैं। सखी, नगर में घोर युद्ध हो रहा है; यदि निःसहाय प्रभु इस युद्ध में गये होंगे तो न मालूम किस विपद में पड़ेंगे।

गिरिजाया कोई जवाब दे न सकी। उसे नींद आ रही थी। कुछ देर बाद मृणालिनी ने भी देखा, कि गिरिजाया सो गई है।

मृणालिनी भी भोजन और निद्रा के अभाव से कमजोर हो रही थी—वह भी दिन रात से मानसिक यन्त्रणा भोग रही थी। इसलिये

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

बिना नींद लिये शरीर जब चलता न था—उन्हें भी तन्द्रा आ गई। नींद में वह स्वप्न देखने लगी। देखा कि हेमचन्द्र अकेले सारे समर में विजयी हुए हैं। मृणालिनी मानो विजयी वीर को देखने के लिए राह में खड़ी है। सड़क पर हेमचन्द्र के आगे-पीछे कितने ही हाथी, घोड़े और पैदल चल रहे हैं। मानो वह सेना मृणालिनी को गिराकर पैरों से कुचलती हुई चली गई। तब हेमचन्द्र ने अपनी सिन्धु देश की घोड़ी से उतर कर उसका हाथ पकड़ कर उठाया। मानो उसने हेमचन्द्र से कहा—"प्रभु, बहुत तकलीफें उठाई; दासी का अब त्याग न करना।" मानो हेमचन्द्र ने कहा—"अब कभी तुम्हें न छोड़ूँगा।" इसी आवाज पर मानो उसकी नींद खुल गई। उसने जागते में भी यही बात सुनी—"अब कभी तुम्हें न छोड़ूँगा।" उसने आँखें खोल दीं—क्या देखा! जो देखा, उसपर विश्वास न हुआ। फिर देखा, सच में हेमचन्द्र सामने खड़े हैं। हेमचन्द्र कह रहे हैं—"और एक बार क्षमा करो—अब कभी तुम्हें न छोड़ूँगा।"

निरभिमानिनी, निर्लज्जा मृणालिनी ने फिर उनके गले से लग उनके कन्धे पर मस्तक रख दिया।

—: ० :—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्रेम के नाना प्रकार

● ● ●

आनन्दाश्रुप्लावित-वदना मृणालिनी को हेमचन्द्र हाथ पकड़ उपवन-गृह की ओर ले चले। हेमचन्द्र मृणालिनी को एक बार अपमानिता, तिरस्कृता, व्यथिता कर त्यागके चले गये थे। फिर आप ही आकर उसे हृदय से ग्रहण किया—यह देख गिरिजाया विस्मय में आई, किन्तु मृणालिनी ने एक बात भी नहीं पूछी, कुछ भी न कहा। वह आनन्द-वारि-विप्लुत विवशा हो कपड़े से आँसू पोंछती उनके साथ चली। गिरिजाया को बुलाना न पड़ा—वह स्वयं ओट में उनके साथ साथ चली।

उपवन-वाटिका में मृणालिनी के आने पर दोनों बहुत दिन की हृदय की बातें खोलने लगे। तब जिन जिन घटनाओं से हेमचन्द्र के चित्त में मृणालिनी के प्रति विराग उत्पन्न हुआ था, और जिन जिन कारणों से उस विराग का ध्वंस हुआ था, वह सब हेमचन्द्र ने कहा। तब मृणालिनी ने जिस प्रकार हृषीकेश का घर त्याग किया था, जिस प्रकार नवद्वीप में आई थी, वह सब कहा। तब दोनों ने हृदय के पूर्वोदित कितने ही भावों को एक दूसरे के सामने प्रकट किया। दोनों भविष्यत् के बारे में कितनी ही कल्पना करने लगे। दोनों कई नई-नई प्रतिज्ञाओं में बद्ध होने लगे। दोनों ही निष्प्रयोजन कितनी ही बातें बहुत ही जरूरी बातों की तरह आग्रह के साथ प्रकट करने लगे। कितनी ही बार दोनों ने आँख के आँसू को बड़े कष्ट से दूर किया। दोनों ही कितनी बार एक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

दूसरे के मुँह की ओर देखकर मधुर हँसी हँसे। बाद को जब चिड़ियाँ प्रभातोदय की सूचना देती चह-चहाने लगीं, तब कई बार दोनों ने विस्मय के साथ पूछा—आज अभी रात कैसे बीत गई? उस नगर में यवन विप्लव का कोलाहल उछलते समुद्र की तरह लहरा रहा था, आज हृदय सागर की तरंग में वह डूब गया।

उपवन-गृह में और एक जगह एक काण्ड हो गया था। दिग्विजय युद्ध के आज्ञानुसार रात को जागकर घरकी रक्षा कर रहा था। मृणालिनी को लेकर जब हेमचन्द्र आये, तब उसने देखकर पहचान लिया। मृणालिनी उसके आगे अपरिचिता नहीं थी—जिस कारण परिचिता थी, वह क्रम से प्रकाश में आता है। मृणालिनी को देखकर दिग्विजय कुछ विस्मित हुआ, किन्तु क्या करे, पूछने की सम्भावना नहीं? क्षण भर बाद गिरिजाया को भी आई देख दिग्विजय ने सोचा—"समझ गया, यह दोनों ही गौड़ से हम दोनों को देखने आई हैं। मालकिन युवराज को देखने आई हैं, और यह मुझे देखने आई है। इसमें सन्देह नहीं।" यह देख दिग्विजय ने एक बार मूँछों पर ताव दे दिया और सोचा—"मुलाकात क्यों न होगी?" फिर सोचा—"किन्तु यह बड़ी पाजी है—एक दिन भी मुझसे अच्छी तरह नहीं बोली; केवल मुझे गाली ही देती है—तब इसकी क्या सम्भावना कि वह मुझे देखने आई होगी। जो हो, जरा परीक्षा करके देखूँ। रात समाप्त हुई—चन्द्र भी वापस आ गये। अब मैं भी जरा करवट बदल कर सोऊँ देखूँ, प्यारी मुझे ढूँढ़ लेती है या नहीं। यह सोच दिग्विजय एक एकान्त स्थान में जाकर सो रहा। गिरिजाया ने भी उसे देखा।

तब गिरिजाया मन ही मन सोचने लगी—"मैं तो मृणालिनी की दासी हूँ—मृणालिनी इस घर की मालकिन हैं या होंगी—तब घर के काम-काज का अधिकार तो मुझे ही है।" मन को इसी प्रकार प्रबोध दे गिरिजाया ने एक झाड़ू संग्रह किया और जिस घर में दिग्विजय आँखें

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

बन्द किये था, पैर की आवाज से समझ गया, गिरिजाया आई—मन में बड़ा आनन्द हुआ कि अब तो गिरिजाया मुझ से प्रेम करती है। देखूँ, गिरिजाया क्या कहती है ? यह सोचकर दिग्विजय ने आँखें बन्द कर लीं। एकाएक उसकी पीठ पर झमाझम झाड़ू चलने लगी। गिरिजाया जोर से बोलने लगी—आः मरी ! घर भर में धूल जमा है—देखो, तो क्या है, यह कौन ? चोर है क्या ? मरा पाजी राजा के घर चोरी।" यह कह उसने फिर झाड़ू लगाये। दिग्विजय की पीठ छिल गई।

"ओह, गिरिजाया मैं हूँ, मैं।"

"मैं ! तुझे समझ कर ही तो मैंने मार झाड़ू बिछा दिया है।" यह कहने के बाद फिर बावन तोले पाव रत्ती वजन के झाड़ू पड़ने लगे।

"दोहाई ! दोहाई गिरिजाया ! में दिग्विजय हूँ।"

गिरिजाया—"आओ चोरी करने और कहो, कि दिग्विजय हूँ। कौन है, रे पाजी ?" झाड़ू का वेग रुकता ही नहीं।

अब दिग्विजय ने कातरता के साथ कहा—"गिरिजाया, मुझे भूल गई ?"

गिरिजाया ने कहा—"मेरी तेरी कब की मुलाकात है रे।"

दिग्विजय ने देखा कि छुटकारा नहीं। उसने रंग में भंग देने की सलाह ठहराई। कोई उपाय न देख दिग्विजय जोरों से वहाँ से भागा। गिरिजाया झाड़ू लिये उसके पीछे पीछे दौड़ने लगी।

—: ० :—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२२

पूर्व-परिचय

सबेरे हेमचन्द्र माधवाचार्य की खोज में गये। गिरिजाया आकर मृणालिनी के पास बैठी। गिरिजाया मृणालिनी के दुःख की भागिनी हुई थी। उसने सहृदय होकर दुःख के समय दुःख की कहानियाँ सुनी थीं। आज सुख के दिन वह सुख की भागिनी क्यों न होगी? आज उस सहृदयता के साथ सुख की बातें क्यों न सुनेगी? गिरिजाया भिखारिणी है, मृणालिनी महाधनी की कन्या है—दोनों में एक दूर का सामाजिक प्रभेद है। किन्तु दुःख के दिनों में गिरिजाया मृणालिनी की एक मात्र सुहृद् थी। उस समय भिखारिणी और राजपुर-वधू में प्रभेद नहीं रहता। आज इसी बल पर गिरिजाया मृणालिनी के हृदय के सुख की अंशाधिकारिणी हुई है।

जो बातचीत हो रही थी, उससे गिरिजाया विस्मित और प्रसन्न हो रही थी। उसने मृणालिनी से पूछा—"तब इतने दिन से ये सब बातें प्रकट क्यों नहीं कीं?"

मृणा०—अबतक राजपुत्र की मनाही थी, इसलिये प्रकट नहीं किया। अब उन्होंने प्रकट करने की अनुमति दी है, इसलिये प्रकट करती हूँ।

गिरि०—मालकिन, सब बातें कहो न? सुनकर मुझे बहुत तृप्ति होगी।

तब मृणालिनी ने कहना आरम्भ किया—"मेरे पिता एक बौद्धमता-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

-वलम्बी सेठ हैं। वह बहुत धनी और मथुरा के राजा के प्रिय पात्र हैं—मथुरा की राजकन्या से मेरा सखीत्व था।

"मैं एक दिन मथुरा की राजकन्या के साथ नाव द्वारा यमुना के जलविहार में गई। वहाँ एकाएक प्रबल आँधी-पानी आने से नाव पानी में डूब गई। राजकन्या आदि अनेकों ने रक्षक और मल्लाहों के हाथ रक्षा पाई। मैं बह गई। दैवयोग से एक राजपुत्र उस समय नाव पर सैर कर रहे थे। पहले मैं उन्हें पहचानती न थी—वही हेमचन्द्र हैं। वह भी हवा के भय से नाव किनारे लगा रहे थे। उन्होंने पानी में मेरे बाल देख स्वयं कूदकर मुझे उठाया, मैं उस समय बेहोश थी। हेमचन्द्र मेरा परिचय जानते न थे। वह इस समय तीर्थदर्शन के लिये मथुरा आये थे। अपने डेरे में जा कर उन्होंने मेरी सेवा की। मेरे होश में आने और अपना परिचय बताने पर वह मुझे मेरे बाप के यहाँ भेजने की तैयारी करने लगे। किन्तु तीन दिन तक आँधी-पानी रुका नहीं। ऐसा दुर्दिन हुआ कि कोई घर से बाहर न निकलता था। इसलिए तीन दिन हम लोगों को एक साथ रहना पड़ा। दोनों ने दोनों का परिचय पाया। केवल कुल का परिचय नहीं–दोनों ने एक-दूसरे के अन्तःकरण का परिचय पाया। उस समय मेरी उम्र पन्द्रह वर्ष की थी। किन्तु उसी उम्र में मैं उनकी दासी हो गई। उस कोमल उम्र में कुछ समझ न सकी। हेमचन्द्र को देवता की तरह देखने लगी। उन्होंने जो कहा, वह पुराण जान पड़ने लगा। उन्होंने कहा—"विवाह करो"—मुझे भी जान पड़ा कि अवश्य कर्तव्य है! चौथे दिन दुर्योग हटा देखकर उपवास किया, दिग्विजय ने उद्योग कर दिया। तीर्थ पर्यटन में राजपुत्र के कुलपुरोहित साथ में थे। उन्होंने हम दोनों का विवाह करा दिया।

गिरि०—कन्यादान किसने किया ?

मृणा०—अरुन्धती नाम की मेरी एक पुरानी कुटुम्बिनी थीं। वह सम्बन्ध में मेरी मा की बहन होती थीं। उन्होंने मुझे बचपन से खेलाया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

और पाला था। वह मुझ पर बड़ा स्नेह करती थीं। मेरे सब पाजीपन को वह सहती थीं। मैंने उनका नाम बताया। दिग्विजय किसी छल से मेरे अन्तःपुर में समाचार भेज छल से उन्हें हेमचन्द्र के घर ले आया। अरुन्धती समझती थीं कि मैं यमुना में मर गई हूँ। वह मुझे जीवित देखकर इतनी प्रसन्न हुईं कि मेरी किसी बात पर वह नाराज नहीं हुईं। मैंने जो कहा, उसीको उन्होंने स्वीकार कर लिया। उन्होंने कन्या दान किया। विवाह के बाद मैं भाभी के साथ अपने पिता के घर गई। वहाँ सब सच कहकर केवल विवाह की बात को छिपा लिया। मेरे, हेमचन्द्र, दिग्विजय, कुलपुरोहित और अरुन्धती मासी के सिवा इस विवाह का हाल और कोई नहीं जानता। आज तुमने जाना।

गिरि०—माधवाचार्य नहीं जानते ?

मृणा०—नहीं। वह जान पाते, तो सर्वनाश हो जाता। मगधराज भी अवश्य सुनते। मेरे पिता बौद्ध हैं और मगधराज बौद्धों के बहुत बड़े शत्रु।

गिरि०—अच्छा, तुम्हारे बाप यदि अबतक तुम्हें कुमारी समझते थे, तब इतनी उम्र होने पर भी तुम्हारा विवाह क्यों नहीं किया ?

मृणा०—बाप का कोई दोष नहीं। उन्होंने बहुत कोशिश की, किन्तु बौद्धों में सुपात्र मिलना कठिन है, क्यों कि बौद्धधर्म प्रायः लोप हो गया है। पिता बौद्ध दामाद चाहते और फिर भी सुपात्र चाहते थे। इस तरह का एक मिला था, वह मेरे विवाह के बाद। विवाह का दिन स्थिर होने पर सब तैयारी हुई थी। किन्तु मैं उस समय बुखार ले बैठी। उसने दूसरी जगह विवाह कर लिया।

गिरि०— जानबूझकर बुखार ले बैठी थी ?

मृणा०—हाँ, जानबूझकर। हमारे बाग में एक कुआँ है, उसका पानी कोई छूता नहीं। उसको पीने या नहाने से जरूर बुखार होता है। मैंने उस रात छिपकर उसी पानी से नहा लिया था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गिरि०—फिर जब बात आती होगी, तब वैसा ही करती होगी ?

मृणा०—इसमें क्या सन्देह है। नहीं तो हेमचन्द्र के पास भाग जाती।

गिरि०—मथुरा से मगध एक महीने की राह है। औरत होकर किस की सहायता से भागतीं ?

मृणा०—मेरे साथ मिलने ही के लिये हेमचन्द्र ने मथुरा में एक दूकान कर आप वहीं रत्नदास वणिक् के नाम से परिचित हुए थे। साल में एक बार वहीं वाणिज्य करने आते थे। जब वह वहीं न रहते, तब दिग्विजय दूकान सँभालता था। दिग्विजय को आज्ञा थी, कि जब मैं जैसी आज्ञा दूँ, वह उसी समय वैसा करे। इसलिये मैं निःसहाय नहीं थी।

बात समाप्त होने पर गिरिजाया ने कहा—"मालकिन! मैंने एक बहुत बड़ा अपराध किया है। मुझे क्षमा करना होगा। मैं उसके लायक प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ।"

मृणा०—कौनसा ऐसा भयानक काम किया ?

गिरि०—मैं नहीं जानती थी कि दिग्विजय तुम लोगों का बड़ा हितकारी है। मैं जानती थी कि वह बिलकुल नालायक है। इसलिये मैंने आज सवेरे उसे झाडू से पीट दिया है, यह काम अच्छा नहीं किया।

मृणालिनी ने हँसकर कहा—"तब क्या प्रायश्चित्त करेगी ?"

गिरि०—क्या भिखारियों की लड़की का भी विवाह होता है।

मृणा०—(हँसकर) करने से होता ही है।

"तब मैं उस नालायक से विवाह करूँगी—और क्या करूँ ?"

मृणालिनी ने फिर हँसकर कहा—"तब मैं तुम्हें हल्दी लगाऊँगी।"

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

१२

सलाह

● ●

हेमचन्द्र ने माधवाचार्य के वासस्थान में पहुँच कर देखा, आचार्य जप में लगे हुए हैं। हेमचन्द्र ने प्रणाम कर कहा—"हम लोगों का सारा यत्न विफल हुआ। अब सेवक को क्या आज्ञा होती है? यवनों ने गौड़ पर अधिकार कर लिया है। शायद भारतवर्ष के भाग्य में यवनों का दासत्व ही लिखा है। नहीं तो बिना लड़ाई के यवनों ने गौड़ कैसे जीत लिया? इस शरीर का पतन करने से यदि एक दिन के लिए भी जन्मभूमि डाकुओं के हाथ से मुक्त हो, तो मैं अभी उसे करने को तैयार हूँ। इसी अभिप्राय से मैं रात को युद्ध की आशा से नगर में आगे बढ़ा था—किन्तु युद्ध तो कहीं दिखाई न दिया। केवल देखा, एक ओर लोग आक्रमण करते हैं, दूसरी ओर भागते हैं।"

माधवाचार्य ने कहा—"वत्स, दुखी न हो। दैवनिर्देश कभी विफल होवेवाला नहीं।" जब मैंने गणना की है कि यवन पराभूत होंगे, तब निश्चय जानना कि वह पराभूत होंगे। नवद्वीप पर अधिकार किया है सही, किन्तु नवद्वीप तो गौड़ नहीं। प्रधान राजा सिंहासन छोड़कर भाग गये हैं। किन्तु गौड़राज्य में अनेक कर देनेवाले राजे भी हैं, वह सब तो अभी जीते नहीं गये। कौन जानता है कि सब राजाओं के एकत्र हो प्राणपण से चेष्टा करने पर यवन जीते जा सकेंगे।

हेमचन्द्र ने कहा—"इसकी सम्भावना बहुत कम है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

माधवाचार्य ने कहा—"ज्योतिषगणना मिथ्या होने की नहीं; अवश्य सफल होगी। शायद मुझे एक भ्रम हुआ होगा। पूर्वदेश में यवन पराभूत होंगे, इसलिए हमलोगों ने नवद्वीप में ही यवनों के जीतने की आशा की थी। किन्तु गौड़राज्य तो बिलकुल पूर्व नहीं—कामरूप ही पूर्व है। शायद वहीं हम लोगों को आशा फलवती होगी।"

हेम०—किन्तु अभी तो यवनों में कामरूप जाने की कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती।

माध०—यह यवन लोग क्षण भर भी स्थिर नहीं रहते। गौड़ में स्थिर होते ही यह कामरूप पर आक्रमण करेंगे।

हेम०—मैंने यह भी माना और यह भी माना कि कामरूप पर आक्रमण करने से वह पराजित होंगें, किन्तु इससे मेरे पिता के राज्य के उद्धार का क्या उपाय होगा ?

माध०—ये यवन अब तक बारबार जयलाभ कर राजाओं में अजेय के नाम से विख्यात हो गये हैं। भय से कोई उनका विरोध करना नहीं चाहता। उन लोगों के सिर्फ एक बार पराजित होने से उनकी वह महिमा फिर न रह जायगी। तब भारतवर्ष के सभी आर्यवंशी राजे शस्त्र उठायेंगे। सब के एक साथ शस्त्रधारण करने पर यवन कब तक ठहरेंगे ?

हेम०—गुरुदेव ! आप आशा का आश्रय ले रहे हैं; मैंने भी वैसा ही किया। अब आज्ञा दीजिये कि मैं क्या करूँ।

माध०—मैं भी यही सोच रहा हूँ। अब इस नगर में तुम्हारा रहना उचित नहीं, क्यों कि यवनों ने तुम्हें मार डालने का संकल्प किया है—मेरी आज्ञा है कि तुम आज ही नगर छोड़ दो।

हेम०—कहाँ जाऊँ ?

माध०—मेरे साथ कामरूप चलो।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

तब हेमचन्द्र ने सिर झुकाकर, कुछ लज्जित हो, मधुर स्वर में कहा--"मृणालिनी को कहाँ छोड़ जायेंगे ?"

माधवाचार्य ने विस्मृत होकर कहा–"यह क्या ! मैं समझता था कि तुमने कल की बातों के अनुसार मृणालिनी को चित्त से उतार दिया है।"

हेमचन्द्र ने पहले ही की भांति मीठे स्वर में कहा–"मृणालिनी अत्याज्य है। वह मेरी विवाहिता स्त्री है।"

माधवाचार्य चौंक पड़े। नाराज हुए। मारे क्षोभ के उन्होंने कहा– "मैं इस बारे में कुछ जान ही न सका।"

तब हेमचन्द्र ने आद्योपान्त अपने विवाह की बात सुनाई। सुनकर माधवाचार्य कुछ देर तक चुप रहे। इसके बाद कहा–"जो स्त्री असदाचारिणी है, वह तो शास्त्रानुसार त्याज्य है। मृणालिनी के चरित्र के बारे में जो संशय है, वह कल मैंने तुमसे प्रकट किया।"

तब हेमचन्द्र ने व्योमकेश का सब हाल कह सुनाया। सुनकर माधवाचार्य ने आनन्द प्रकट किया। कहा–"वत्स ! मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैंने तुम्हारी ऐसी प्रियतमा और गुणवती भार्या को तुम्हारे पास से अलग रख मैंने बहुत तकलीफें दी हैं। अब आशीर्वाद देता हूँ, कि तुमलोग दीर्घजीवी हो, बहुत दिन तक एकत्र धर्माचरण करो। यदि तुम इस समय सस्त्रीक हुए हो, तो मैं तुम्हें अपने साथ कामरूप चलने का अनुरोध नहीं करता। मैं पहले जाता हूँ। जब समय देखेंगे, तब कामरूपाधिपति तुम्हारे पास दूत भेजेंगे। इस समय तुम बहू को लेकर मथुरा में जाकर निवास करो—अथवा चाहे जहाँ रहो।"

ऐसी बातचीत के बाद हेमचन्द्र माधवाचार्य के पास से बिदा हुए। माधवाचार्य ने आशीर्वाद, आलिङ्गन दे कर आँसू भरे लोचन से उन्हें बिदा किया।

–:o:–

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२३

मुहम्मदअली का प्रायश्चित्त

जिस रात राजधानी यवन-सेना के विप्लव से पीड़िता हुई, उस रात पशुपति अकेले कारागार में बन्द थे। सवेरा होते ही सैन्य-विप्लव समाप्त हो गया। तब मुहम्मदअली उनसे बात-चीत करने आये। पशुपति ने कहा—"यवन ! अब मीठे बोल की जरूरत नहीं। मैं तुम्हारी ही मीठी बातों पर विश्वास कर इस हालत को पहुँचा हूँ। विधर्मी यवनों के विश्वास का जो फल है, उसे मैं पा चुका। अब मैंने मृत्यु को ही उचित समझ सब आशाओं को छोड़ दिया है। तुम लोगों की कोई मीठी बातें न सुनूँगा।"

मुहम्मदअली ने कहा—"मैं मालिक की आज्ञा का प्रतिपालन करता हूँ—मालिक का हुक्म मानने के लिये आया हूँ। आपको मुसलमानी पोशाक पहननी पड़ेगी।"

पशुपति ने कहा—"इस बारे में चित्त स्थिर रखिये। मैंने अब मृत्यु ही स्थिर किया है। प्राणत्याग के लिये तैयार हूँ, किन्तु यवन धर्म स्वीकार न करूँगा।

मुह०—मैं आपको अभी यवन धर्म स्वीकार करने को नहीं कहता। केवल राजप्रतिनिधि की परितृप्ति के लिये यवन पोशाक पहनने को कह रहा हूँ।

पशु०—ब्राह्मण होकर मैं क्यों म्लेच्छ की पोशाक पहनूँ ?

मुह०—आप खुशी से न पहनेंगे, तो मैं जबर्दस्ती पहनाऊँगा। इनकार करने का फल अपमान है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पशुपति ने जवाब नहीं दिया। मुहम्मद अली ने अपने हाथ से उन्हें मुसलमानी पोशाक पहनायी; कहा—"मेरे साथ चलिये।"

पशु०—कहाँ ?

मुह०—आप कैदी हैं, आपको यह पूछने से मतलब ?

मुहम्मद अली उन्हें सिंह द्वार पर ले चला। जो आदमी पशुपति की रक्षा में नियुक्त थे, वे साथ-साथ चले।

दर्वाजे पर पहरेदारों के पूछने के अनुसार मुहम्मद अली ने अपना परिचय दिया। उन्होंने एक इशारा किया, पहरेदारों ने राह छोड़ दी। सिंहद्वार से निकल कर ये तीनों ही कुछ दूर सड़क तक आये। उस समय यवनसेना नगर मन्थन समाप्त कर विश्राम कर रही थी। इसलिये सड़क पर कोई उपद्रव न था। मुहम्मदअली ने कहा,—धर्माधिकार! आपने बिना कुसूर मेरा तिरस्कार किया है। बख्तियार खिलजी के इस अभिप्राय को मैं बिलकुल समझा न था। ऐसा होने से मैं कभी धोखेबाजी की बातें लेकर आपके पास न आता। जो हो, आप मेरी बात पर विश्वास कर इस दशा को पहुँचे हैं। मैंने जहाँ तक हो सका, उसका प्रायश्चित्त किया। गङ्गा किनारे नाव तैयार है—आप—जहाँ चाहें, चले जायँ। मैं यहाँ से बिदा होता हूँ।"

पशुपति विस्मय में पड़ हैरान रह गये। मुहम्मद अली फिर कहने लगा—"आप इसी रात यह नगरी त्याग दें। नहीं तो कल सबेरे यवन के साथ मुलाकात होने पर आप से झगड़ा होगा। मैंने खिलजी की आज्ञा के खिलाफ काम किया—इसका गवाह यह पहरेदार है। इसलिये आत्मरक्षा के लिये मैं इसे भी यहाँ से हटाता हूँ। इसे भी आप अपनी नाव पर ले जायँ।"

यह कह मुहम्मद अली बिदा हुए। पशुपति कुछ देर विस्मय में खड़े रहने के बाद गंगा किनारे चले।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२४

धातुमूर्त्ति का विसर्जन

मुहम्मद अली के पास से बिदा हो राजपथ पर पशुपति धीरे-धीरे चले, क्यों कि यवनों के कारागार से छूटकर भी उनमें तेज कदम बढ़ाने की प्रवृत्ति न हुई। सड़क पर जो दिखाई दिया उसे देख वह आप ही अपने मन में मर गये। उनको हरेक कदम पर लाशों की ठोकरें मिलने लगीं। कदम-कदम खून के कीचड़ से पैर लथपथ होने लगा। राह के दोनों किनारे के मकान जनशून्य हैं—बहुतेरे घर जल गये हैं, कहीं-कहीं लाल अंगारे अभीतक सुलग रहे हैं। घर-घर के दर्वाजे टूटे, खिड़कियाँ टूटी, कोठरियाँ टूटी,—उसपर लाशें। अब भी कोई-कोई अभागा मरने की तकलीफ से अमानुषिक शब्द में कराह रहा है। इन सब के मूल में वही है। भयानक लोभ के वश में इन्होंने इस राजधानी को श्मशानभूमि बना डाला है। पशुपति ने मन ही मन स्वीकार किया कि वह फाँसी के लायक आदमी है—वह क्यों मुहम्मदअली को कलङ्कित कर कैदखाने से भागे? यवन लोग इन्हें पकड़ें और मनमानी सजा दें—उनके मन में आया कि फिर लौट चलें। तब उन्होंने मन ही मन इष्ट देवी को याद किया। किन्तु, कौन कामना करें? अब कामना के लिये कोई विषय नहीं। उन्होंने आकाश की ओर देखा। आकाश के नक्षत्र चन्द्रग्रह-मण्डली विभूषित सहास्य पवित्र शोभा उनकी आँखों में सही न गई—उन्होंने तेज रोशनी में चकाचौंध के समान आँखें बन्द कर लीं। एकाएक अनैसर्गिक भय ने आकर उनका हृदय दबोचा। अकारण भय से वह आगे कदम बढ़ा न

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सके। एकाएक बलहीन हो गये। विश्राम करने के लिए राह में बैठते-बैठते देखा—एक लाश पर बेठने जा रहे हैं। लाश से निकलता हुआ खून उनके शरीर और कपड़े में लगा। वह रोमांचित हो फिर उठे। अब रुके नहीं, तेजी से बढ़े। एकाएक एक बात और याद आई—उनका मकान? क्या वह यवनों के हाथ से बच रहा है? जिस कुसुममयी प्राण-पुतली को छिपा गये थे, उसकी क्या दशा हुई? मनोरमा की क्या दशा हुई। उनकी प्राणाधिका ने उन्हें पाप की राह से बार-बार निवारण किया था, शायद वह भी उनके पापसागर की तरंगों में डूब गई। इस यवन सेना के प्रवाह में वह कुसुमकली न जाने कहाँ बह गई।

पशुपति पागल की तरह अपने घर की ओर चले। देखा कि जो सोचा था, वही हुआ है—जलते हुए पहाड़ की तरह उन का ऊँचा महल आग से जल रहा है।

देखते ही अभागे पशुपति को विश्वास हुआ, कि यवन लोग उन के परिवार के साथ मनोरमा का वधकर घर में आग लगा गये हैं। यह वह जान न सके कि मनोरमा भाग गई है।

पास में कोई न था, जो उन्हें समाचार दे। अपने विकल चित्त का फैसला ही उन्होंने माना। हलाहल का घड़ा भर गया। हृदय का आखिरी तार टूट गया। वह कुछ देर तक आंखें फाड़ फाड़ कर जले हुए महल की ओर देख रहे थे—वह मरने वाले पतंग की तरह क्षण भर के लिये विकल शरीर से एक स्थान पर ठहर गये—अन्त में बड़े वेग से उस अनल-तरंगमाला में कूद पड़े। साथ का सिपाही चौंक कर रह गया।

बड़े ही वेग के साथ पशुपति जलते हुए दर्वाजे में घुस गये। पैर जला—शरीर जला—किन्तु पशुपति न लौटे। अग्निकुण्ड समाप्त कर अपनी शयन कोठरी में पहुँचे। कोई दिखाई न दिया। जलते शरीर से

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कोठरी कोठरी में घूमने लगे। उनके हृदय में जो भयानक आग जल रही थी, उससे वह बाहरी जलन का अनुभव कर न सके।

क्षण-क्षण पर घर के नये-नये हिस्से आग से जल उठते थे। बन्द कोठरी की भयानक लपटें धुआँ के साथ आकाश में उड़कर भयानक गर्जन कर रही थीं। क्षण क्षण पर मकान के जले हिस्से वज्र की तरह भूमि में गिर रहे थे। धुआँ, धूल और उसी के साथ लाखों चिनगारियाँ आकाश में अदृश्य होने लगीं।

दावानल से घिरे हुए वन में पड़े हाथी की तरह पशुपति आग में इधर उधर दास, दासी, स्वजन और मनोरमा को ढूँढ़ते फिरने लगे। किसी का कोई पता न लगा। हताश हुए। तब देवी के मन्दिर पर उनकी दृष्टि पड़ी। देखा कि देवी अष्टभुजा का मन्दिर आग लगने से जल रहा है। पशुपति पतंग की तरह उसमें घुस गये। देखा कि अग्निमण्डल में अदग्धा स्वर्ण-प्रतिमा विराज रही है। पशुपति ने उन्मत्त की तरह कहा—"मा! जगदम्बे! अब तुम्हें जगदम्बा न कहूँगा। अब तुम्हारी पूजा न करूँगा। तुम्हें प्रणाम भी न करूँगा। बचपन से मैंने कायमनो-वाक् से तुम्हारी सेवा की—जन्मभर में सिर्फ इसी पद का ध्यान किया था। अब मा!—एक दिन के पाप से मैंने सर्वस्व खो दिया। तब किस दिन के लिये तुम्हारी पूजा की थी? तुमने मेरी पापमति को दूर क्यों न किया?

मन्दिर जलानेवाली आग प्रबल हो गर्जन कर उठी। फिर भी पशु-पति प्रतिमा को सम्बोधन कर कहने लगे—"वह देखो, धातु मूर्ति। —तुम धातु मूर्ति मात्र हो, देवी नहीं—वह देखो, आग गर्जन कर रही है। जिस राह में मेरी प्राणाधिका गई है—उसी राह आग तुम्हें भी ले

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जायगी, किन्तु मैं आग को यह कीर्ति लूटने न दूँगा—मैंने तुम्हें स्थापित किया था, मैं ही तुम्हारा विसर्जन करूँगा। चलो इष्ट देवा! तुम्हें गंगाजल में विसर्जन करूँ।"

यह कह पशुपति ने प्रतिमा उठाने की इच्छा से दोनों हाथ से उन्हें पकड़ा। इसी समय आग फिर गर्जन कर उठी। पर्वत के फटने की तरह प्रबल शब्द हुआ—जलता हुआ मन्दिर धूल, धुआँ और राख के साथ ही आग की चिनगारियाँ उड़ाता हुआ गिर गया, उसमें प्रतिमा सहित पशुपति की जीवित समाधि हुई।

—:o:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२५

अन्तिमकाल

पशुपति स्वयं अष्टभुजा की अर्चना करते थे सही, फिर भी उनकी नित्य सेवा के लिये दुर्गादास नामक एक ब्राह्मण नियुक्त थे। नगर-विप्लव के दूसरे दिन दुर्गादास ने सुना कि पशुपति का घर जल कर गिर पड़ा है। तब ब्राह्मण ने अष्टभुजा की मूर्ति को भस्म से निकाल अपने घर स्थापन करने का सङ्कल्प किया। यवनों के नगर लूटकर तृप्त होने पर बख्तियार खिलजी ने अनर्थक नगर वासियों को सताने से मना कर दिया। इसलिये इस समय साहस कर बगांली लोग सड़क पर निकलने लगे थे। यह देख दुर्गादास तीसरे पहर अष्टभुजा के उद्धार के लिये पशुपति के मकान की ओर चले। पशुपति के भवन में जहाँ मन्दिर था, वहीं उन्होंने प्रवेश किया। देखा कि ईटों का कुछ ढेर हटाये बिना देवी की प्रतिमा निकल नहीं सकती। यह देख दुर्गादास अपने पुत्र को बुला लाये। ईंटें सब जलकर आपस में चिपक गई थीं—और अभी तक जल रही थीं। पिता-पुत्र ने एक दीर्घिका से पानी लाकर ईंटें ठण्डी कीं और बड़े कष्ट से उसमें अष्टभुजा की खोज करने लगे। ईटों का ढेर हटने पर उसमें से देवी की प्रतिमा निकली। किन्तु प्रतिमा के पैरों में यह क्या, भय के साथ पिता-पुत्र ने देखा कि मनुष्य की लाश है। तब दोनों ने लाश उठा कर देखा, पशुपति की लाश है।

विस्मयसूचक वाक्य के बाद दुर्गादास ने कहा—"चाहे जिस प्रकार प्रभु की यह दशा हुई हो, हमलोगों को अब ब्राह्मण का कर्त्तव्य करना

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

चाहिये। चलो, हमलोग गंगा किनारे चल कर प्रभु का सत्कार करें।"

यह कह दोनों पशुपति की लाश उठा कर गंगा किनारे ले गये। वहाँ पुत्र को शव की रक्षा में नियुक्त कर दुर्गादास नगर में लकड़ी आदि जरूरी सामान लेने गये और यथासाध्य सुगन्धित लकड़ी संग्रह कर गंगा किनारे लौट आये।

तब दुर्गादास ने पुत्र की सहायता से यथाशास्त्र दाह किया। पहले स्नान करा कर सुगन्धित लकड़ी से चिता बनाई और उस पर पशुपति की लाश रखकर आग लगा दी।

किन्तु एकाएक श्मशान भूमि में यह किसका आविर्भाव हुआ? दोनों ब्राह्मणों ने विस्मित लोचन से देखा कि एक मलिनवसना, रूक्षकेशी शिर के बाल खोले, भस्म और धूलि से विवर्ण पागल स्त्री ने आ कर श्मशानभूमि में पैर रखा। रमणी ब्राह्मणों के पास आई।

दुर्गादास ने भयभीत हो पूछा—"आप कौन हैं?"

रमणी—"तुम लोग किसका सत्कार कर रहे हो?"

दुर्गादास ने कहा—"मृत धर्माधिकारी पशुपति का।"

रमणी—पशुपतिकी मृत्यु कैसे हुई?

दुर्गादास ने कहा—"सबेरे नगर में अफवाह उड़ी कि यवन द्वारा कारारुद्ध हो किसी सुयोग से यह रात को भागे। आज अपने महल को भस्म देख अष्टभुजा की प्रतिज्ञा का उद्धार करने के लिये गए। वहाँ जाकर मैंने प्रभु की मृतदेह देखी।"

रमणी ने कोई जवाब न दिया। गंगा किनारे रेती पर बैठ गई। बहुत देर चुपचाप रहने पर उन्होंने पूछा—"तुम लोग कौन हो?"

दुर्गादास ने कहा—"हम लोग ब्राह्मण हैं। धर्माधिकार के अन्न से प्रतिपालित हुए हैं। आप कौन हैं?"

रमणी ने कहा—"मैं उनकी पत्नी हूँ।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

दुर्गादास ने कहा—"उन की पत्नी बहुत दिन से लापता थी। आप कैसे उनकी स्त्री हैं ?"

युवती ने कहा—मैं वही लापता केशव कन्या हूँ। सहमरण के डर से अब तक पिता मुझे छिपाये हुए थे। आज मैं कालपूर्ण विधिलिपि पुराने को आई हूँ।"

सुनकर पिता-पुत्र कांप उठे। उन लोगों को ला-जवाब समझ विधवा फिर कहने लगी—"अब मैं स्त्री जाति का कर्त्तव्य काम करूँगी। तुम लोग तयारी करो।"

दुर्गादास ने युवती का अभिप्राय समझा। उन्होंने पुत्र की ओर मुँह करके पूछा—"क्या कहते हो ?"

पुत्र ने कोई जवाब न दिया। तब दुर्गादास ने युवती से कहा—"मा! तुम बालिका हो—इस कठिन काम के लिये क्यों तैयार हो रही हो ?"

युवती ने भौंहें तरेर कर कहा—"ब्राह्मण होकर अधर्म में प्रवृत्ति क्यों करते हो ? इसकी तैयारी करो ?"

तब तैयारी के लिये ब्राह्मण फिर नगर में गया। जाने के समय विधवा ने दुर्गादास से कहा—"तुम नगर में जाते हो। नगर के प्रान्त में राजा के उपवन-वाटिका में हेमचन्द्र नामक विदेशी राजपुत्र रहते हैं। उनसे कहना कि मनोरमा गंगा किनारे चिता पर चढ़ रही है—वह आ कर एक बार उस से मिल जायँ। इहलोक में मनोरमा की यही भिक्षा है।"

हेमचन्द्र ने जब ब्राह्मण के मुँह से सुना कि मनोरमा पशुपति की पत्नी का परिचय दे कर उन के साथ सती हो रही है, तब वह कुछ भी समझ न सके। दुर्गादास के साथ गंगा किनारे आये। वहाँ मनोरमा बहुत ही मलिन, उन्मादिनी रूप में थी। उसकी स्थिर गम्भीरता देख कर और उसकी अनिन्द्य सुन्दर मुखकान्ति को देख उनकी आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने कहा—"मनोरमा बहन, यह क्या ?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तब मनोरमा ने चाँदनी से चमकते सरोवर के समान स्थिर मूर्ति से मृदु गम्भीर स्वर में कहा--"भाई, जिस लिये मेरा जीवन है, उसकी चरम सीमा को आज मैंने पाया। आज मैं अपने स्वामी के साथ जाऊँगी।"

मनोरमा ने संक्षेप में औरों के न सुनने योग्य स्वर में हेमचन्द्र को फिर परिचय दे कर कहा--"मेरे स्वामी अपरिमित धन संचय कर रख गये हैं। मैं अब उस धन की अधिकारिणी हूँ। मैं उसे तुम्हें दान करती हूँ। तुम उसे ग्रहण करो। नहीं तो पापिष्ठ यवन उस का भोग करेंगे। उस में से थोड़ा-सा खर्च कर जनार्दन शर्मा को काशीधाम में बैठाना। जनार्दन को अधिक धन न देना। नहीं तो यवन छीन लेंगे। मेरे दाह के बाद तुम मेरे स्वामी के घर जा धन का पता लगाना। मैं जहाँ बताये देती हूँ, वहाँ ढूँढ़ने से पाओगे। सिवा मेरे उस स्थान को और कोई नहीं जानता।" यह कह मनोरमा ने वह जगह बता दी, जहाँ धन था।

तब मनोरमा ने फिर हेमचन्द्र से विदा ली। जनार्दन और उन की पत्नी को प्रणाम कहला, हेमचन्द्र के द्वारा उनसे बहुतेरी स्नेह-सूचक बातें कहलाई।

इस के बाद ब्राह्मणों ने मनोरमा को यथाशास्त्र इस भीषण व्रत में व्रती कराया और शास्त्रीय आचार के बाद मनोरमा ने ब्राह्मण के लाये नये वस्त्र को धारण किया। नया वस्त्र पहन, दिव्य पुष्पमाला गले में धारण कर पशुपति की जलती हुई चिता की प्रदक्षिणा कर के वह चिता पर चढ़ गई। हँसते मुख उस चिता में बैठ गर्मी में सूखती कुसुमकली की तरह अनल के ताप से उन्होंने प्राण-त्याग किया।

-: ० :-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

परिशिष्ट

हेमचन्द्र ने मनोरमा के दिये धन का उद्धार कर उसका कुछ अंश जनार्दन को दे उन्हें काशी भेज दिया। उन्होंने माधवाचार्य से पूछा कि बाकी बचा धन ग्रहण करना चाहिये या नहीं। माधवाचार्य ने कहा—"इस धन के बल से पशुपति के विनाशकारी बख्तियार खिलजी को प्रतिफल देना चाहिये और ऐसे अभिप्राय से उसका ग्रहण करना भी उचित है। दक्षिण-समुद्र के किनारे कितने ही प्रदेश जनहीन पड़े हैं। मेरी सलाह यह है, कि तुम इस धन के द्वारा वहाँ नया राज्य संस्थापन करो और वहाँ यवनों के दमन के लायक सेना संग्रह करो। उसकी सहायता से पशुपति के शत्रुओं का निपात सिद्ध करो।"

यह सलाह दे माधवाचार्य ने उसी रात हेमचन्द्र को नवद्वीप से दक्षिण की यात्रा करा दी। पशुपति के धन को उन्होंने छिपाकर अपने साथ ले लिया। मृणालिनी, गिरिजाया और दिग्विजय उनके साथ चले। माधवाचार्य भी हेमचन्द्र को नया राज्य स्थापित करने के लिये उनके साथ गये। राज्य का संस्थापन बहुत ही सहज काम हो उठा, क्योंकि यवनों के धर्म-द्वेष से पीड़ित और उनके भय से भीत अनेक लोग अपना प्राचीन निवास त्यागकर हेमचन्द्र के नये स्थापित राज्य में रहने लगे।

माधवाचार्य की सलाह से बहुतेरे प्रधान धनी लोग वहाँ आकर रहे। इस तरह बहुत जल्द छोटा सा राज्य सुन्दर हो उठा। धीरे-धीरे सेना भी इकट्ठी होने लगी। बहुत जल्द रमणीय राजपुरी बन गई। मृणालिनी ने उसमें रानी बन पुरी की शोभा बढ़ाई।

गिरिजाया के साथ दिग्विजय का विवाह हो गया। गिरिजाया मृणालिनी की सेवा में नियुक्त रही। दिग्विजय हेमचन्द्र का काम पहले ही की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तरह करने लगा। कहते हैं कि विवाह होने के बादसे ऐसा एक दिन भी न बीता होगा, जब गिरिजाया ने एकाध झाड़ूकी चोट से दिग्विजय के शरीर को पवित्र न किया हो। इससे दिग्विजय बहुत ही दुःखित था, यह बात नहीं; बल्कि एक दिन किसी दैवकारणवश गिरिजाया झाड़ू मारना भूल गई थी, इस पर दिग्विजय ने दुःखी होकर गिरिजाया से पूछा—"अरी आज तुम मुझपर नाराज हो क्या?" वास्तव में इन दोनों ने यावज्जीवन सुख से समय बिताया।

हेमचन्द्र को नये राज्य में बैठाकर माधवाचार्य कामरूप में गये। उसी समय हेमचन्द्र दक्षिण से मुसलमानों के विरुद्ध चलने लगे। बख्तियार खिलजी पराभूत हो कामरूप से भागे। और लौटने के समय अपमान और कष्ट से उनकी मौत हो गई। किन्तु उन सब घटनाओं का वर्णन करना इस ग्रन्थ का उद्देश्य नहीं।

रत्नमयी एक सम्पन्न पाटनी से विवाह कर हेमचन्द्र ने नये राज्य में जाकर वास किया। वहाँ मृणालिनी के अनुग्रह से उसके पति की अच्छी तरक्की हुई। गिरिजाया और रत्नमयी सदा सखी-सखी रहीं।

मृणालिनी ने माधवाचार्य द्वारा हृषीकेश से अनुरोध करा मणिमालिनी को अपनी राजपुरी में बुलाया। मणिमालिनी राजपुरी में मृणालिनी की सखी के समान निवास करने लगी। उनके स्वामी राजघराने में पौरोहित्य पर नियुक्त हुए।

जब शान्तशील ने देखा कि हिन्दुओं को अब राज्य मिलने की सम्भावना नहीं, तब वह अपनी चतुरता और कार्यक्षमता दिखाकर यवनों का प्रियपात्र होने की चेष्टा करने लगा। हिन्दुओं पर अत्याचार और विश्वासघातकता द्वारा शीघ्र ही वह अपनी मनोकामना सिद्ध कर अभीष्ट राज्य काज में नियुक्त हुआ।

—:०:—

॥ समाप्त ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kath

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

१२१६८

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand